कृषिका काव्यांजलि



मृदुला देवी
नीतीश कुमार
गायत्री तिवारी

कृषिका काव्यांजलि

मृदुला देवी
नीतीश कुमार
गायत्री तिवारी

© 2025 भा.कृ.अनु.प - केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर,
ओडिशा, भारत

संदर्भ
मृदुला देवी, नीतीश कुमार एवं गायत्री तिवारी (2025). कृषिका काव्यांजलि, भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत, कुल पृष्ठ 186

प्रकाशक:
निदेशक,
भा.कृ.अनु.प – केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान,
भुवनेश्वर, ओडिशा, भारत

अस्वीकरण

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार के लिए लेखक पूर्णरूपेण उत्तरदायी हैं । इसमें प्रकाशित सामग्री के अन्यत्र प्रकाशन या प्रस्तुति हेतु निदेशक, भा.कृ.अनु.प. - केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर की अनुमति आवश्यक है ।

ISBN No : 978-81-985291-6-9

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि अनुसंधान भवन - II, नई दिल्ली -110012
Indian Council of Agricultural Research
Krishi Anusandhan Bhavan-II,
Pusa, New Delhi-110012
Phone: +91-11-25841760
E-mail: ddg.edu@icar.gov.in,
ddgedn@gmail.com,
nd.nahep@icar.gov.in

डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल
उप महानिदेशक (कृषि शिक्षा)
Dr. Rakesh Chandra Agrawal
Deputy Director General (Agril. Edn.)



संदेश

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) के तहत स्थित केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान (भा.कृ.अनु.प.-सीवा), भुवनेश्वर ने कृषिरत महिलाओं की समृद्धि के लिए कई उल्लेखनीय प्रयास किए हैं। इस संस्थान ने अपने शोध, उन्नत क्षमता विकास कार्यक्रमों और प्रभावी नीतिगत प्रयासों के माध्यम से महिला कृषकों के जीवन में बदलाव लाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये हैं। भा.कृ.अनु.प.-सीवा का प्रमुख उद्देश्य कृषिरत महिलाओं को मुख्यधारा में जोड़ना, उनके तकनीकी ज्ञान और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देना और उन्हें समाज में एक दृढ़ और सम्मानित स्थान प्रदान करवाने हेतु प्रयास करना है। संस्थान द्वारा किए गए प्रयास न केवल महिला किसानों की सामाजिक स्थिति को मजबूत कर रहे हैं, बल्कि उन्हें कृषि क्षेत्र में निर्णय एवं विकास में प्रमुखता से भागीदार भी बना रहे हैं, जिससे उनकी क्षमता में निरंतर वृद्धि हो रही है। मुझे प्रसन्नता है कि भा.कृ.अनु.प.- सीवा, '**कृषिका कव्यांजलि**' नामक अद्वितीय कविता संग्रह का प्रकाशन कर रहा है। जो विशेष रूप से कृषिरत महिलाओं के लिए

एक महत्वपूर्ण कदम है। सरल एवं सुलभ भाषा में प्रस्तुत यह कविता संग्रह राजभाषा हिंदी में रचनात्मक लेखन को बढ़ावा देने के साथ-साथ, महिला किसानों के संबंध में तकनीकी, व्यावसायिक और सामाजिक दृष्टिकोण से युक्त उपयोगी जानकारी प्रदान करते हुए एक प्रभावी संवाद और मार्गदर्शन का स्रोत बनेगा। मैं इस प्रयास के लिए भा.कृ.अनु.प.- सीवा को बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि यह कृषिरत महिलाओं के तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण हेतु समाज को जागरूक करने में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। साथ ही कृषि क्षेत्र में उनके योगदान को और भी स्वीकार्यता और सम्मान मिलेगा, जो समग्र समाज के लिए सकारात्मक परिवर्तन का कारक बनेगा।

(डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल)

भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान
भुवनेश्वर
ICAR-Central Institute for Women in Agriculture, Bhubaneswar
E-mail : director.ciwa@icar.gov.in
Phone No : (0674)-2387940, 2387241



निदेशक के उद्गार.....

देश की सम्पन्नता और समृद्धि के लिए निरंतर प्रार्थनारत, सहनशक्ति का पर्याय, सज्ञनता, सहयोग, सामंजस्य, और मातृत्व को परिभाषित करते हुए, मर्यादा के गहनों से अलंकृत, शिक्षा और संसाधनों की सीमितता के वावजूद अपनी अनगिनत जिम्मेदारियां निभाते हुए, भारतीय महिलाएं कृषि उत्पादन, प्रबंधन, प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इतिहास दर्शाता है कि कृषक महिलाओं ने अपनी मेहनत से इस वसुधा को उर्वरक बनाने में अपना अतुलनीय योगदान दिया है और आज भी अपनी कर्मठता, लगन और दृढ़ आत्मविश्वास से सभी जिम्मेदारियां निभाते हुए, मजबूत इच्छा शक्ति का सशक्त उदाहरण, हमारी कृषिरत महिला बहनें पोषण संबंधी प्रतिभूतियों और समग्र आजीविका संवर्धन हेतु, समाज के हर वर्ग के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर सफलता की गाथाएं लिख रही हैं।

आदिकाल से लेकर वर्तमान आधुनिक युग में भी, कृषिरत महिलायें समाज के विकास और बदलाव में सशक्त भागीदारी कर रही हैं। वे फसल, बागवानी, मत्स्य एवं पशुपालन की सभी गतिविधियों में, बीज से लेकर उपज तक, खेत की तैयारी से लेकर फसल की कटाई तक, कटाई उपरांत उपज प्रबंधन, भण्डारण,

प्रसंस्करण एवं मूल्यसंवर्धन तक की गतिविधियों में, एक कृषक के रूप में, उद्यमी के रूप में, और प्रायः खेतिहर मजदूर के रूप में सतत योगदान दे रही हैं। विश्व स्तर पर, फसल, पशुधन, मत्स्य पालन और वानिकी उत्पादन में लगभग 38 प्रतिशत महिलाओं की हिस्सेदारी है। वहीँ हमारे देश में, कुल महिला श्रम बल के आधार पर, लगभग 64.4 प्रतिशत महिलाएं कृषि संबंधी गतिविधियों में संलिप्त हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र में ये संख्या लगभग 76.9 प्रतिशत (2023-24) तक है।

सतत प्रयासरत इन कृषिरत महिलाओं के प्रति आभार स्वरुप, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के अंतर्गत केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर (भा.कृ.अनु.प.-सीवा) ने कृषिरत महिलाओं के योगदान, कृषि में उनके प्रभावों, उनके तकनीकी, सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण संबंधी मुद्दों को प्रभावी रीति से काव्यात्मक ढंग से '**कृषिका काव्यांजलि**' के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। 'कृषिका काव्यांजलि' के रूप में इस बहुपयोगी प्रकाशन को मूर्त रूप देने हेतु, सभी लेखकों एवं सहयोगियों को मैं साधुवाद देना चाहती हूँ जिन्होने अपनी रचनात्मकता का कुशल प्रदर्शन कर इस काव्यात्मक प्रकाशन के माध्यम से राजभाषा का गौरव बढ़ाने में अपना योगदान दिया है। मुझे पूरा विश्वास है कि पाठकों को हमारा ये रचनात्मक प्रयास जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ अवश्य ही रोचक भी प्रतीत होगा।

मृदुला देवी

(मृदुला देवी)

संपादकीय



"कृषिका कव्यांजलि" एक अनूठा काव्य संग्रह है, जो हमारे समाज की उस मौन परंतु सशक्त कृषिका-शक्ति को स्वर प्रदान करता है, जिनका जीवन कृषि कार्यों के लिए समर्पित है। यह काव्य संग्रह कृषिरत महिलाओं के दैनिक जीवन के संघर्ष और समर्पण को प्रतिबिंबित करता है। इन महिलाओं की मेहनत को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करना, केवल उनका सम्मान ही नहीं, बल्कि उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करने के साथ-साथ, उनके भीतर छिपे हुए साहस, संकल्प और आत्मविश्वास के चित्रण का भी प्रयास है। आज भी हमारे समाज में कृषि कार्यों में महिलाओं का योगदान अनदेखा रह जाता है, जबकि सत्य यह है कि अधिकतर कृषक महिलाएं खेतों में पुरुषों के समान अथवा कभी-कभी उनसे भी ज्यादा कठोर परिश्रम करती हैं। उनका दिन सूर्योदय से पहले शुरू

होता है और देर रात तक जारी रहता है। वे न केवल खेतों में काम करती हैं, बल्कि परिवार की देखभाल, वरन घरेलू कार्यों में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके जीवन में निरंतरता और संघर्ष का गहरा समावेश है, जिसको काव्यात्मक शब्दों में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

"**कृषिका कव्यांजलि**" की भाषा सरल, भावनात्मक और प्रभावी है, जो पढ़ने वाले को सीधे उस जीवन से जोड़ती है, जिसका कोई मोल नहीं है। यह संग्रह हमें याद दिलाता है कि महिलाओं की भूमिका केवल घर तक सीमित नहीं होती, बल्कि वे कृषि क्षेत्र में भी अपनी अपार मेहनत और योगदान से देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। इस कविता संग्रह के माध्यम से, हम कृषिका को केवल एक श्रमिक के रूप में नहीं, बल्कि एक संवेदनशील, संघर्षशील और प्रेरणास्रोत के रूप में भी देखते हैं। यह काव्य संकलन हमें न केवल उनके संघर्ष को समझने का अवसर प्रदान करता है, बल्कि उन्हें उनके वास्तविक सम्मान की आवश्यकता पर भी बल देता है । हमें इसे न केवल पढ़ना चाहिए, बल्कि उनके श्रम और योगदान को समझना चाहिए ताकि उन्हें उनकी मेहनत और योगदान का सही सम्मान मिल सके। संपादक मंडल सभी लेखकों को उनके सराहनीय योगदान के लिए धन्यवाद देते हुए, "**कृषिका कव्यांजलि**" की सफलता हेतु शुभकामनाएं प्रस्तुत करता है ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र. स.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ
1	कृषिका हेतु समाधान - कृषिरत महिला संस्थान	डॉ. मृदुला देवी	1
2	हैं अष्टभुजाएँ कृषिका की	डॉ. मृदुला देवी	3
3	कृषिका स्वर्णिम सिद्धि तक	डॉ. मृदुला देवी	6
4	तमन्ना के पल और बदलती धाराएं	डॉ. शान्ति कुमार शर्मा	9
5	पंच तत्व की प्रतीक	डॉ. गायत्री तिवारी	11
6	अवनी नंदिनी	डॉ. नीतीश कुमार	12
7	अन्नपूर्णा	डॉ. प्रसून वर्मा	14
8	कृषि में महिलाओं का योगदान	डॉ. आशुतोष उपाध्याय	17
9	'कृषिका', मैं हूं	डॉ. मृदुला देवी	19
10	कहानी महिला किसान की – I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	21
11	प्रतिध्वनि: खेत की रानी की कुर्बानी की	डॉ. अर्पिता महापात्रा	23
12	ग्रामीण विकास में कृषिरत महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान-I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	24
13	ग्रामीण विकास में कृषिरत महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान-II	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	28
14	ग्रामीण विकास में कृषिरत महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान-III	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	33
15	सपनों की खोज में गांव की रानी	श्री वी. गणेश कुमार	38
16	पुण्य भूमि में कृषिका	डॉ. मृदुला देवी	41
17	महिला किसान – होना नहीं आसान-I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	43
18	महिला किसान – होना नहीं आसान-II	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	47
19	कृषिका	डॉ. सोमा श्रीवास्तव एवं डॉ. डी कुमार	51
20	जय किसान भारती	गीता साहा	52

21	ग्रामीण महिला कृषकों का सशक्तिकरण	ओम प्रकाश, पल्लवी यादव एवं अरोमा सिंह	55
22	प्रतिभा की ना सीमा कोई	डॉ. मृदुला देवी	60
23	नारी और कृषि	मुकुन्द कुमार	62
24	महिला कृषक के दैनिक कृषि कार्यों की गौरव गाथा-I	डॉ. ओम प्रकाश	66
25	महिला कृषक के दैनिक कृषि कार्यों की गौरव गाथा-II	डॉ. ओम प्रकाश	69
26	मैं हूँ महिला किसान	श्री ज्योति रन्जन दास	71
27	मक्का की ममता: धरती की बेटियों का संघर्ष और सम्मान	डॉ. पंकज कुमार	72
28	मितव्ययिता मेरी कृषिका की	डॉ. मृदुला देवी	74
29	ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु उपयोगी कृषि यंत्र-I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	76
30	ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु उपयोगी कृषि यंत्र-II	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	79
31	ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु उपयोगी कृषि यंत्र-III	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	83
32	आज की जानकी	डॉ. किरण जाधव	86
33	स्त्री तुम चलती रहो....	डॉ. गिरिजा सौरभ बेहेरे	87
34	कृषिका की श्रम भागीदारी – समस्याएँ ही समस्याएँ हैं भारी-I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	88
35	कृषिका की श्रम भागीदारी – समस्याएँ ही समस्याएँ हैं भारी-II	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	91
36	नारी तू नारायणी	गीता साहा	94
37	मन में करुणा सी जागी है	डॉ. मृदुला देवी	96
38	महिला किसान, देश की शान	सुश्री अंशिका पंडा	98
39	महिला किसान - प्रेरणामय जीवन	सुश्री बनिस्का बिस्वाल	99

40	मधुर स्वर की कड़वी कहानी	सुश्री मीमांसा मिश्रा,	101
41	ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषिरत महिलाओं का अतुलनीय योगदान-I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	103
42	ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषिरत महिलाओं का अतुलनीय योगदान-II	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	106
43	कृषि की धरोहर: भारतीय नारी	श्री भूपेन्द्र सागोर	110
44	महिला किसान के सपने	श्री शक्ति प्रसाद सिंह	112
45	मैं सम्मानित हूं !	डॉ. मृदुला देवी	113
46	नारी सशक्तिकरण	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	115
47	नारी : कृषि शक्ति	श्री आभास महापात्र	118
48	आकृति - प्रकृति	डॉ. मृदुला देवी	120
49	परिश्रम चाय बागान में	डॉ. मृदुला देवी	122
50	स्वयं सहायता समूह	सुश्री आयुसी बारिक	125
51	कृषक - नर या नारी	सुश्री ओमकिता नायक	127
52	किसान महिलाओं का संघर्ष	सुश्री आकांक्षा बेहेरो	129
53	फसलें और महिलाएँ : एक साझेदारी की कथा	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	130
54	सृजन और साहस	श्री अर्णव दाश	132
55	नमन नारी को	मो. खालिद रज़ा	133
56	तिरंगी अभिलाषा	डॉ. मृदुला देवी	135
57	मन झंकृत है-I	डॉ. मृदुला देवी	137
58	मन झंकृत है - II	डॉ. मृदुला देवी	139
59	नारी नहीं है कम	सुश्री अर्पिता महापात्र	142
60	मैं नारी हूँ	सुश्री अनुश्री रथ	143
61	सतत कृषि विकास में महिलाओं की भागीदारीः एक कवितामयी दृष्टिकोण	डॉ. संग्या सिंह, डॉ. दीपा विनय, डॉ. सीमा क्षात्रा एवं डॉ. पूनम तिवारी	145

62	कृषि में नारी शक्तिः उत्पादकता और प्रगति की नई राह	डॉ. संग्या सिंह, डॉ. दीपा विनय, डॉ. सीमा क्षात्रा एवं डॉ. पूनम तिवारी	147
63	देश को चलाने वाली	सुश्री अन्वेषा महापात्र	148
64	कृषि, बागवनी और पशुपालन में महिलाओं की सहभागिता	सुश्री राजश्री साहु	150
65	दादी की गाय	श्री स्वाधीन स्वरुप नायक	151
66	धरती की फुलवारी	सुश्री स्वयंश्री मल्लिक	152
67	खेतों की वीरांगनाएँ	सुश्री तनीशा साहू	154
68	ये है हमारी प्राचीन ग्रामीण नारी	डॉ. विशाखा बंसल	155
69	आओ साथियों तुम्हें सुनाएँ कहानी भारतीय महिला किसान की - I	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	157
70	आओ साथियों तुम्हें सुनाएँ कहानी भारतीय महिला किसान की - II	डॉ. ब्रह्म प्रकाश	161
71	महिला किसान - हमारा सम्मान	सुश्री सुभस्मिता पंडा	164
72	कामकाजी माँ	ऋतु मावर	165
73	जल संचय	डॉ. मृदुला देवी	167
74	सरसों कृषिका पीली सी	डॉ. मृदुला देवी	169
75	सफल सर्वसंपन्ना	डॉ. अर्पिता महापात्रा	171
76	मिशन शक्ति का	डॉ. मृदुला देवी	173
77	नारी शक्ति तुमको वंदन	डॉ. मृदुला देवी	176
78	क्षितिज तक है पहुँच मेरी	डॉ. मृदुला देवी	180
79	कृषिका तुम बढ़ते रहना	डॉ. मृदुला देवी	182
80	आभार कृषिका	डॉ. मृदुला देवी	184



कृषिका हेतु समाधान - कृषिरत महिला संस्थान

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, परिषद का, एक अद्वितीय संस्थान,
अपनी विशेषताओं को समेटे हुए, रखता हरेक 'कृषिका' का ध्यान।
लैंगिक परिदृश्य में अनुसंधान, है संस्थान की प्राथमिकता।
चुनौतियाँ पहचान कर, मुद्दों का समाधान कर,
कृषिरत महिलाओं को मुख्यधारा में लाना, है हमारी उत्सुकता।

मुखरता से कार्य करना,
निरंतरता को बनाये रखना।
संस्थान उत्प्रेरक के रूप में स्थापित हो,
हर महिला सशक्त हो, है हमने ठाना।

दक्षता में वृद्धि और प्रभावशीलता बढ़ाना,
संवेदनशील निर्णय और ज्ञान उत्पन्न करना।
शोध हो प्रभावी और प्रसार प्राथमिकता,
चिंतन हो शीलयुक्त, प्रयासों की अथकता।

कृषि की उन्नति हो, उत्पादकता में वृद्धि हो,
निरंतरता शाश्वत हो, स्थिरता में बढ़ोत्तरी हो।
पोषकता चहुमुखी हो, विश्व स्तर पर प्रगति हो,
सर्व में सदा ही, कृषिका सहभागी हो।

लैंगिक समानता, हो नीतिगत प्रखरता,
कार्य में कर्मठता, हो संवेदन प्रभाविता।
दूरदृष्टि सभी की, हो प्रगति स्थापिता,
सहभागिता सभी की, हो प्राप्ति की असीमितिता।

हर महिला सशक्त हो, प्रगति की साक्षी हो,
पुष्ट हो, संपन्न हो, प्रशन्न हो, आनंद हो,
सफल हो, अजेय हो, स्नेही हो, श्रेष्ठ हो।
श्रेष्ठता को सिद्ध करता, विजयी कृषिरत महिला संस्थान हो।

सीवा की अमरता का, नया वरदान हो,
श्रेष्ठ संस्थान सीवा, हर महिला का ध्यान हो,
श्रेष्ठ संस्थान सीवा, हर कृषिका का ध्यान हो।
सहभागिता की असीमितिता, लैंगिक प्राथमिकता,
कठिनाईयां दूर करना, सीवा की पहचान हो।
श्रेष्ठ संस्थान सीवा, हर ग्राम में विद्यमान हो,
प्रभावी हो, मुखर हो, प्रखर हो, प्रयासों में दृढ़ हो,
श्रेष्ठतम मानदंडों में कृषि मंत्रालय की, बढ़ाता शान हो।
सीवा संस्थान हर कृषिका की समस्या का, समाधान स्थान हो।

कृषिका अग्रणी हो, कृषिका धनी हो, कृषिका सशक्त हो,
हर क्षेत्र में दक्ष हो, कृषिका, सफल समाज की शान हो।
उसकी उन्नति में, उसकी प्रगति में,
सीवा सदा ही, देता योगदान हो।

श्रेष्ठतम संस्थानों में, श्रेष्ठ स्थानों में,
सीवा सदा ही, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का,
बढ़ाता मान हो।
केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान,
कृषिरत महिला 'कृषिका' हेतु, प्रथम समाधान स्थान हो,
शोध में प्रयासरत, प्रसार में प्रगतिरत,
श्रेष्ठतम संस्थान हो, श्रेष्ठतम संस्थान हो.....।

हैं अष्टभुजाएँ कृषिका की

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

अपने घर की, सीमा रेखा में,
मेहनत की सीमा, को पार करूँ।
प्रगति की सीमा, सीमित है,
फिर भी सबका, गुणगान करूँ।

दो हाथ और, दो चरण कमल,
इनसे करती हूँ, सकल सफल।
हूँ चार भुजा सी, शक्ति हूँ,
करती निश्छल सी, भक्ति हूँ।

सुबहा होती, हूँ मंदिर प्रांगण,
ईश्वर सम्मुख, फिर भी आँगन।
शिशु साथ रहे, शिशु हाथ रहे,
करती हूँ सर्व, मनोरथ भी।

मातृत्व की सीमा, ना सीमित,
हूँ माँ की माँ, और माँ सबकी।
तुम चार और, तुम आठ सही,
मैं करती सकल, मनोरथ पूरित।



घर में माता, बीमार हुयी,
हुयी पिता की हेल्थ (सेहत),
निढाल हुयी।
अपने भंडारे से करती,
मैं वैद्यनाथ, हर हाल हुयी।

करती सेवा, ममता समतुल,
शिशु पाठन और स्वजन घर कुल।
स्वामी की सेवा, निष्ठा फुल,
सम्पूर्ण समर्पण, ईश्वर समतुल्य।

घर बार न ही, गृहकार्य सभी,
कोई मांग न, करती मेरी हूँ।
हर जिम्मेवारी की, जिम्मेदारी को,
हर हाल में दिल से जीती हूँ।

घर आँगन हैं, मनभावन है,
खलिहान का, चाहे प्रांगण है।
हो धूप सही, या छाँव ना भी,
हर स्वांस में, सपने बुनती हूँ।

पशु का पालन, मुर्गी पालन,
आहार सर्व को, देती हूँ।
मछली को पानी, से मिलना,
मछली को घर, तक ढोती हूँ।

पाक शात्र की, माहिर हूँ,
हर ज्ञान साथ में रखती हूँ
करती हूँ सेवा, पशुओं की,
घर, खेत में जीवन जीती हूँ।

घर, खेत और जन सब मेरे,
हर हाल में, खुश मैं रहती हूँ।
कृषिका हूँ, कृषिका सी जीती,
सम्मान मान, मैं रखती हूँ।

हैं अष्टभुजायें, कृषिका की,
अदृश्य हैं, हैं पर गोचर भी।
मैं अपनी सीमा, में रहकर भी,
हर हाल में खुशियाँ, भरती भी।

हैं अष्टभुजायें, कृषिका की,
है सर्व समर्पित, शक्ति सी।
दो हाथ और, दो चरण कमल,
करती निश्छल सी, भक्ति सी।

अपने घर की, सीमा में मैं,
सपनों का, सजना चुनती हूँ।
हूँ पास सही, या दूर कभी,
हर हाल में, घर को सुनती हूँ।

कृषिका हूँ, कृषिका सी हूँ,
घर साथ हमेशा, चलती हूँ।
चाहे हूँ घर आँगन में,
या हो चाहे फिर, बागन में।

सबका सुनती, सबको सुनती,
संतुष्ट सभी को, करती हूँ।
हैं अष्टभुजायें, कृषिका की,
संतुष्ट समर्पित, शक्ति सी।

घर, पास पड़ोस, कृषि और वृद्ध,
शिशु साथ, बड़े और सखियाँ भी।
सबका सुनती, सबको सुनती,
संतुष्ट सभी को, करती हूँ।

हैं अष्टभुजायें, कृषिका की, संतुष्ट समर्पित, शक्ति सी .....

कृषिका स्वर्णिम सिद्धि तक

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

भारती के भाल पर सुशोभित,
ये पहचान शक्ति की लाली है।
शक्ति स्वरूपा सब हैं,
ये कृषिका ने स्वीकारी है।

पृथक पृथक परिवेश हैं लेकिन,
पृथकता में भी है एकता।
हर क्षेत्र में हूँ सुशोभित,
हर योगदान में है तत्परता।



महिला हूँ, महिला सी ही हूँ,
हर क्षेत्र में दखल रखती हूँ।
कर सेवा सुश्रुषा हर विभाग की,
सशक्त नारी की पहचान रखती हूँ।

ले हाथ में पुस्तकों का भार,
गुरुकुल से शिक्षालय का सार।
ज्ञानालय से कृषि-विद्यालय तक,
हर विश्विविद्यालय में मैं, अपनी पहुँच रखती हूँ।

कल आज की शक्ति स्वरूपा हूँ,
सरस्वती का साथ रखती हूँ।
हर डिग्री से सुशोभित मेरी फाइल,
कृषिका हूँ पर, लक्ष्मी सा मान रखती हूँ।

हर तकनीक पर है मेरी पकड़,
छोड़कर हर समाज की,
कुरीतियों की जकड़।
ड्रोन को अब मैं उड़ाती हूँ,
ड्रोन को अब मैं चलाती हूँ।

कृत्रिम बौद्धिकता को अब समझना भी,
रोबोटिक से अब कार्य बोझ सहजाना भी।
करना आसान हर पहेली को है,
कृषि-का प्रयासों को फलदायी बनाना भी।

करूँ दृढ़ता से अब मैं प्रतिज्ञा यही,
ट्रैक्टर, लैपटॉप, ड्रोन या फिर रोबोट सही।
व्हेदर एडवाइजरी हो या जलवायु समस्या का ज्ञान,
हर क्षेत्र में कृषिका, है विशेष भी।

कर में माइक है, साथ में फाईल भी,
सिर पर सजता सदा ताज, सामाजिकता का है।
शिशु रक्षा का हर संकल्प पूरा सभी,
वीणापाणिनि का है सितार भी।

हर स्वजन की शुभकामनाओं से आक्षादित,
हर भार के लिए तत्पर रहती हूँ।
शक्ति संपन्न रहती ललाट मेरे,
कदमों में सूर्योदय से शक्ति भरती हूँ।

हर प्रयास मेरा किरणों जैसा,
किरणों सी अप्रतिम प्रतिज्ञा भी।
घर, खेत सजित, खलिहान हरित,
उपज सततता, स्वर्णिम सी।

है भाल पे लालिमा शक्ति सी,
युग परिवर्तन का संकल्प सृजित।
आभा सी कृषि स्वर्ण सुसज्जित,
स्वर्णिम परिवर्तन सिद्धि सी।

प्रयास शक्ति से करके हर,
स्वर्णिम युग में कर पदार्पण,
प्रयास तुम्हारा मेरा सबका,
संकल्प हरित हर सिद्धि तक।

तमन्ना के पल और बदलती धाराएं

डॉ. शान्ति कुमार शर्मा

सहायक महानिदेशक, कृषि शिक्षा, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली

ये पूरे जीवन का लक्ष्य है कि उन धाराओं में मैं भी
बहूं जिन धाराओं की मैं सूत्रधार हूं।
बढ़ता नित रोज मेरा मन उस छलांग की
ओर जिसको सजाया मैंने समाज की उन्नति की ओर।

जीवन चलता रहेगा फिर भी
मेरी आशाएं हैं कि सभी पहुंचे उस छोर।
जो आबादी का पचास प्रतिशत है
उसको छोड़ कर कैसे होगा यह सम्भव,
मुझे कचोटता है मन का मेरा यह चोर।

स्त्रिक्ता में पिछले पिचहतर वर्षों में किये गये हैं कई उपाय,
बढ़ी हूं मैं आगे अपनी हद से,
फिर भी समाज को इसके लिए करने हैं कई उपाय।

मेरी स्वतन्त्रता, मेरा मन, मेरा सबके लिए असीम स्नेह
क्या इसके लिए आपकी जिम्मेदारी कुछ भी नहीं?
हो सकता है समय की आंधियों में आये हैं कई बदलाव,
जो रोक रहा है समाज को करने के लिए मेरा फैलाव।

लेकिन अब नई चुनौतियां के साथ
नया समय आया है, समय बदला है।
बदलते समय में मेरी छांव और भी बढ़ी है,
बढ़ते हुए इन दुर्गम रास्तों से मैं निकल रही हूं।

अब अपने सपने संजोने, आपका साथ,
आपका विश्वास मुझे लगता है अब ओर आगे ले जाएगा।
मैं आपके साथ, समाज के साथ,
परिवार के साथ इसे आगे और संजोती रहूंगी।

मेरी तमन्ना है कि वक्त के साथ समाज को बदलना,
वक्त के साथ समाज के विभिन्न पायदानों से मुझे समझना,
वक्त के साथ मुझे भी उतना ही सम्भव
प्रयास करने का हक देना, अधिकार देना,

संवेदना देना, प्यार देना जिसकी मैं हकदार ही नहीं हूं,
बल्कि आपके खुद के शब्दों में
मुझे भी वो अच्छा लगता है।

मुझे भी वो अच्छा लगता है,
आशा है समाज के सभी नियम,
सभी नीतियां, सभी सहयोग, सभी कार्यक्रम
उतने ही सजग और मुस्तगी से अब मेरे लिए भी हैं।

जिससे मैं अपने सपनों की उड़ान भर सकूं,
और समाज के इस पचास प्रतिशत हिस्से को
और अधिक उपयोगी बनाकर इस देश की
प्रगति में अपना योगदान दे सकूं।

पंच तत्व की प्रतीक

डॉ. गायत्री तिवारी

प्रोफेसर, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदैपुर, राजस्थान

पंच तत्व पर भी तुम भारी,
धन्य धन्य हमारी कृषक नारी।
सृजनकर्ता ने की जब सृष्टी की रचना,
सरलता की प्रतीमूर्ती नारी को चुना।

अद्वितीय मेहनत से बोती बीज धरा के भीतर,
फिर अंकुरित होने तक करती हो अथक प्रतीक्षा,
पौधे रूप के लिए, अविश्वसनीय मौसम के भरोसे,
न जाने कितनी बार देती हो तुम धैर्य परीक्षा।

गगन के समान संभावनाएं अपरम्पार,
अपनी जिजीविषा से देती सबको तार।
कष्ट भरी हो डगर चाहे जितनी
करती हो तुम सूझ बूझ से पार।

जब रहती घर –खेत में हरदम,
तब सबकी नज़र पड़ती है कम।
वायु समान प्रकृति है तुम्हारी
कमी तुरंत महसूस करते सभी जन।

सारी इच्छाओं को जलाती अग्नी बन,
तप तप कर निखरती जैसे कंचन।
जो भी आ जाते शरण में तुम्हारी,
उनका जीवन बना देती तुम मधुबन।

बढ़ती जाती, बहती जाती, अथक अविरल,
कल –कल करती बहती जैसे जल निर्मल।
चट्टानों से टकराकर अपना रास्ता आप बनाती,
अनेक रूपों की नदी बन, कर्म सागर में जाती मिल।

अवनी नंदिनी

डॉ. नीतीश कुमार

वैज्ञानिक,भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

है धरा की निर्मल गंगा तू,
जिसके पाणि कृषि औज़ार धरी।
करती भूतल से गुफ्तगू,
बनती समाज की तुम प्रहरी ॥

बच्चों के जब जठरानाल तपति,
तू छोड़ औज़ार बर्तन ढकती।
रहस्य तेरा समझ न सके,
ऐसी है तेरी पुण्य कृति ॥



पत्थर पानी दिन रात करती,
मौन रहकर पीड़ा सहती।
न सुबह आराम, न रात्री चैन,
खेतों में कटती, तेरे दिन व रैन ॥

तपते सूरज को देती मात,
बादल गरजे जब आकाश।
बाधा विघ्नों को कर हताश,
खेतों में करती, अथक प्रयास ॥

अवनी की लीला जाने तू,
श्यामल धरा की रक्षिणी तू।
पावन धरा की तू वंदिनी,

है प्रणाम तुझे अवनी नंदिनी ॥

अन्नपूर्णा

डॉ. प्रसून वर्मा

वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. -भारतीय दलहन अनुसन्धान संस्थान, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मै और तुम
कभी अलग न थे.
एक-दूसरे के पूरक हैं जो
भला कभी पृथक होंगे।

भारतीय कृषि के
उतार-चढ़ाव के
साझा साक्षी हैं हम.
हमने देखी और भोगी है
दुरभिक्ष की दुर्दशा।

विज्ञान और अनुसन्धान के साथ
हमने काँधे से काँधा मिलाकर
बदला है कृषि का परिदृश्य।
देश को दी हैं
कई कृषि क्रांतियाँ।

खाद्य सामग्रियों के आयातक से लेकर
निर्यातक तक की यात्रा में है,
हमारा भी बराबर का योगदान
प्रायः अनदेखा सा।

परिवार की धुरी पर ही टिका है
हर सफलता का श्रेय तो
ये गर्वोक्ति नहीं है कि हम ही हैं वो धुरी.
जिस पर घूमती है घर रूपी इकाई

इकाइयों का समूह ही तो है
समाज और देश।
घूमते पहिये तो दिखते हैं सबको पर
धुरी पर कदाचित जाता है ध्यान किसी का।

निरन्तर जो
लहलहाती फ़सलें
हर ओर दिखायी देती हैं,
वो इंगित करती हैं
सतत कृषि क्रांति की ओर
किन्तु मात्र उत्पादन वृद्धि क्रांति नहीं है।

बोआई से लेकर कटाई और
कटाई से लेकर थाली तक
जब उत्पाद पहुँचता है
तब जा कर होती है कोई क्रांति सम्पन्न।
इसके हर चरण में
अन्नदाता के साथ अन्नदात्री का भी है
महत्वपूर्ण योगदान।

गेहूँ और धान
फल हो या सब्जी
या अन्य सभी खाद्य सामग्रियों के
थाली तक पहुँचने से पहले
है एक विस्तृत मूल्य श्रृंखला।

फसलें गुजरती हैं
अनेकानेक
प्रसंस्करण पद्यतियों से
ताकि वर्ष पर्यंत सुरक्षित रहे उनकी
उपलब्धता, गुणवत्ता और पौष्टिकता।

चौके में चूल्हे की आँच पर
जब सिंकती हैं रोटियाँ या
पकता है पुलाव
तो उसकी सोंधी गंध में सम्मिलित है,
हम दोनों की बराबर मेहनत और
हम दोनों का बराबर पुरुषार्थ।

अपने योगदान के लिये शब्द माँगना
हमें कभी नहीं आया।
बिना श्रेय के कार्य हमें
सदा भाया।
किन्तु हमारे पुरखों को
इस बात का था पूर्ण भान।

सम्भवतः भारत ही है
एक मात्र ऐसा देश
जो देता है हमें सम्मान
अन्नपूर्णा का..



कृषि में महिलाओं का योगदान

डॉ. आशुतोष उपाध्याय

प्रमुख, भूमि एवं जल प्रबंधन प्रभाग

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वी क्षेत्र अनुसंधान परिसर, पटना

अप्रतिम और सराहनीय है, नारी का कृषि में योगदान।
उसके अनदेखे परिश्रम की, करना है हमको पहचान॥
श्रम का सही आंकलन कर, दिलाना है उचित सम्मान।
कृषि में नारी सशक्तिकरण, बस यही इसका समाधान॥

ग्रामीण अर्थव्यवस्था का, सुदृढ़ आधार महिला किसान।
सबके भोजन और देखभाल का, रखती सदा वह ध्यान॥
कुरीतिओं व लैंगिक भेदभाव से, होती कभी न परेशान।
बिना वेतन लिए ही वह, परिवार को करती सेवा प्रदान॥

कृषक, श्रमिक व उद्यमी बन, महिलाएं करती योगदान।
देखो कैसे खेतों में झुककर, वे रोपित करती पौध धान॥
धान की रोपनी कर, धरती को पहनाती हरित परिधान।
उनके अथक प्रयासों से ही, प्रचुर मात्रा में होता खाद्यान्न॥

पशुपालन, बागवानी व कटाई, सभी कार्य हैं श्रम प्रधान।
चारा संग्रहण, थ्रेसिंग व फटकना, ये कार्य नहीं आसान॥
मत्स्य पालन व मुर्गी पालन, करती कुछ महिला किसान।
बकरी व सुअर पालकर, कुछ बनती व्यवसायी किसान॥

बेशक अद्भुत योगदान देती है, कृषि में महिला किसान।
पर भूमि पर मालिकाना हक, अभी भी है बड़ा व्यवधान॥

इसी कारण सरकारी योजनाओं से, रहती है वह अनजान।
मालिकाना हक जरुरी है, बनाना होगा क़ानूनी प्रावधान॥

इनके मूलभूत अधिकारों का, कराना होगा इनको ज्ञान।
आय सृजन की चुनौतियों पर, केंद्रित कराना होगा ध्यान॥
बिस्किट, अचार, पापड़ बनाना, या हो कोई भी उपादान।
ग्रामीण नारी सशक्तिकरण में, आत्मनिर्भरता है वरदान॥

क्षमता निर्माण और संचार कौशल, इसका भी है योगदान।
परिवर्तन, भागीदारी व विकास का, इन्हें कराना होगा भान॥
आर्थिक व सामाजिक संस्थाओं का, इन्हें कराना होगा ज्ञान।
तभी स्थिति सुधरेगी, और महिला किसान का बढ़ेगा मान॥

निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास, बढ़ाओ ओ! महिला किसान।
आप सबकी सहायतार्थ ही हैं, के.वी.के व अनुसंधान संस्थान॥
इनका उद्देश्य प्रशिक्षण देना, कुछ जानकारियां व नया ज्ञान।
इनका सदुपयोग करके, जानकार किसानों के मिलेंगे रुझान॥

महिला क्लब या महिला उत्पादक संघ, बनायें महिला किसान।
उसके द्वारा वे बनेंगी उद्यमी, और वित्त व्यवस्था होगी आसान॥
मिलजुल कर जब करेंगी सब काम, तब होगा सबका गुणगान।
महिला किसान हों स्वस्थ, सुशिक्षित, तब बनेगा यह देश महान॥

आओ हम सब आज विचारें, क्या है दयनीय स्थिति का निदान?
किसान महिला सशक्तिकरण के, हमें गढ़ने होंगे नए प्रतिमान॥
उनका जीवन खुशहाल बनाकर, करना होगा जागृत स्वाभिमान।
प्रगति पथ पर चलेंगी महिलायें, एवं होगी उनकी मंजिल आसान॥

‘कृषिका’, मैं हूं

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

संस्थान ने कहा, कृषिका मैं हूं।
तुम हो तो, मेरा वजूद है।
शिक्षा हमारी है, ताकत तुम्हारी,
तकनीकी से निखरी, है मेहनत तुम्हारी।
मैं अर्पण हूं करता,
प्रयासों को सारा।
तुम्हारे लिए सदा मैं हूं,
तुम्ही से रखता वजूद हूं।



कमी को है लाना, श्रम साध्य तुम्हारा।
सामर्थ्य बढ़ाना, है लक्ष्य हमारा।
ड्रजरी (श्रम साध्य) हटाना, प्रोटेक्शन (बचाव) बढ़ाना,
है सपना सभी का, सभी को हँसाना।

घाव सब छूटें, चोटें कभी ना,
कटाई हो या फिर, रोपण कराना।
मैं ताकत तुम्हारी, बढ़ाऊंगा सारी,
तकनीक से है, उजागर कराना।

दूर हो झुकना, दूर हो थकना,
निराई हो या फिर गुड़ाई हो करना।
वीडर ने बोला है, खुर्पी ने बहना,
रिज़र भी कहता, है बोला ट्रांसप्लांटर,
करुंगा मैं दूर, हर सहना पुराना।

चिंता तुम्हारी, हरूँगा मैं सारी।
ये कहना है शक्ति, मिशन है हमारा।
तू ताकत सभी की, सभी हैं तुम्हारे,
मिशन शक्ति सब तक, मिशन है हमारा।

तुम्हारे लिए, सदा मैं हूं, कृषिका से रखता वजूद हूं .....

कहानी महिला किसान की – I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

भारतीय ग्रामीण महिला किसान।
जीवन तुम्हारा नहीं है आसान॥
सच्ची, मेहनती हो तुम दृढ़वान।
तुम तो लगती कोई देवी महान॥

सीधी-साधी, मेहनती व नेक इंसान।
हसिया व खुरपी तुम्हारी है पहचान॥
खेती के लिए तुम सदा दिखो परेशान।
कहलाती तुम हो एक महिला किसान॥

सुबह, दोपहर, रात हो या शाम।
हमेशा सुहाता तुमको बस काम॥
मेहनत से तुम करो प्रत्येक काम।
आराम को तुम समझती हराम॥

रंगत देखो तुम्हारी होती मलीन।
तुम्हारा है परिवार बहुत कुलीन॥
आचरण तुम्हारा अत्यंत शालीन।
खेती-बाड़ी में ही रहती तल्लीन॥

सारी दुनिया जब है सोई होती।
सूर्य ने आँखें भी न खोली होती॥
खुरपी हसिया लेकर खेत चलती।
काम को ही, हो अर्चना समझती॥

चिंता कल की न कभी सताती।
आज पर ही हो जान बिखेरती॥
मेहनत तुम्हारी है रंग दिखाती।
तभी तो तुम अन्नदाता कहाती॥

दिलवाई खाद्यान्नों में हरित क्रान्ति।
दुग्ध उत्पादन में लाई श्वेत क्रान्ति॥
लाई मत्स्य उत्पादन में नीली क्रान्ति।
पर तेरे जीवन में आई नहीं शांति॥

बागों में फलों के कई पेड़ उगाती।
जंगल में भी पुष्प उगा सजाती॥
खेत किनारे भी कुछ वृक्ष लगाती।
पूरे विश्व को ही हो चमन बनाती॥

महिला किसान तुम हो बहन माता।
आराम तुमको कभी भी नहीं भाता॥
मेघों से जब खेत में है जल बरसता।
चेहरा तुम्हारा है तभी बस खिलता॥

तुझको सभी कहते किसान मैया।
चराती तू भी बकरी, भैंस व गैया॥
पार नहीं लगती है तुम्हारी नैया।
उफ तक नहीं करती हाय दैया॥

कृषि ने दर्ज की देश में बहुत प्रगति।
कीट-रोग से फसलों को होती क्षति॥
नहीं फैलाते लोग दुनिया में जागृति।
जैसे मारी गई हो दुनिया की मति॥

तेरे ज्ञान की जलती है ज्योति।
मुस्कान भरी रहती तेरी सुरति॥
महिमा तेरी गाती है माँ भारती।
पशु-पक्षियों से भी रखती प्रीति॥

प्रतिध्वनिः खेत की रानी की कुर्बानी की

डॉ. अर्पिता महापात्रा
वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

खेतों में काम करती, धरती की पुत्री है,
कृषक महिला तू प्रत्येक घर की जीवनधारा है।
सूरज की तपिश और बारिश की बूँद,
तेरी मेहनत से ही होती है फसलें खूब।
सींचती है मिट्टी को, तेरे ये हाथ,
खेतों को संजीवनी मिले, सिर्फ तेरे ही साथ।
खुद की मेहनत से, लाती हो खुशहाली,
धरती की बेटी, तेरी ही मेहनत से,
भरती है हम सब की थाली।



कभी बुआई करती, कभी सिंचाई करती,
सारे परिवार की ज़िम्मेदारी बखूबी निभाती।
तू है संघर्ष की प्रतीक, अडिग और मजबूत,
खेती और खेत तेरे ही त्याग, समर्पण के सबूत।
सिर्फ खेत की रानी नहीं तू, हम सबकी जिंदगानी है,
खेतों की हरियाली तेरी कुर्बानी की निशानी है।
मिट्टी से जुड़ी रहती हो
हर पत्ते में सींचती हो,
प्यार की अद्भुत रवानी,
अपने सुख को समेट कर
खुद को निचोड़ती हो तू कल्याणी ।
हर मौसम की चूनर में लिपटी तेरी मेहनत,
कृषक महिला, हर समय तू है कार्यरत।
हर तरफ आज तेरे, जादू की चर्चा,
अथक परिश्रम को तेरा, करते हैं सलाम हम सच्चा.....।

ग्रामीण विकास में कृषिरत महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान-I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

महिलाएं, भारत ही नहीं, अपितु विश्व के प्रत्येक देश की
आबादी का हैं लगभग आधा व बहुत ही अहम भाग।
विश्व भर में अभी भी जनसंख्या का शेष भाग जो पुरुष हैं,
अभी भी अलापते हैं अपनी ही ढपली अपना ही राग॥

कृषि और कृषि आधारित उद्योग ही भोजन, वस्त्र तथा
आवास करते हैं हमारे सम्पूर्ण मानव समाज को प्रदान।
तो ऐसी स्थिति में समाज में कैसे कोई मानव, कृषि को
न दे इसके देने लायक उचित मान और सम्मान॥

विश्व भर में आज ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहां महिलाएं
न देती हों अपना विशेष तथा अहम योगदान।
पर उनकी कड़ी मेहनत को देख तथा समझकर भी
उनका उचित परिश्रमिक नहीं देते हैं उनके ही कद्रदान॥

भारत में महिलाओं का रहा है वर्षों से लैंगिक भेदभाव,
आर्थिक उत्पीड़न तथा गंभीर शोषण का इतिहास।
समाज के आधे तथा अत्यंत महत्वपूर्ण अंश के इतने
अधिक उत्पीड़न का होता नहीं क्यों हमें आभास॥

बहुत सी महिलाएं आज भी समाज में अपनी आत्मनिर्भरता
के लिए सदा आपने सार्थक प्रयास हैं करती रहती।
महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण करना भारत के
आर्थिक विकास के सामने अभी भी है एक बड़ी चुनौती॥

हमारे देश में ग्रामीण महिलाएं समाज को कुल मानव
श्रम घंटों में दो तिहाई तक का देती हैं अमूल्य योगदान।
पर हमारा समाज विश्व की संपत्ति तथा वैश्विक आमदनी
का सिर्फ दसवां हिस्सा ही करता है महिलाओं को प्रदान॥

भारतीय संविधान द्वारा पुरुषों के समान ही शहरी व
ग्रामीण महिलाओं को भी दिए गए हैं सभी अधिकार समान।
पर आज भी विभिन्न क्षेत्रों में स्वतन्त्रता के छियत्तर वर्षो
बाद भी महिलाएं नहीं पा पा रहीं हैं उचित सम्मान॥

ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास के लिए ग्रामीण कृषक
महिलाओं का होता है एक अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान।
ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर कृषिरत महिलाएं खेतों में
काम करने के साथ घरेलू कार्यो में फूँकती रहती हैं जान॥

ग्रामीण महिलाएं करती हैं घरेलू प्रबंधन, बच्चों के
पालन-पोषण तथा परिवार में सभी सदस्यों का भोजन तैयार।
सदा चाहती हैं ग्रामीण महिलाएं अपने पारिवारिक,
शैक्षणिक विकास व सामाजिक तथा आर्थिक स्तर में सुधार॥

भारत के कृषि प्रधान देश होने से कृषिरत महिलाएं चाहती हैं
कृषि विकास का करना अपना सपना साकार।
अपने कृषि आय बढ़ाने हेतु करती हैं ग्रामीण कृषक
महिलाएं हर नवोन्मेशी प्रौद्योगिकी सहर्ष स्वीकार॥

बेहतर मशीनरी के प्रयोग से खेती के यंत्रीकरण
करने पर रखती हैं ग्रामीण कृषक महिलाएं विश्वास।
देश में खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के लिए सिंचाई की
सुविधाओं को भी बढ़ाने की रखती है सम्पूर्ण आस॥

फसलों की बुवाई से कटाई तथा इसके उपरांत की
क्रियाओं को भी हैं ग्रामीण महिला किसान ही करती।
खाद्यान्न, फलों एवं सब्जियों का सुरक्षित वैज्ञानिक
भंडारण भी सुनिश्चित कृषक महिलाएं ही स्वयं करती॥

अपनी उत्पादित फसल उत्पाद के उचित मूल्य प्राप्त
करने हेतु विपणन की भी ज़िम्मेदारी हैं वे निभाती।
कृषि विकास एवं बच्चों की शिक्षा आदि पर निवेश
हेतु बचत को भी महिलाएं ही प्रोत्साहित करती॥

लैंगिक समानता के बारे में एहसास होने से अब किसान
महिलाएं करती हैं खाद्य सुरक्षा में अधिक योगदान।
गुणवत्ता और दक्षता के मामले में भी अब हर क्षेत्र में
भारतीय किसान महिलाएं कर रही हैं अधिक श्रमदान॥

मिट्टी खुदाई जैसे भारी शारीरिक श्रम को छोड़कर,
ग्रामीण कृषक महिलाएं हैं पुरुषों से किसी कार्य में न कम।
पुरुष कृषकों की तुलना में कृषि के अन्य सभी कार्यों में
अधिक कुशलता से करने में होती हैं वे सक्षम॥

महिलाओं के खेतों में कड़े परिश्रम के बावजूद,
उनके पारिश्रमिक में आज भी किया जाता है व्यापक भेदभाव।
महिलाओं में उनकी कम मोलभाव क्षमता से पुरुषों के
समान पारिश्रमिक देने की रीति में नहीं दिख रहा बदलाव॥

ग्रामीण महिलाएं इससे हतोत्साहित हैं होती,
उन्हें अधिक पहल करने में होती है बड़ी बाधा।
इतनी कड़ी मेहनत के बावजूद ग्रामीण किसान
महिलाओं को उनका कम पारिश्रमिक बनता है बड़ी बाधा॥

हालांकि भारत ने हरित क्रान्ति द्वारा खाद्यान्न उत्पादन में
आत्मनिर्भरता हासिल कर भुखमरी पर जीत पा ली है।
पर बढ़ती आबादी को दृष्टिगत रखते हुए खाद्य
आपूर्ति में स्थिरता एक गंभीर चुनौती आज भी है॥

हमारे देश में आज भी देश की खेती काफी हद
तक तक रहती केवल मैनुअल श्रम पर ही है निर्भर।
पिछत्तर प्रतिशत तक कृषि श्रम प्रदान करने के
कारण आज भी भारतीय कृषि महिलाओं पर ही है निर्भर॥

अशिक्षा के बड़े स्तर से, महिला किसान जनसंचार
माध्यमों तथा बाहरी दुनिया से आज भी हैं अपरिचित।
इसलिए आज भी अधिकांश ग्रामीण महिलाओं का
ज्ञान पारंपरिक प्रथाओं तक ही है रह गया सीमित॥

भारत सरकार एवं प्रदेश सरकारें उत्पादन और लाभप्रदता
को अधिकतम करने हेतु चला रहीं हैं विभिन्न अभियान।
इन अभियानों से ही संभव हुआ उन्नत शोध तथा
आर्थिक दबावों से कृषि प्रथाओं का निरंतर उन्नयन॥

धान उत्पादन में कोई भी कार्य हो बीज बोना हो,
पौध उखाड़ना हो या करना हो रोपाई, निकाई-गुड़ाई या कटाई।
किसान महिलाएं हर कार्य करती हैं फसल की
कटाई के उपरांत मढ़ाई हो अथवा हो धान की सफाई॥

कृषि विकास प्रक्रिया में कृषक और खेतिहर महिलाएं
रहती हैं सदा प्रत्यक्ष तथा सक्रिय रूप से सम्मिलित।
कई गतिविधियां शुरू की गई हैं जिससे सधे इनका
व्यावसायिक कौशल तथा बेहतर क्षमता का हित॥

गहन देखभाल की आवश्यकता के कारण बागवानी,
कृषक महिलाएँ अति कुशलता से सकती हैं संभाल।
रसोई उद्यान की स्थापना, पुष्पों, सब्जी तथा फलों के
बाग जैसी विभिन्न गतिविधियाँ भी वे लेती हैं संभाल॥

गुजरात की आदिवासी महिलाएं खुशी से दे रही हैं
आम और काजू तथा अंगूर की नर्सरी को बढ़ावा।
हजारों पौधे उगाने में सक्षम होने से महिला समूह
अपनी आय में कर रहे प्रति वर्ष हजारों रुपए का बढ़ावा॥

ग्रामीण विकास में कृषिरत महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान-II

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

महिलाओं के कारण ही बाजार में पचास प्रतिशत कीमत
पर गुणवत्तापूर्ण ग्राफ्ट सुगमता से उपलब्ध हो रहे हैं आज।
उनकी मेहनत से हजारों हेक्टेयर सीमांत तथा बंजर भूमि
को बागों के अंतर्गत लाकर गरीबी से मुक्त हुए आज॥

नीम, अनार, महुआ जैसे तिलहनों के संग्रह के क्षेत्र
में भी ग्रामीण महिलाएं निभाती हैं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका।
करोड़ों रुपये के मूल्य के नीम के बीज खेतों में बरबाद होने
से रोकने में रहती है महिलाओं की खास भूमिका॥

उपयोग एवं मूल्य के बारे में जागरूकता की कमी तथा
प्रसंस्करण और विपणन हेतु हैं उपलब्ध अपर्याप्त सुविधाएं।
उपरोक्त समस्याओं के निदान से ग्रामीण महिलाओं को
अतिरिक्त आय हेतु यह अंशकालिक काम बहुत ही भाए॥

खाद्य प्रसंस्करण ऐसा क्षेत्र है जो कृषि उत्पाद की बर्बादी को
कम करने व उपज के मूल्यवर्धन में होता मददगार।
खाद्य प्रसंस्करण ग्रामीण महिलाओं द्वारा की जाने वाली है
ऐसी गतिविधि, जिसे वे करती पूरे मन से स्वीकार॥

खाद्य प्रसंस्करण स्वदेशी तकनीक है जिससे स्थानीय
महिलाएं भली भांति परिचित हैं यह अर्थव्यवस्था का है आधार।
खाद्य प्रसंस्करण में निवेश बहुत कम होता है तथा
ग्रामीण एवं शहरी दोनों ही क्षेत्रों में इसका बाजार है तैयार॥

कृषि तथा कृषि-व्यवसाय में महिलाओं के योगदान को
बढ़ाने के लिए उनकी क्षमता में करना ही होगा सुधार।
कौशल विकास ही होगा श्रमिकों के शारीरिक श्रम के
समय को कम करने तथा काम की गुणवत्ता में मददगार॥

उत्पादन गतिविधियों में ग्रामीण महिलाओं को सम्मिलित
करके खाद्य पदार्थों को बर्बाद होने से अवश्य ही बचाएं।
सोचकर करें कुछ ऐसा, जिससे उत्पाद के मूल्यवर्धन होने के
साथ ही उनकी विपणन लागत भी अवश्य घटाएँ॥

संरक्षण कृषि और टिकाऊ कृषि अपनाने में भी ग्रामीण
किसान महिलाएं अत्यंत महत्वपूर्ण अपना सहयोग हैं देती।
टिकाऊ खेती हेतु गोबर की खाद, कम्पोस्ट, वर्मीकम्पोस्ट,
हरी खाद तथा जैव उर्वरकों का उत्पादन भी हैं करती॥

भारत में गत कुछ वर्षो से विभिन्न स्वयंसेवी संगठन
ग्रामीण महिलाओं का कौशल विकास हैं बखूबी कर रहे।
ये संगठन वनों से वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन हेतु गोबर,
कृषि अपशिष्ट एकत्र करके एक दूजे को प्रोत्साहित हैं कर रहे॥

कई प्रदेशों के पिछड़े क्षेत्रों मे कई संगठन भूमिहीन
महिलाओं को स्वयं सहायता समूह बनाने को हैं कह रहे।
जहाँ कृषि अपशिष्ट की गुणवत्ता केंचुओं को खिलाने हेतु
उपयुक्त नहीं, नाडेप कंपोस्टिंग को वे हैं बढ़ावा दे रहे॥

खाद तथा उर्वरकों के कम प्रयोग वाले क्षेत्र में ऐसी खाद
बनाने की गतिविधियों से उत्पादन भी है स्वतः बढ़ रहा।
कचरे के बेकार पड़े रहने के बजाय खेतों में पुनर्चक्रित
होने से, पर्यावरण प्रदूषण भी अब है अत्यंत कम हो रहा॥

यह देखना दिलचस्प है कि कई क्षेत्रों में महिलाओं ने
पुरुषों की तुलना में खाद उत्पादन में अधिक रुचि दिखाई है।
पूरे देश में दोहराए जा सकने वाले फसल पोषण प्रबंधन
में महिलाओं की भागीदारी ने एक नवीन प्रवृत्ति दर्शाई है॥

पशुपालन एक और महत्वपूर्ण गतिविधि है जिसे ग्रामीण
महिलाएं बहुत कुशलता से भली-भांति संभालती हैं।
महिलाएं पुरुषों की तुलना में डेयरी पशुओं और घरेलू-स्तर
पर मुर्गी पालन को बेहतर तरीके से संभालती हैं॥

एक महिला आसानी से तीन संकर नस्ल की गायों की
देखभाल करके अच्छी ख़ासी आय अर्जित कर सकती है।
वे चारा, प्रजनन, प्रबंधन, स्वास्थ्य देखभाल और हरे चारे के
उत्पादन सहित पशु विपणन जैसे कई कार्य करती हैं॥

वे गोबर, जलाऊ लकड़ी, शहद आदि एकत्रित करने जैसी
विभिन्न आय पैदा करने वाली गतिविधियाँ भी करती हैं।
देखा गया है डेयरी के प्रबंधन में पुरुषों के मुकाबले महिलाएँ
अधिक रुचि सहित अधिक संख्या में संलग्न रहती हैं॥

दूध के संग्रह हेतु गाँव के स्तर पर डेयरी सहकारी समितियाँ
बनाकर महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
पशुओं को खिलाना, नवजात-रोगी पशुओं की देखभाल,
दूध निकालना व सफाई जैसे काम बखूबी वे अंजाम देती हैं॥

स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग करके चारा व
चारा मिश्रण महिलाएं ही पशुओं को प्रदान करती हैं।
पशुधन प्रबंधन में अधिक भागीदारी होने से आदिवासी
महिलाएं भी उत्पादन गतिविधियां ठीक से निभाती हैं॥

ग्रामीण कृषक महिलाएं जहां विभिन्न फसलों की बुवाई से
लेकर कटाई तक के विभिन्न काम बखूबी करती हैं।
मैनुअल श्रम को कम करने व उपज बढ़ाने हेतु विभिन्न
नवीन तकनीकें भी अब बखूबी उपयोग करती हैं॥

जुताई, निराई, रोपण, अंत:खेती, कीट-नियंत्रण, कटाई,
थ्रेशिंग, अनाज सुखाने जैसे कार्य महिलाएं ही थी करती।
पर वर्तमान में उपरोक्त सभी कार्यों को वे नवीन विकसित
कृषि उपकरणों तथा यंत्रों की सहायता से भी हैं करती॥

अधिकांश पुरुषों को ही उन्नत प्रौद्योगिकी का प्रशिक्षण
लेने तथा इष्टतम उपयोग करने का मौका मिलता है।
जबकि आज भी महिलाओं को सुप्रशिक्षित पुरुष
उपयोगकर्ताओं से ही कुछ नया सीखने को मजबूर होना पड़ता है॥

कई समाज महिलाओं को मशीनों अथवा मोटरचालित
यंत्रों व औजारों को चलाने में दक्ष नहीं मानते हैं।
महिलाओं को प्रशिक्षण में भाग लेने के लिए समान
मौका देने से वे भी दक्ष होंगी, कुछ लोग नहीं मानते हैं॥

महिलाओं को भी सभी मशीनों एवं उपकरणों का
उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
वैज्ञानिकों को महिलाओं द्वारा सुगमता से संचालित
होने वाले यंत्र डिजाइन करने हेतु उन्मुख करना चाहिए॥

जैसे जैसे कृषि क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं की उन्नत
तकनीकों का उपयोग करने की क्षमता बढ़ेगी।
खाद्य उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ, खेती की गतिविधियों
पर उनके तनाव और समय में निश्चित ही कमी आएगी॥

उचित चरणों में कृषि-रसायनों के विवेकपूर्ण और
उचित उपयोग में किसान महिलाएं जो प्रशिक्षित होंगी।
तो उत्पादन लागत में कमी तथा पैदावार में वृद्धि के
साथ-साथ पर्यावरण प्रदूषण में भी निश्चित ही कमी आएगी॥

शोध संस्थानों व कृषि विश्वविद्यालयों में विकसित उन्नत
प्रौद्योगिकी को अपनाने वालों पर पड़ता सार्थक प्रभाव है।
आज भी महिलाओं को नई कृषि व पशुधन प्रौद्योगिकियों
के लाभों के बारे में नवीनतम जानकारी का अभाव है॥



ग्रामीण विकास में कृषिरत महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान-III

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ग्रामीण महिलाओं की आय बढ़ाने हेतु गाँव स्तर पर पशुपालन
विस्तार नेटवर्क विकसित करना भी है आवश्यक ।
पशुधन उद्यमों से उत्पादन तथा आय बढ़ाने हेतु किसान
महिलाओं के गहन प्रशिक्षण देना भी एक प्रयास है सार्थक ॥

घर से बाहर न जाना पड़े अतः उनके गाँवों में ही महिलाओं
के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए ।
कृषिरत महिलाओं व विस्तार एजेंसियों के बीच नियमित
संपर्क होने से उनके मध्य उचित समन्वयन होना चाहिए ॥

गांवों में ही दिया गया प्रशिक्षण खेतिहर महिलाओं के ज्ञान
और कौशल को बढ़ाने में निश्चित मदद करेगा ।
महिलाओं को भी एक समूह के रूप में एक साथ लाने से
बदले में सभी में आत्मविश्वास अवश्य भरेगा ॥

ग्रामीण महिलाओं में आज तो मौजूदा कौशल तथा वांछित
कौशल के मध्य का अंतर है बहुत अधिक बढ़ गया ।
इस अंतर को कम करने हेतु भारत में 1966-67 से
किसान प्रशिक्षण और शिक्षा कार्यक्रम था शुरू किया गया ॥

किसान प्रशिक्षण और शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत बड़ी
संख्या में किसान प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना थी की गई ।
कृषिरत महिलाओं के गहन प्रशिक्षण हेतु हर किसान
प्रशिक्षण केंद्र में एक प्रदर्शक की नियुक्ति भी थी की गई ॥

भारत में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने प्रथम
कृषि विज्ञान केंद्र 1974 में पॉण्डिचेरी में किया था स्थापित ।
आज 731 कृषि विज्ञान केंद्र देश के विभिन्न राज्यों के
विभिन्न जनपदों में कृषि विकास हेतु हैं समर्पित ॥

कौशल उन्नयन, ज्ञान में वृद्धि, दृष्टिकोणों के आदान-प्रदान
एवं परिवर्तन हेतु सभी केंद्र हैं इस देश को अर्पित ।
कृषि विज्ञान केंद्र प्रति वर्ष हजारों महिलाओं व ग्रामीण
बालिकाओं को नवीन ज्ञान देकर करते हैं प्रशिक्षित ॥

प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र प्रति वर्ष चार दिसंबर को
कृषि में महिला दिवस का करता है भव्य आयोजन ।
जिसमें हजारों महिलाएं प्रशिक्षण प्राप्त करके सफल
करती हैं नवीनतम प्रौद्योगिकियों के ज्ञान का प्रयोजन ॥

भा.कृ.अनु.प. ने 1996 में भुवनेश्वर में कृषि में महिलाओं पर
एक राष्ट्रीय अनुसंधान केंद्र की की थी स्थापना ।
आज लोकप्रिय है यही संस्थान भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय
कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर के नाम से जाता जाना ॥

कठिन परिश्रम को कम करने हेतु उपयुक्त प्रौद्योगिकियों के
विकास करने के लक्ष्य से बनाया गया है यह संस्थान ।
कृषि एवं संबंधित गतिविधियों में प्रशिक्षण और विस्तार
गतिविधियों का संचालन करता है ये संस्थान ॥

दस्तावेजीकरण तथा जरूरी डाटाबेस तैयार कर कृषि में
महिलाओं की समस्याओं तथा जरूरतों की करता है पहचान ।
प्रौद्योगिकी और महिलाओं की भागीदारी आदि के प्रभाव का
अध्ययन भी करता है देश का यह अनोखा संस्थान ॥

कृषि और उससे जुड़ी गतिविधियों में ग्रामीण कृषिरत
महिलाओं की भागीदारी का अति महत्वपूर्ण स्थान है ।
भौगोलिक स्थिति और समय अवधि के बावजूद, महिलाएँ
कृषि क्षेत्र की श्रम शक्ति में देती अनमोल योगदान हैं ॥

भारत के सभी राज्यों के गांवों में भूमिहीनता बढ़ने से
महिला कृषि मज़दूरों की संख्या में तेजी से बढ़ावा है हो रहा।
कृषि विकास तथा सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति कृषि
क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी प्रभावित है कर रहा ॥

महिलाएँ आमतौर पर कृषि क्षेत्र में गैर मशीनीकृत
अथवा न्यूनतम मशीनीकृत कामों पर ही रहती हैं निर्भर।
कृषि में महिलाओं की भागीदारी का परिमाण कृषि से
संबंधित उद्यमों के प्रकार पर ही रहता है निर्भर ॥

ग्रामीण क्षेत्रों में कृषक एवं खेतिहर महिलाओं के
समग्र विकास को प्राप्त करने की रणनीति है बनानी।
ग्रामीण महिलाओं की औपचारिक/अनौपचारिक
शिक्षा के साथ कृषि के प्रशिक्षण में भागीदारी बढ़ानी ॥

हमें गाँवों में ग्रामीण महिला मंडलों, ग्रामीण महिला टेलीविजन
मंचों, जन अभियान आदि का बड़ा संगठन बनाना है।
सभी खेतिहर महिलाओं के बीच आपसी संबंधों का
उपयोग करके उन्हें योजनाबद्ध परिवर्तन अपनाने हेतु मनाना है॥

रणनीति के साथ महिला सशक्तिकरण के लिए
महिलाओं हेतु नियोजित विकास कार्यक्रमों को चलाना है।
731 कृषि विज्ञान केन्द्रों को भुवनेश्वर स्थित भाकृअनुप-केंद्रीय
कृषिरत महिला संस्थान, से ठीक से जोड़ना है॥

ग्रामीण संस्थाओं तथा सभी विकास कार्यक्रमों में ग्रामीण
कृषिरत महिलाओं को सशक्त भागीदारी दिलानी है।
समाज को फिल्म शो, पोस्टर, कक्षाएं व चर्चाओं के
माध्यम से विकास में महिलाओं को उनकी भूमिका बतानी है॥

ग्रामीण क्षेत्रों में वरिष्ठ नागरिकों को भी ग्रामीण महिलाओं
के सशक्तिकरण के बारे में सुशिक्षित करना है।
ग्रामीण बालिकाओं हेतु अनिवार्य शिक्षा तथा ग्रामीण
महिलाओं हेतु कार्यात्मक साक्षरता भी सुनिश्चित करना है॥

गहन जनसंचार माध्यमों तथा वयस्क शिक्षा द्वारा ग्रामीण
सामाजिक व्यवस्था का आधुनिकीकरण करना है।
ग्रामीण महिलाओं पर लगाए गए सामाजिक और
सांस्कृतिक मूल्यों को शीघ्र ही अत्यंत उदार भी बनाना है॥

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला समूहों को एकीकृत करके
देश में ग्रामीण महिला मंडलों का नेटवर्क बनाना है।
परिवर्तन एजेंटों की मदद से गांवों के विकास हेतु
महिलाओं का एक स्वैच्छिक आंदोलन चलाना है॥

ग्रामीण महिलाओं के लिए डिज़ाइन किए गए गरीबी
उन्मूलन कार्यक्रमों का सफल कार्यान्वयन भी कराना है।
सहकारी परियोजनाओं का विकास जैसे कि रसोई हेतु
बागवानी, मुर्गी व मधुमक्खी पालन भी करवाना है।
हस्तशिल्प, बुनाई, कढ़ाई व सिलाई सिखाना, किराना
दुकानें खुलवाकर महिलाओं की भी आय बढ़ाना है॥

हितधारकों के हितों हेतु राज्य कृषि विभाग में महिला विस्तार सेवा कैडर का नया कैडर निर्माण करना होगा। कृषि में महिलाओं की आवश्यकताओं और समस्याओं की पहचान और उनका दस्तावेजीकरण भी करना होगा॥

इसके तदनुसार नई या मौजूदा चल रही परियोजनाओं व कार्यक्रमों को विशेष डिजाइन कर परिष्कृत करना होगा। कृषि में ग्रामीण कृषक महिलाओं के लिए पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा शीघ्र ही देना होगा॥

कृषि में कृषक महिलाओं द्वारा किए जाने वाले आमदनी सृजन उद्यमों को प्रोत्साहित भी करना ही होगा। कृषि में अन्य ग्रामीण महिलाओं के बीच मनोबल बढ़ाने और अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना होगा॥

महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए सफलता की कहानियों तथा केस स्टडीज को प्रसारित करना होगा। महिलाओं द्वारा विशेष औजारों व यंत्रों से कार्य करने के दक्षता बढ़ाने हेतु उनको उचित प्रशिक्षण भी देना ही होगा॥

सपनों की खोज में गांव की रानी

श्री वी. गणेश कुमार

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, भा.कृ.अनु.प. -राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर

भोर की कोमल किरणों में, खेत जब जाग उठते हैं,
सपनों को संजोये हुए, तभी वो सूरज के साथ उठती है,
जहां हरी-भरी फैसलें लहराती है, नदी की ताकत से,
नंगे पांव उस धरती पर, वो अपनी राह खोजती है।

ओ गांव की रानी, जीवन की रोशनी,
सुबह की चुप्पी में तू, फूल सी खिलती है,
सुबह से लेकर साँझ की नर्म चमक तक,
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है...

मिट्टी की मृदुल लय में, उसके पांव नाचते हैं,
वो हवा को गाती है, और दिल की धड़कन को सुनती है,
पसीने और आंसुओं के बीच, फसल की सुनहरी रोशनी में,
वो बीजों में जीवन की उम्मीद बोती है।

ओ गांव की रानी, जीवन की रोशनी,
सुबह की चुप्पी में तू, फूल सी खिलती है,
सुबह से लेकर साँझ की नर्म चमक तक,
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है...

पीपल की छांव, वो अपने परिवार की कहानियां सुनाती है,
आग की गर्मी में वो दिल की गहराई से बातें करती है,
अपनी संघर्षपूर्ण पुरानी कहानियों से,
वो हर राह में, जीवन के संकेत खोजती है।

ओ गांव की रानी, जीवन की रोशनी,
सुबह की चुप्पी में तू, फूल सी खिलती है,
सुबह से लेकर साँझ की नर्म चमक तक,
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है...

वो प्रकृति की संतान है,
जो बारिश में खेतों में खिल-खिलाती है,
लेकिन उसकी मुस्कान में दर्द है,
और उसके आंसू में आस है।

ओ गांव की रानी, जीवन की रोशनी,
सुबह की चुप्पी में तू, फूल सी खिलती है,
सुबह से लेकर साँझ की नर्म चमक तक,
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है...

शाम की सुकून भरी ठंडक में, सितारों की चादर के नीचे
वो उम्मीद की चादर बुनती है,
साल दर साल, नरम हाथों से और गहरी नजरों से,
वो अंधेरों में भी भविष्य की रोशनी देखती है।

ओ गांव की रानी, जीवन की रोशनी,
सुबह की चुप्पी में तू, फूल सी खिलती है,
सुबह से लेकर साँझ की नर्म चमक तक,
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है...

वो अथाह ताकात और असीम धैर्य की मूरत है,
हर सुबह की चुप्पी और हर रात की रोशनी में,
जो परिवार को साथ ले जाती है,
लेकिन अपने सपनों को पीछे छोड़ देती है

ओ गांव की रानी, जीवन की रोशनी,
सुबह की चुप्पी में तू, फूल सी खिलती है,
सुबह से लेकर साँझ की नर्म चमक तक,
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है।...

वो सजीव सपने की आत्मा है वो ही उसकी पहचान है,
उनकी कहानी सुनो, उनके सपनों को जानो,
वो ग्रामीण भारत की जान हैं, वह असली शक्ति हैं,
वो आशा है, वो इस जीवनधार की स्रोत है।
तू हर सपने की धड़कन है, तू ही उसकी जान है।...



पुण्य भूमि में कृषिका

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

उत्कल धरती धरा प्रतिष्ठित,
हरित कृषि हर बाली है।
फलती हर कृषिका की मेहनत,
सुरक्षित खेत हर प्राणी है।

श्री जन्ननाथ की भूमि कुशल गढ़
श्री जन्ननाथ की भूमि पुरी की,
करे रक्षा हर पूर्णित हर घर।
बहन सुभद्रा आशीष हैं देती,
मन लक्ष्मी की जय धन है।

बलराम ज्येष्ठ की रक्षा सर्व को,
जय कान्हा की, शुभ दृष्टि है।
मनवांछित पूरण सब कर्मो का,
शुभ फल सदा सुरक्षित है।



कृषि-का का पूजन अर्पण सब,
सुखशांति शुभेच्छा हरित प्रदेशम।
पटनायक ने सीचा जिसको,
फलफूलित करते मोहन सबको।

तुलसी लेती चरण कमल रज,
कमल गले का हार सुसज्जित।
दाल भात की श्रेष्ठता को,
सिद्ध करें हर अक्षत-अक्षत।

संकल्प श्रेष्ठतम, हर स्वांस पवित्रम,
कृति विशेष हर प्राणी की।
श्रेष्ठ धरम है, पुण्य भूमि का,
फलित शुभम है, है हर संकल्पम।

कृषिका का सन्देश सर्व को,
हरित प्रदेशम शुभ संकल्पम।
परिक्रमा की महिमा श्रेष्ठतम,
महावीर मन करें पुनीतम।

हरित कृषि है, हर मन हर्षित है,
फलता हर कृषिका का परिश्रम।
फलफूलित करते माझी सबको,
कान्हा की दृष्टि हम पर है।

कृषिका चिंतन अब ना मत कर,
कृषिका का खेत सुरक्षित है।
माझी मोहन मोहित सब पर,
कान्हा की, शुभ दृष्टि है।

श्री जन्ननाथ की भूमि कुशल गढ़, मन लक्ष्मी की जय धन है। ...

महिला किसान – होना नहीं आसान-I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

भारतीय समाज में सदा से रहा है
नारी का अति गौरवपूर्ण स्थान।
कृषि में कार्य करने वाली नारी
ही कहलाती है महिला किसान॥

नारियों को भी पुरुषों के समान ही
अधिकार देता है देश का संविधान।
सशक्त बने बिना कोई नारी कर
नहीं सकती कोई कार्य महान॥

समाज के महिला विरोधी लोगों
को हमें करना ही पड़ेगा रुष्ट।
तभी समाज में व्याप्त कुरीतियों
व बुराइयों को कर सकेंगे हम नष्ट॥

बुराइयाँ जैसे लैंगिक भेदभाव, अशिक्षा,
यौन हिंसा, बलात्कार व दहेज।
आवश्यक है कि हम इनको
रोकने में कभी न करें परहेज॥

नारी की भूमिका सदा ही अहम रहे,
बन सकेगा तभी भारत देश सशक्त।
नारी उत्थान के साथ ही होगा पूरा
समाज जागरूक तथा सशक्त॥

माँ के रूप में होती है हर नारी,
एक शिशु की प्रथम गुरु नारी।
अतः कर्तव्य हमारा है यह माँ का
शिक्षक समक्ष सम्मान है बहुत जरूरी॥

प्राचीनकाल से भारत में नारी को
मिला सदा से ही एक अहम स्थान।
हमारे धार्मिक ग्रन्थों में भी नारी को
देवी सदृश्य पूजनीय गया है मान॥

धर्मग्रंथ कहते हैं नारी के सम्मान के
स्थान पर देवता करते सदा निवास।
वह स्थान स्वर्ग से भी अति सुंदर,
जहां कोई भी नारी करे प्रवास॥

कोई भी सभ्य समाज तब तक नहीं
अलाप सकता प्रगति का राग।
जब तक वह नहीं करेगा नारी
के प्रति भेदभाव का त्याग॥

नारी सशक्तिकरण का अर्थ वह समर्थ
हो कि निर्णय वह अपने स्वयं करे।
अपनी मंजिल को पाने में
नारी कभी किसी से भी न डरे॥

भारत में नारी का पतन आरंभ
हुआ समय के बदलाव के साथ।
स्त्रियों की आजादी छीनकर,
कर दिया गया उनको अनाथ॥

शिक्षा प्राप्त करने के उनके मूल
अधिकार को भी कर दिया समाप्त।
अशक्त कर दिया छीनकर उनके
अधिकार सभी जो उसको थे प्राप्त॥

देश स्वतंत्र होने के उपरांत ही,
नारी ने अपने स्वरूप को पहचाना।
बेचैन हो उठी कैसे अपने गौरव
व अस्तित्व को है फिर पाना॥

शिक्षित होकर अपनी बेड़ियाँ काटी,
जिसमें अब तक थी वह असमर्थ।
पुरुष सहित कंधा से कंधा मिलाकर
चलने में अब हो गई समर्थ॥

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए
आज हो रहे है विभिन्न प्रयास।
महिलाओं के 33% आरक्षण मिलने
से जागी है उनमें एक नई आस॥

कृषि क्षेत्र ही हमारे देश की अर्थव्यवस्था
में करे अति महत्वपूर्ण योगदान।
भारतीय कृषि की रीढ़ ही हैं होते,
पुरुष एवं महिला किसान॥

जीडीपी में कृषि करे लगभग अठ्ठारह
प्रतिशत तक का योगदान।
करे सूती वस्त्र, चीनी तथा जूट जैसे
कई उद्योगों को कच्चा माल प्रदान॥

देश की 140 करोड़ की जनसंख्या,
देश की कृषि से ही भोजन पाए।
भारत के करोड़ों पशु-पक्षी भी कृषि से
ही अपना आहार व चारा हैं पाएं॥

भारतीय किसान अपना जीवन
अत्यंत साधारण तरीके से है जीता।
कड़ी धूप, तेज तूफान, वर्षा में
भी वह है अपने आँसू पीता।

देश के अमीर-गरीब लोग, पुरुष व
महिला किसानों पर ही रहते निर्भर।
कृषकों के अनाज नहीं उगाने से भूख
से जाएंगे सब मानव व पशु मर॥

कर्ज में ही जन्म लेता किसान,
मरने पर भी उसके रहता है कर्जा।
अन्न उपजाने के कारण अन्नदाता
तथा भगवान का वह है पाता दर्जा॥

किसी भी फसल के उत्पादन में
काफी श्रम की आवश्यकता है होए।
बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएं
कृषिगत गतिविधियों में शामिल होएँ॥

कृषि में कार्य करने वाली नारी ही कहलाती है महिला किसान।



महिला किसान – होना नहीं आसान-II

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

भारतीय समाज में सदा से रहा है
नारी का अति गौरवपूर्ण स्थान।
कृषि में कार्य करने वाली नारी
ही कहलाती है महिला किसान।

ग्रामीण भारत में 77 प्रतिशत
महिलाएं रहती कृषि पर ही हैं निर्भर।
इनमें से 33 प्रतिशत किसान हैं
तथा 47 प्रतिशत हैं खेतिहर मजदूर॥

कपास उगाएँ 46.8 प्रतिशत तथा
47 प्रतिशत सेवा करती हैं चाय बागान।
सब्जी उगाएँ 39.1 प्रतिशत, 45.4
प्रतिशत महिलाएं उगाएँ तिलहन॥

बड़ी संख्या में काम करने पर भी
अपने अधिकारों से रहती हैं वंचित।
कार्य करने पर भी पुरुष समान
वेतन तक नहीं पाती किंचित॥

स्थानीय किसान संगठनों में वे
प्रतिनिधित्व तक ही हैं नहीं पाती।
छोटे बच्चों तक को वे साथ
लेकर खेतों में हैं काम पर जाती॥

सशक्तिकरण की कमी से उनके
बच्चे शिक्षा तक नहीं हैं पा पाते।
खराब स्वास्थ्य की समस्याओं से
भी बच्चे जल्दी नहीं उबर पाते॥

पुरुषों की भांति महिला कृषकों को
कृषि ऋण की सुविधा नहीं मिलती।
न उनकी फसल का बीमा होता,
न आपदा में वे मुआवजा ही पाती॥

कृषि सम्बद्ध क्षेत्रों में संलग्न रहने से
स्त्रियाँ कहलाती है महिला किसान।
नाम पर भूमि के दस्तावेज़ न होने
पर भी कहलाती हैं वही किसान॥

86 प्रतिशत कृषि भूमि पुरुष सदस्यों
को मिली है विरासत से देश में।
केवल 14 प्रतिशत ही भूमि महिलाओं
के नाम पर है अपने देश में॥

देश की 60 में से 40 करोड़
महिलाएं कृषि को ही हैं अपनाती।
फिर भी किसान के रूप में पहचान
तथा अधिकार नहीं हैं वे पाती॥

फसल उत्पादन, पशुपालन, मत्स्य पालन
तथा वानिकी भी हैं वे अपनाती।
कृषि प्रसंस्करण तथा कृषि व्यवसाय
भी हैं उनको बहुत अधिक भाती॥

खेत की जुताई, बीज के बोने-रोपने,
खाद-उर्वरक देने जैसे विभिन्न काम।
महिलाएं ही कटाई, मड़ाई, सफाई
तथा भंडारण जैसे करती हैं काम॥

65 प्रतिशत महिलाएं कृषि पर ही निर्भर,
चाहे किसान हों या हों श्रमिक।
कभी होती खेतिहर मजदूर, पशुधन श्रमिक,
प्रवासी या कभी वन श्रमिक॥

खेतों के बँटवारे से कृषि योग्य भूमि
लगातार ही है कम हो रही।
इससे महिलाओं के रोजगार में
होती कमी है स्पष्ट नजर आ रही॥

एक तरफ कृषि क्षेत्र में निवेश की
कमी से समस्याएँ हैं नित्य बढ़ रहीं।
मशीनों के प्रयोग से भी महिला श्रमिकों
की संख्या है लगातार घट रही॥

एग्रीबिजनेस वैल्यू चेन में प्रतिबंध
से उनकी भागीदारी प्रभावित है होती।
वैल्यू चेन में पुरुषों की तुलना
में महिलाएं अधिक शामिल होती॥

बिक्री के लिए महिलाएं होती हैं
क्षेत्रीय या विदेशी बाजार से अंजान।
स्थानीय बाजार में अपने उत्पाद बेचने
से होता उनको है भारी नुकसान॥

क्योंकि महिलाओं को परिवहन व
विपणन चेन से बाहर रखा गया है।
अतः उनको इस सबसे लाभदायक
हिस्से का कोई लाभ नहीं हुआ है॥

सूचना एवं नेटवर्क का एक्सेस न होना
भी उनके सामने होती है बाधा।
उपरोक्त कारणों से महिला किसानों का
आर्थिक लाभ रह जाता है आधा॥

सार्वजनिक स्थानों पर उत्पीड़न जैसे
मामले भी करते उनको कमजोर।
शौचालय व अपनी सुरक्षा व्यवस्था
तक पर नहीं होता है उनका ज़ोर॥

सप्लाई चेन में महिलाओं के लिए
डायरेक्ट लिंक क्रिएट से मिलेगा लाभ।
संपत्ति पर नियंत्रण होने तथा कारोबार
बढ़ने से मिलेगा सुनिश्चित लाभ॥

महिला किसान अपनी कड़ी मेहनत
के लिए होती सम्मान की हकदार।
**उनके प्रयासों को समझ सराहना
करिए, वे ही हैं हमारे जीवन का
आधार॥**

कृषिका

डॉ. सोमा श्रीवास्तव एवं डॉ. डी कुमार

प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प. -केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसन्धान संस्थान, जोधपुर, राजस्थान

आमजन जीत पूजती, मैं हार पूजती,
सभी सुख मांगते, मैं दुःख मांगती।
मुझे भोग नहीं, परिपक्व ज्ञान चाहिए।

दुःख विपत्तियाँ उगलते, विपत्तियाँ धैर्य उगलती
विपत्तियाँ तत्परता सिखाती, चुनौतियों को हराती।

शूल फूल लगता, अँधियारा उजियारा लगता
विपत्तियों ने बनाया, कठोर पत्थर मुझे,
न थकने वाली, जैविक मशीन बनाया।

मुझे आराम नहीं, निरंतर कष्ट चाहिए,
शहरी जीवन नहीं, ग्रामीण जीवन चाहिए।

कृषक की मेहनत, उसका पसीना चाहिए,
उसकी निष्ठा चाहिए, राष्ट्र प्रेम चाहिए।
ग्रामीण परिवेश चाहिए, खुला आकाश चाहिए,

धधकते अंगारे चाहिए, सियाचिन बर्फ चाहिए,
पशु पक्षी चाहिये, चहक महक चाहिये,

है गुजारिश एक मेरी ऊपर वाले से।
अगले जन्म में, किसान बनाओ मुझे,
किसान, मेरी तरह, कृषि वैज्ञानिक बनें।

मैं खलियान में, कृषक प्रयोगशाला में,
मिल दोनों अपना, ऐच्छिक कर्म संभाले।

कृषि, किसानी, विज्ञान, वैज्ञानिकी मिल जायें,
सब देख हर्षायेँ, समृद्धि बरसने लगे चारों ओर।

जय किसान भारती

गीता साहा

तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

हरा भरा रंग रंगीला,
हरियाली ले भरपूर देश हमारा।
सबसे प्यारा सबसे न्यारा,
साज सजीला हिन्दोस्ता हमारा॥

जो हमें खिलाती है,
प्यास हमारी बुझाती है।
हरियाली की छावं है,
हमें सुकून भरी राहत देती है॥

स्निग्ध पवन उत्साह जगाती है,
हर ऋतु में हमें अलग ऊर्जा देती है।
ऊर्जा के स्रोत में हँसी खुशी से,
अपना कार्य करते हैं॥

ऋतु अनुसार फल-सब्जी,
हमें भरपूर देती है।
ग्रीष्म ऋतु में रसीले फल और सब्जी,
उगाने की तैयारी करती है।

छम-छम वर्षा, नाचते गाते आती है,
सभी के मन में उमंग लाती है।
बैल लेकर खेत जोतने में,
सभी व्यस्त हो जाते हैं॥
चारो तरफ धान की हरियाली,

खुशी के उमंग भरती है।
फिर सुनहरे धान की चमक,
आँखो को आकर्षित करती है॥

एक फसल कांटने के बाद महिलाएं,
दूसरी फसल की तैयार करती हैं।
शरत ऋतु में नयी फसल कांटनेकी,
उमंग मन में खुशीयाँ भरती है॥

घर-घर में धान की चमक में,
माँ लक्ष्मी को नमन करते हैं।
अपना घर सदा धन-धान्य से,
भरा रहे, यही प्रार्थना करती हैं॥

कटे फसल अनाज को सुखाकर,
सुरक्षित भंडारण करके,
अपने को सुरक्षित मानती है।
थके हारे में कोयल के गीत,
सभी की थकान मिटाते हैं॥

हँसते-खिलते हेमंत दस्तक देती है,
प्रकृति के साज-सज्जा में महिलाएं तैयारी करती हैं।
आगमन खुशी के गीत माँ दुर्गा के आने की आहट देती है,
माँ दुर्गा के पावन त्यौहार के लिए, सब तैयारी करते हैं॥

माँ दुर्गा को अपनी बेटी जगतजन मानते हैं।
इसलिए हमारे देश में बेटी को, आदर सम्मान मिलती है।
शीत ऋतु में चारो तरफ हरियाली सुनहरी फिर छा जाती है,
फल-फूल अनाज-सब्जी खुशीयों से लहराती है॥

लाल-पीले हरे-नीले रंग से,
धरा रंगीनमय हो जाती है।
प्राकृतिक रंगों से हम सबके मन,
रंगीनमय हो जाते हैं॥

यही रंग हमारे जीवन में,
हर पथ को रंगीन बनाते हैं।
यह उल्लास व्यस्त सभी के,
मन में आहट देते हैं॥

हँसते-खेलते बंसत आगमन करता है,
सरसों की सुनहरी फसल लहराते, देख मन नाचने लगते हैं।
फिर पथझर में प्रकृति अलग रूप लाती है,
प्रकृति को फिर से हरा-भरा देखने की आश, मन में अंकुरित होती है।

जब पेड़-पौधे के शाख में
नयी पत्तियाँ सजती हैं।
नयी पत्तियों को देख कर
मन में नयी उमंग भरती है॥

नये कार्य, नयी आशा,
नयी सोच जीवन को सजाती है।
प्रकृति के इस सुन्दर बदलते नियम से,
हमें सोचने के लिए, खुद को अच्छा बनाने के लिए,
बदलने के लिए, सारा संघर्ष करना है, यही शिक्षा देती है॥

हम प्रकृति के रंगीनमय बदलाव से
गर्व महसूस करते हैं।
गर्व से मन में एक सुर में,
सुर गूंजते हैं... जय माँ भारती, जय किसान भारती,
जय-जय महिला किसान भारती.....

ग्रामीण महिला कृषकों का सशक्तिकरण

[1]**ओम प्रकाश, पल्लवी यादव**[2]एवं **अरोमा सिंह**[3]

[1]भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

[2]एस.एन. सेफ क्रॉप साइन्सेज, इंदौर

[3]आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या

महिला सशक्तिकरण का अर्थ
महिलाओं में ऐसी क्षमता पैदा करना
जिससे समाज में उनको
प्राप्त हो सके उचित स्थान।

इसका अर्थ महिलाओं की
आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक
या आर्थिक शक्ति में वृद्धि होने से
बढ़े उनका मान-सम्मान॥

इसका मूल मंत्र है उनमें पारिवारिक
बंधनों से मुक्त होकर अपने
और अपने देश के विषय में
सोचने की क्षमता का पूर्ण विकास।

इससे वे बनती हैं शक्तिशाली जिससे
वे अपने जीवन से जुड़े हर फैसले
स्वयं लेकर कर सकती हैं
अपनी क्षमता का विकास॥

सशक्त महिला सशक्त समाज की
पूरक होने के कारण दोनों की
उचित सहभागिता से ही संभव
है देश का चहुमुखी विकास।

समाज में उनकी सामाजिक, शैक्षणिक,
राजनैतिक व आर्थिक स्थिति
में सुधार के लिए उनके
सिर पर भी हो खुला आकाश ॥

महिला सशक्तिकरण करने का
उद्देश्य समाज में महिलाओं को
पुरुष के समान अधिकार, मान
सम्मान एवं रोजगार के अवसर।

तभी महिलाएं प्राचीन काल से
जकड़ी हुई बहुत सारी सामाजिक,
आर्थिक, राजनैतिक तथा
शैक्षणिक बेड़ियों से पाएँगी उबर ॥

सम्पूर्ण विश्व में कृषि में महिलाएं
भागीदारी करती हैं, केवल कृषि क्षेत्र
में ग्रामीण महिलाओं का रहता
है अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान।

विश्व भर में ग्रामीण महिलाएं कृषि
क्षेत्र में पचास प्रतिशत से अधिक
का योगदान देती हैं अतः
जरूरी है समाज उन पर दे ध्यान ॥

खाद्य एवं कृषि संगठन के आंकड़ों
के अनुसार कृषि क्षेत्र के कुल
श्रम में महिलाएं देती हैं तिरालिस
प्रतिशत का योगदान।

इतना ही नहीं, कुछ अत्यंत
विकसित देशों में कृषि क्षेत्र में
महिलाएं देती हैं सत्तर से अस्सी
प्रतिशत तक का अहम योगदान ॥

अतः यह कहना अतिशयोक्ति
नहीं होगी कि पूरे संसार में महिलाओं
की रीढ़ पर टिका है राष्ट्रीय
अर्थव्यवस्थाओं का विकास।

अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को
सम्मान देने हेतु भारत में प्रति वर्ष
15 अक्तूबर को मनाया जाता
है महिला किसान दिवस॥

ईंधन के लिए लकड़ियाँ एकत्रित
करना व पानी पर 5 घंटे व भोजन
की तैयारी पर महिलाएं प्रतिदिन
करती हैं चार घंटे प्रदान।

इसके बावजूद, ग्रामीण महिलाएं
खेती के लिए सर्वाधिक श्रम करती,
बुवाई से लेकर कटाई तक
हर कर्म में देती खास योगदान॥

भारत में केवल 13.98 प्रतिशत
कृषि जोत महिलाओं के नाम पर
होने से उनकी नहीं हैं कृषि में
कोई निर्णायक भूमिका।

महिलाओं के पास भूमि पर अधिकार
न होने से उनका सशक्तिकरण
प्रभावित होने से नहीं रहती
उनकी कोई खास भूमिका॥

गांवों से पुरुषों के पलायन होने के
बाद कृषि कार्य महिलाओं के
हाथ में जाने के बाद भी कृषक
महिलाएं नहीं हैं मालिक।

दस्तावेजों में अपनी ही जमीन पर
मालिकाना हक न होने के कारण
खेती करने पर भी उनका रूप
पुरुष सहायक व श्रमिक॥

कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका
होते हुए भी महिलाओं के सामने
मुंह बाए खड़ी रहती हैं
अनेकों बाधाएँ खास।

कृषि कार्यों में उनकी कोई
पहचान नहीं बन पाती है क्योंकि
अर्थव्यवस्था की बागडोर
रहती हैं पुरुषों के पास॥

महिलाओं के रास्ते में रोड़े
साबित होते हैं उनकी ही
अशिक्षा, अनभिज्ञता,
उदासीनता और अंधविश्वास।

शिक्षा, प्रशिक्षण, सूचना तथा
मनोरंजन के अवसर तक नहीं प्राप्त
होते हैं ग्रामीण कृषक
महिलाओं को कोई खास॥

महिलाओं को सहकारी समितियों
का सदस्य बनाने हेतु अभियान
चलाना चाहिए जिससे वे भी
पाएँ ऋण व तकनीकी मार्गदर्शन।

उनको क्षमता निर्माण हेतु प्रशिक्षण
चाहिए मिलना जिससे
उनकी कुशलता व दक्षता
बढ़ने में न हो कोई भी अड़चन॥

राष्ट्र के विकास हेतु कृषि कार्यों
में जुड़ी ग्रामीण महिला किसानों के
सशक्तिकरण पर जरूरी
है देना विशेष ध्यान।

भारत सरकार की खास स्कीम
'महिला किसान सशक्तिकरण योजना'
लाखों महिला किसानों का
बढ़ा रही है मान-सम्मान॥

भारत के विभिन्न प्रदेशों के
विभिन्न शहरों में कार्यरत 731 केवीके
चला रहे हैं ग्रामीण महिला
किसानों के लिए अनेकों कार्यक्रम।

महिलाओं को स्वावलंबी बनाने
हेतु खेती-बाड़ी, पशुपालन, प्रसंस्करण
व मूल्य संवर्धन पर होते
आयोजित हैं अनेकों कार्यक्रम॥

प्रतिभा की ना सीमा कोई

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

ध्वनि सफलता की गूँजेगी,
ऊंचाई नभ तक पहुंचेगी।
तुम रखना कदम सफलता का,
कदमों को शुभता चूमेगी।

ज्ञान साथ चल ज्ञान अनुसरण,
तकनीकी को पकड़ हमेशा।
उत्पादन में वृद्धिकरण बन
प्रयास करूँ हर प्रयास का।



तकनीकी के हर उदाहरण का,
प्रैक्टिस (अभ्यास) करती शिक्षण सबका।
अनुभव करता है मूल्यवान सब,
है देता हमको ज्ञानवान सब।

हैं केंद्र खुले हैं ज्ञानालय,
विद्यालय हैं और हैं शिक्षालय।
पढ़ती पद्मा, सलमा, रजनी सब,
डिग्री देते हैं सब प्रतिभालय।

प्रतिभा की ना, सीमा कोई,
हो खेत सभी, हो आंगन कोई।
हर ज्ञान वरण, करती कृषिका,
हो विद्यालय या, प्रतिभालय कोई।

उम्र ना देखी, सोची मैंने,
शिक्षा का वरण, किया मैंने।
शिशु का ना साथ, कभी छोड़ा
प्रतिभा का पान, किया मैंने।

भविष्य शिशु का साथ रखूं,
प्रतिभा को लेकर साथ चलूं।
ना छोड़ा शुद्ध विचारों को,
अपना भविष्य भी साथ बुनू।

प्रतिभा की ना, सीमा कोई, हर ज्ञान वरण, करती कृषिका..

नारी और कृषि

मुकुन्द कुमार

तकनीकी अधिकारी , भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसन्धान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

जो जागकर अंधियारी रातों में,
करे कृषि कार्य वह एक नारी है।
भयंकर सर्दी गर्मी तथा बारिश,
सब सह जाती ये वही नारी है॥

कोमल व कमजोर कहने की भूल,
कभी ना करना साथियों इनको।
देश की सुदूर सीमा पर जो सुरक्षा
कर रही, वो भी एक नारी है॥

चीर कर सीना आसमान तक,
बड़े विमान भी उड़ाती नारी है।
गगन में जाकर अन्तरिक्ष की,
विस्तृत जानकारी जुटाती नारी है॥

समस्याओं का कोई अंत ही नहीं है,
इनकी इस जीवन बगिया में।
अपने अदम्य साहस व सूझ-बूझ से,
हल सदा ही निकालती नारी है॥

ऐसे इनको रोको न टोको न,
अपनी मंजिल तक पहुंचेगी ये जरुर।
घर, खेती, खलिहांन और पशुशाला
को भी करती आबाद यह नारी है॥

क्यों रोक रहे हो इनको तुम,
खेती के हर काम में हाथ बटा रही है।
उन्नत खेती की विस्तृत जानकारी देकर,
ड्रोन दीदी कहलाती नारी है॥

और जाड़े वाली रातों मे वो, फल
के बागों तक पर वो पहरा दे रही।
घर आँगन, खेती-खलिहान व
रसोई बगिया को भी चमकाती नारी है॥

निकालो कुछ ऐसा रास्ता, समस्याएँ
ग्रामीण महिलाओं की कुछ सुलझ सकें।
खामोश रहकर ख़ुद से ही लड़ा करती है,
साक्षात शांति स्वरूपा नारी है॥

ऐसे ही नहीं भारत को संसार भर में,
कहा जाता है विभिन्न मसालों का देश।
बीज व गरम मसालों की अनोखी खुशबू चुरा,
अनेक व्यंजन बनाती नारी है॥

उत्पादों के प्रसंस्करण से ही,
कृषि को समृद्ध करती है महिला।
अचार, चटनी, शर्बत, मुरब्बा, आदि,
बनाने में भी माहिर नारी है॥

चिप्स, कचरी, पापड़ जैसे विभिन्न
अन्य मूल्य संवर्धित उत्पाद।
मशरूम उत्पादन तथा पाक
कला में भी होती अव्वल नारी है॥

भेड़, बकरी, गाय, भैंस व मुर्गियों
को भी हैं ये ममता से पालती।
मधुमक्खी, लाख तथा रेशम के,
कीट भी पालती यही नारी है॥

वर्तमान में दूध उत्पादन में भारत
पूरे विश्व मे अग्रणी जाना जाता है।
दूध से पनीर, खोया, घी, मक्खन जैसे,
उत्पाद बनाने में समृद्ध नारी है॥

धान रोपाई हो, दालों की गहाई हो,
या हो चाय की पत्ती तोड़ना।
खेती-बाड़ी के सारे ही कामों में
पारंगत यही कृषिका नारी है॥

गाँव-गाँव व जंगल-जंगल जाकर
बीनती जो सूखी लकड़िया हैं।
सुबह शाम इन्हीं लकड़ियों से
चूल्हा जला भोजन बनाती नारी है॥

घर में बच्चों का करे पालन व
पशुओं पर भी प्यार लुटाती है।
वस्त्रो की सिलाई और कढ़ाई में
भी जगजाहिर भारतीय नारी है॥

सुबह शाम इतने कष्ट सहती,
मानो किस्मत की यह मारी है।
अपने भाग्य को कभी नहीं कोसती,
सदा कर्म करती नारी है॥

कुछ लोग सताते हैं इनको,
ऐसे दुष्टों का कुछ खास इलाज करो।
वैसे अब तो खुद अपना सोच
समझकर फैसला सुनाती नारी है॥

भारत में बिना महिलाओं के कृषि
की कल्पना करना भी बेईमानी होगी।
देश भर में फैले भा.कृ.अनु.प. के
संस्थानों में भी छाई वैज्ञानिक नारी है॥

गिला किस बात का करें, हर आहट पर
वह अपनी उम्मीद मिटाती है।
खामोश रहकर ख़ुद से ही उलझा
और लड़ा करती वो साहसी नारी है॥

एक अनबूझी पहेली बनकर अब तो,
हर बात सुनकर, वो बस हंसा करती है।
कहे मुकुन्द आंसुओं को छुपाए हुए
होंठों से गीत गुनगुनाती यहाँ की नारी है॥

महिला कृषक के दैनिक कृषि कार्यों की गौरव गाथा-I

डॉ. ओम प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

कृषिरत महिलाएं अपने सशक्तिकरण से कृषि क्षेत्र में
उत्पादकता व आर्थिक स्तर बढ़ाने का हर कार्य करें।
खेती के कार्यों में अपनी सक्रिय भागीदारी से अपने
जीवन में खुशहाली लाने एवं बढ़ाने का कार्य करें॥

कृषि क्षेत्र में सहभागिता में महिलाओं का हैं सर्वाधिक
प्रतिशत जो दिन भर कृषि के ही सारे कार्य करें।
वर्तमान चुनौतियों, नीतियों और समस्याओं पर
ध्यान न देकर हर दिन कृषि के ही विभिन्न कार्य करें॥

सवेरे जगने के बाद कृषक महिलाएं सुबह से रात्रि तक
अपनी ज़िम्मेदारी समझ कर खेती के कार्य करें।
रोज सवेरे जल्दी जागकर घर आंगन और जानवरों
के बाड़े की साफ सफाई का दैनिक कार्य करें॥

घर का कूड़ा करकट और जानवरों का गोबर एकत्रित कर
घूरे तक ले जाने का रोजाना वे कार्य करें।
दुधारू जानवरों का दूध दुहें, चूल्हा जलाकर दूध गर्म कर
खौलाने के वाद दही जमाने का भी वे कार्य करें॥

विशेष ज़िम्मेदारी निभाते हुए परिवारजनों हेतु सुबह,
दोपहर व रात का खाना बनाने का भी कार्य करें।
हल्के कृषि कार्यों से संबन्धित हस्त चालित कृषि यंत्रों
के उचित रख रखाव हेतु हर संभव कार्य करें॥

आदिकाल से ही कृषक महिलाएं घर-आंगन से लेकर
खेत-खलिहानों तक रचनात्मक और सामाजिक कार्य करें।
सुबह, दोपहर और शाम की चाय का स्वाद सबको
दिलाने में महिला कृषक अपना सहयोग नित्य करें॥

मृदा उर्वरता बढ़ाने हेतु खेत व कृषि उत्पादों के विभिन्न
अवशेषों से वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाने का कार्य करें।
सुबह, दोपहर व शाम को खेत से घर आकार पशुओं का
दाना, पानी और चारा खिलाने का कार्य करें॥

कृषि में स्त्रीकरण से आशय कृषि से संबन्धित वे सभी
गतिविधियां, महिलाएं जिनमें बढ़-चढ़ कर कार्य करें।
कृषि कार्यों के साथ–साथ नए भारत के निर्माण व
उन्नति के लिए महिलाएं ही पथ प्रदर्शक का कार्य करें॥

कृषि उपयोगी यंत्रों को लोहे व लकड़ी से बनाने में
लुहारगीरी व बढ़ईगीरी का भी कठिन कार्य करें।
टिकाऊ खेती से खाद्य उत्पादन बढ़ाने हेतु विभिन्न
गतिविधिओं में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें॥

फसल की बुवाई, खाद और उर्वरकों का उपयोग,
निराई, रोपाई, कटाई और मढ़ाई का कार्य करें।
पशु-सखी मॉडल और जानवरों का पालन-पोषण तथा
वर्ष भर पशुओं हेतु चारा उत्पादन का कार्य करें॥

बगीचों से फल और फूल का समय पर प्रबंधन कर और
उनसे मूल्यवर्धित व उपयोगी उत्पाद बनाने का कार्य करें।
दुधारू पशुओं से दूध दुहने में प्रवीणता, निपुणता व सक्षमता
से अपने पशु से दूध निकालने का कार्य करें॥

गन्ने में अतः फसल खेती में बुवाई, निकाई, उर्वरकों के
उपयोग से लेकर कटाई, मढ़ाई में अग्रणी बनकर कार्य करें।
दलहनी फसलों में फलियाँ पकने पर फलियों की तुड़ाई
और धूप में सुखाने के बाद दलहनों की सफाई का कार्य करें॥



महिला कृषक के दैनिक कृषि कार्यों की गौरव गाथा-II

डॉ. ओम प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

कृषिरत महिलाएं अपने सशक्तिकरण से कृषि क्षेत्र में
उत्पादकता व आर्थिक स्तर बढ़ाने का हर कार्य करें।

नई कृषि तकनीकों के ज्ञान हेतु कृषि विश्वविद्यालयों,
के.वी.के. और शोध संस्थानों में भ्रमण करने का कार्य करें।
कृषि क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता, होने के साथ केंद्रीय
भूमिका में शामिल, लघु वनोपज़ में बहुत से कार्य करें॥

कृषि संबंधी कार्यों जैसे मत्स्य, मुर्गी, मधुमक्खी पालन तथा
ग्रामीण हस्त कला से घर की आय बढ़ाने का कार्य करें।
पानी और स्वच्छता समिति बना कर ग्रामीण समाज के बीच
जल मित्र (जल सहिया) बनकर महत्वपूर्ण कार्य करें॥

फसल की मड़ाई व औसाई हेतु घर के आँगन में खलियान
बनाने हेतु साफ सफाई और लीपने-पोतने का कार्य करें।
काँस व मूज की सिरकी के बने सूप से अनाज, दाल, आदि
की सफाई कर मिलावट को अलग करने का कार्य करें॥

कच्चे मकानों की छत, दीवार और फर्श की मरम्मत के लिए
पोखर की चिकनी मिट्टी लाकर लिपाई का कार्य करें।
एक किनारे या खाली जगह पर गोबर में कुछ भूसा मिलाकर
भोजन पकाने के ईधन हेतु उपले बनाने का कार्य करें॥

अनाजों और दालों के सुरंक्षित भंडारण हेतु चिकनी मिट्टी से
विभिन्न आकार के कुठलों को बनाने का कार्य करें।
कृषि आधारित नवीन योजनाओं जैसे स्वरोजगार योजना,
जैविक खेती व कौशल विकास योजना में भी कार्य करें॥

फसलों को आवारा जानवरों व चिड़ियों से वचाव करने हेतु
खेत में बनाए मचान पर बैठ कर रखवाली का कार्य करें।
कृषि कार्यो को करने में कृषिकाएँ पहली पक्ति में खड़ी हैं
और देश में दूसरी हरित क्रांति लाने का कार्य करें॥

कभी नहीं होती हैं तीज त्योहार मनाने की छुट्टी
कृषिका तो बारह महीने खेत खलियान में कृषि कार्य करें।
सर्दी, गर्मी चाहे वर्षा का हो मौसम पर कृषक महिलाओं को
कहाँ आराम, ये तो बस खेत व घर में सब कार्य करें॥

महिला किसान सशक्तिकरण व दीनदयाल अंत्योदय
योजनाओं में उप घटक के रूप में भी अहम कार्य करें।
महिला कृषक कार्यबल की दक्षता, लाभ, जागरूकता तथा
क्रय शक्ति आदि के सुधार में भी खास कार्य करें॥

कृषि शिक्षा का ज्ञान, नई-नई तकनीक, कौशल विकास
और डिजिटल साक्षरता को प्रोत्साहित करें।
प्राकृतिक खेती, सतत कृषि प्रणाली, शून्य बजट,
नवीन कृषि पद्धतियों को अपनाने हेतु प्रयास करें॥

स्वयं सहायता समूहों के निर्माण व गतिविधियों के
क्रियान्वयन हेतु सूक्ष्म ऋण दिलाने का कार्य करें।
कृषक महिलाओं के कृषि कार्यो का वर्णन मैं कहाँ से शुरू
और कहाँ पर खत्म करू, ये तो कृषि के सभी कार्य करें॥

परिवार का आर्थिक स्तर सुधारने तथा कृषि विकास हेतु
जो सुबह से रात तक अपना खून पसीना एक करे।
इतना अधिक कार्य करती हैं जो महिलाएं हम भी उनको
उनकी मेहनत का परिश्रमिक दिलाने का प्रयास करें॥

इतनी कोमल पर इतनी कठोर, किस मिट्टी से बनी हैं कृषिका,
जो बगैर थके इतने घंटों तक घर व खेत में कार्य करें।
इतनी मेहनत के बावजूद उनका उत्पीड़न व शोषण होता,
जो अपने देश की मिट्टी का इतना अधिक सम्मान करे॥ .....

मैं हूँ महिला किसान

श्री ज्योति रन्जन दास

सहायक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

मैं हूं महिला किसान, देश वाशियों के लिए हमारे मन में हैं पूरा सम्मान,
कृषि को लेके हम आगे बढ़ते हैं, चाहे आए कोई भी परेशान।
सर्दी, गर्मी, बारिश की कोई भी हो मौसम,
जी जान लगा के करते हैं हम काम।
खेतों की धरती, जीवन का आधार,
महिला की मेहनत, हर संसार का प्यार।
कृषि की आरंभ से, फसल की पैदावार,
हर कदम पर, हमारी अमूल्य सरकार।
जब नारी ने थामा, कृषि के कमान,
सभी का जीवन हो गया आसान।
मिट्टी की बेटी, खेती का आधार,
हमारे हाथों से, खिलता है संसार।
अन्नदाता है नारी, देश का है मान,
हमारे कर्मो से, जगमगाता सबका जीवन।
कृषि की भूमि पर, हमारे कदमों की छाप,
महिला किसान की कहानी, सुननी है हर बात।
हल चलाती है, खाद डालती है,
कभी कभी आँखों में आंसू आती है।
सावन की बूंद, पतझड़ की छांव,
महिला कृषि से खिलता है हर एक गावँ।
आओ मिलकर करें प्रयास, मन में भरे पूरा बिश्वास,
कृषि के बढ़ने से हमारा ही होगा हर काम आसान।

मक्का की ममता: धरती की बेटियों का संघर्ष और सम्मान

डॉ. पंकज कुमार

वैज्ञानिक, भ.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय कटाई-उपरान्त अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, लुधियाना, पंजाब

सुबह की पहली किरण के साथ,
उठती हैं वो गाँव की माटी से,
हाथों में थामे हल्की सी आस,
खेतों की रेखाओं में बुनती विश्वास।

नर्म-नाजुक उंगलियों से,
धरती का सीना चीरती हैं,
बो देती हैं मक्का के सपने,
माँ की ममता सी सजीव।

दिन की तपती धूप में,
झुलसती हैं उनके चेहरों पर मुस्कान,
आँचल में बाँधकर रखती हैं धैर्य,
पसीने की बूंदों में सजाती मक्का की कहानी।

जब कटाई का समय आता,
खेतों में होती हलचल सी,
एक-एक भुट्टे को चुनती,
आँखों में संजोती मक्का की सोने सी चमक।

गाँव की हर गली, हर घर के आँगन,
सुगंधित होते मक्का के दानों से,
धरती का उपहार, बहनों का श्रृंगार,
संभालती हैं वो इन कुदरती मोतियों को।

फिर आता वो समय,
जब कटाई का गीत गाती,
धूप में फैलाती मक्का की चादरें,
हर दाने को देती अपनी छुअन,
सहेजती उसे जैसे सहेजें अपने बच्चों को।

बड़ी-बड़ी कड़ाही में,
भूनती हैं मक्का के दाने,
खुशबू से भर जाता सारा गाँव,
उनके हाथों में जैसे जादू हो कोई।

मक्का की फसल नहीं,
ये तो उनकी मेहनत का प्रतीक है,
हर दाना है उनके संघर्ष का फल,
उनकी ममता, उनका स्वाभिमान।

धूप, छाँव, आंधी-तूफान में भी,
खड़ी रहती अडिग, उन खेतों की रानी,
जो बनाती हैं भारत की असली पहचान,
गाँव की शान, किसान की जान।

मक्का के दानों में बसी है,
उनके दिल की धड़कन,
हर दाने में गूंजता है उनका गीत,
किसानी का संघर्ष, ममता और जीत।

जय मक्का, जय किसानी!

मितव्ययिता मेरी कृषिका की

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

आवश्यकता से अधिक ना मांगू,
मितव्ययिता का ध्यान धरुं मैं।
मांगू बस सम्मान जरा सा,
एक श्रेष्ठ पहचान रखूं मैं।

मितव्ययिता मेरी पूंजी है
कम-व्ययता मेरी कुंजी है।
डबल करूँ मैं राशि सदा ही,
संसाधन को जमा करुँ मैं।



सही समय पर बीज को बोना,
उचित समय पर पानी देना।
मोर क्रॉप पर ड्रॉप मैं करती,
बूंद बूंद कंजर्व मैं करती।

जल संचयन मेरी प्रथमिकता है,
प्रथम प्रयास सदा मैं करती।
हरित खाद की आस करूँ मैं,
करती अपशिष्ट सुरक्षित मैं।

मृदा स्वास्थ्य का ध्यान धरुं मैं,
हर कर्तव्य का मान करूँ मैं।
नारी हूं नारी सी रहती,
कण-कण का गुणगान करुं मैं।

परम्परा तुम्हारी है महिमा,
तुमको जिसने भी जाना है।
परम्परागत खेती तुम सबको,
यही सुरक्षित धर्मा है।

परम्परागत खेती हो सबका लक्ष्य
कृषिका ने सबको बताना है।
मितव्ययिता हो कृषि का लक्ष्य,
प्रकृति का स्वास्थ्य बढ़ाना है।

मितव्ययिता हो कृषि का लक्ष्य, इसे सबने अपनाना है,
इसे सबने अपनाना है .....

ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु उपयोगी कृषि यंत्र-I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ग्रामीण भारत में महिला किसान कृषि में भागीदारी के
माध्यम से देश की अर्थव्यवस्था को देती हैं आकार।
फसल उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण सहित पशुपालन
व डेयरी गतिविधियों में करती हैं अपना सपना साकार॥

ग्रामीण कृषक महिलाएं तथा महिला श्रमिक
भारतीय कृषि के मेरूदण्ड के समान ही हैं होती।
ये महिलाएं कृषि एवं संबन्धित व्यवसायों से
संबंधित सभी प्रमुख कार्यों को हसते-हँसते हैं करती॥

फसल की बुवाई हो, पौध रोपण हो या खरपतवारों
की कटाई-छटाई महिला किसान व श्रमिक ही हैं करती।
फसल की कटाई, औसाई, हरी खाद एवं गोबर खाद
भी महिला किसान एवं श्रमिक ही तैयार हैं करती॥

बीज का चुनाव, खाद, रसायनिक उर्वरकों एवं
कीटनाशक का छिड़काव कृषक महिलाएं सहर्ष हैं करती।
बीज एवं अनाज के भंडारण के साथ-साथ
फसल उत्पादों का प्रसंस्करण भी हैं महिलाएं ही करती॥

इस प्रकार बुवाई से लेकर फसल कटाई तक के
सभी कृषि कार्य कृषक महिलाएं ही हैं करती।
फसल कटाई उपरांत भंडारण के साथ प्रसंस्करण
में भी कृषक महिलाएं हैं सदा जुटी रहती॥

कृषक महिलाओं को कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों से
संबधित क्रियाकलापों में पशुपालन भी होता है बहुत पसंद।
पशुपालन से जुड़े हर एक कार्य को करना
अधिकांश कृषक महिलाओं की होती है पहली पसंद॥

प्रातःकाल पशुओं के लिए खेत से चारा काटकर
गाय-भैंसों को महिलाएं ममता सहित हैं खिलाती।
पानी पिलाती, पशुओं को नहलाती, दूध दुहती तथा
बीमारग्रस्त पशुओं की देखभाल भी हैं वे करती॥

पारम्परिक रूप से कृषि कार्य करने से महिलाओं को
शारीरिक तथा मानसिक थकान तो बहुत होती है।
लगातार थके रहने के परिणामस्वरूप ग्रामीण कृषक
महिलाओं की कार्यक्षमता में कमी आने लगती है॥

कृषि एवं पशुधन उत्पादन गतिविधियों में महिला
किसान लगभग 7.2 घंटे प्रतिदिन करती हैं काम।
फसल उत्पादन एवं पशपालन के क्षेत्रों के अलावा
वे करती हैं परिवार का प्रबंधन तथा अन्य घरेलू काम॥

खेत की मालिक न होने के बावजूद महिलाएँ खेतों और घरों
में करती हैं 14-18 घंटे उत्पादक शारीरिक श्रम प्रदान।
बेहतर उपकरण व प्रौद्योगिकियों से ही होता भूमि,
जल, विद्युत जैसे इनपुट के बेहतर प्रबंधन का प्रावधान॥

शरीर छोटा होने के साथ, महिलाओं में पुरुषों की
तुलना में एर्गोनोमिक विशेषताएँ भी अलग ही हैं होती।
महिलाओं की मांसपेशियों की ताकत व एरोबिक
क्षमता उनके पुरुष समकक्ष की तुलना में भी कम होती॥

साथ ही, कई बार पुरुषों की तुलना में महिला किसानों के
कार्य करने की प्राथमिकताएँ भी भिन्न हैं होती।
अतः उनकी क्षमताओं व सीमाओं के मद्देनजर उपयुक्त
उपकरण व यंत्र बनाने की जरूरत है महसूस होती॥

अतः इन महिलाओं को विभिन्न उपकरणों तथा
यंत्रों के बारे में वैज्ञानिक जानकारी देना चाहेंगे हम।
जिससे कृषि में ग्रामीण कृषक महिलाओं द्वारा
किए जा रहे अनावश्यक श्रम को किया जा सके कम॥



ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु उपयोगी कृषि यंत्र-II

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अनाज वाली फसलों की कटाई मुख्यत:
महिला श्रमिकों द्वारा बनाये गये हसिये से ही है की जाती।
0.15 हेक्टेयर प्रतिदिन की कार्यक्षमता उनकी है बढ़ती,
वे कृषक महिलाएं नवीन हसिया जो पा जाती॥

फसल कटाई के काम में बहुत अधिक संख्या में
ग्रामीण महिला श्रमिकों को काम पर है लगाया जाता।
नवीन हसिये का प्रयोग करने से इन ग्रामीण महिला
श्रमिकों का श्रम भी अत्यंत कम है लगता॥

इस नवीन हसिया का काटने वाला सिरा बना रहता है
लम्बे समय तक बहुत ही धारदार।
सीआईएई, भोपाल द्वारा निर्मित हसिए को प्रयोग करने से
नहीं लगानी पड़ती है बार-बार धार॥

यह उन्नतशील नवीन हसिया लकड़ी के विशेष हाथ से
पकड़े जाने वाले हैंडल से निर्मित है होता।
हसिए का लकड़ी का यह हैंडल महिलाओं द्वारा कटाई की
प्रक्रिया को बहुत सुगम है करता॥

इस नवीन विकसित हसिए का ब्लेड बारह मिलीमीटर
चौड़े दांतेदार कार्बन स्टील से हैं निर्मित होता।
यह चावल, गेहूँ, दलहनी, तिलहनी व चारे जैसी विभिन्न
अन्य फसलों की कटाई के लिए उपयुक्त है होता॥

हाथ से खुरपी द्वारा निराई-गुड़ाई करने में ग्रामीण
कृषक महिलाओं को काफी परिश्रम है करना पड़ता।
द्विपहिया निंराई यंत्र द्वारा आगे धकेलकर तथा पीछे
खींचकर खरपतवारों पर नियंत्रण है किया जाता॥

यह यंत्र काली मृदा वाली शुष्क भूमि में पंक्तिबद्ध
फसलों की निंराई-गुड़ाई के लिए होता है उपयुक्त।
उत्पादन बढ़ता 0.15 हे. प्रतिदिन क्षमता से कम
समय लगने से महिलाएं अन्य काम हेतु रहती हैं मुक्त॥

हाथ द्वारा भुट्टे से मक्का के दाने अलग करना
महिलाओं के लिए सिद्ध होता है एक बड़ा कठिन काम।
ट्यूबर मक्का छीलक यंत्र नामक सरल उपकरण
आसान करता है भुट्टे से दाने अलग करने का काम॥

7 सें.मी. लंबाई के एक स्टील पाइप, व्यास में 6.25 सें.मी
की भीतरी परिधि में चार ब्लेड हैं लगाए जाते।
छिलका पकड़ तथा एक सूखी मक्का इसमें डालकर
विपरीत दिशाओं में घुमाकर दाने हैं निकाले जाते॥

ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु मूँगफली की फलियों
से दाने अलग करना भी होता है एक श्रमदायक काम।
मूँगफली छीलक यंत्र से 70-80 प्रतिशत तक कम
श्रम के साथ ही हो जाता है दाने निकालने का काम॥

कटाई के बाद श्रेणीकरण की महत्वपूर्ण गतिविधि से
कृषकों को फसल का अधिक मूल्य होता है प्राप्त।
सदियों से भंडारण पूर्व महिलाओं द्वारा ही
किया जाता था श्रेणीकरण का काम सूप व छलनियों से मात्र॥

नवविकसित हस्तचलित द्विछलनी अनाज सफाई यंत्र
की 150 किलोग्राम प्रति घंटा की होती है कार्यक्षमता।
यह सफाई यंत्र चार रस्सियों के साथ किसी ऊँचे
स्थान से बांधकर प्रचालित सुगमता से है किया जाता॥

कार्य के दौरान रस्सियों व अनाज का भार रस्सियों
पर होने से महिलाओं को करना होता है श्रम कम।
चना, गेहूँ और सोयाबीन से कंकड़, धूल तथा मिट्टी
साफ करने हेतु इस यंत्र का प्रयोग सटीक हरदम॥

यह यंत्र दो धातु की छननी जो कि एक रस्सी से
झूले की तरह लटकी होती है, द्वारा है निर्मित होता।
हस्तचलित द्विछलनी अनाज सफाई यंत्र में एक समय
में 5 - 10 किलोग्राम बीज छननी में है डाला जाता।
झूलेनुमा छननी को हाथ से आगे और पीछे हिला कर
अनाज सुगमता से है साफ कर लिया जाता॥

कृषि की एक महत्वपूर्ण गतिविधि सब्जी की खेती
में कृषक महिलायें एक सक्रिय भूमिका हैं निभाती।
अतिरिक्त आय सृजन करने के लिए सब्जी उत्पादन
की क्रिया महिला किसानों को है अत्यंत भाती॥

सब्जी उत्पादन में श्रमिकों को पौध की रोपाई सर्वाधिक
श्रमसाध्य क्रिया होने से मेहनत है अधिक लगती।
ट्रैक्टर-चालित सब्जी रोपाई यंत्र से सब्जी की पौध
को रोपने से कम समय में मेहनत कम ही लगती॥

सब्जियों के पौधों की रोपाई हेतु ट्रैक्टर–चालित
अर्द्ध-स्वचालित रोपाई यंत्र का करते हैं जो भी इस्तेमाल।
व्यायसायिक फसल होने से सब्जी उत्पादन से वर्ष
भर अतिरिक्त आय कमाकर हो जाते हैं शीघ्र मालामाल॥

टमाटर, मिर्च, फूलगोभी, पत्तागोभी, बैगन जैसी
सब्जियों की पौध की रोपाई जो उपरोक्त यंत्र से है करता।
एक दिन में आधे हेक्टेयर क्षेत्र में विभिन्न सब्जियों
की पौध की रोपाई की क्षमता का दोहन है करता॥

ग्रामीण कृषक महिलाओं हेतु उपयोगी कृषि यंत्र-III

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

खेत में हाथ से बीज व उर्वरक डालने में अधिक समय व
कठोर श्रम के साथ कर देता है हाल बेहाल।
एक-एक बीज बोने हेतु हस्तचालित डिब्लर जैसे
सरल उपकरण का महिला कृषक कर सकती हैं इस्तेमाल॥

दूर-दूर तक बोई जाने वाली मक्का, अरहर, कपास
जैसी अन्य फसलों हेतु इसका है प्रयोग किया जाता।
हस्तचालित डिबलर के प्रयोग से एक दिन में कृषकों
का 0.2 हेक्टेयर क्षेत्र में बीज व उर्वरक डाला जाता॥

हस्तचालित रोटरी डिब्लर द्वारा बड़े व मध्यम आकार
के बीजों को पंक्तियों में सुगमता से है बोया जाता।
0.3 हे प्रतिदिन कार्यक्षमता से मक्का, ज्वार, सोयाबीन,
अरहर व चना के बीजों को खेत में बोया जाता॥

हस्तचालित बीज एवं उर्वरक ड्रिल से बीज तथा
उर्वरक खेत में डालने से उत्पादन मिलता है भरपूर।
छोटे एवं बड़े दोनों ही प्रकार के बीज बो सकते हैं
जैसे तोरिया, सरसों, सोयाबीन, मक्का, गेहूं, चना व तुर॥

धान के खेतों में खरपतवार बहुत क्षति पहुंचाते,
पाना है यदि महिला कृषकों को इन खरपतवारों से पार।
तो उनको प्रयोग करना होगा एक व्यक्ति द्वारा संचालित
किए जाने वाला यंत्र जो निवारक करे खरपतवार॥

धान की पंक्तियों के बीच में इसको आगे धकेलकर
तथा पीछे खींचकर इस यंत्र को है चलाया जाता।
इसके घूर्णन ब्लेड के द्वारा मिट्टी की सतह के नीचे
जाकर खरपतवार को काटकर है निकाला जाता॥

0.20 हेक्टेयर प्रतिदिन घास नष्ट करने की होती है
इस रोटरी धान खरपतवार निवारक यंत्र की कार्यक्षमता।
रोटरी हैण्ड व्हील हो को स्थानीय कौशल तथा स्थानीय
सामग्री का उपयोग कर है बनाया जा सकता॥

फसल का बेहतर मूल्य प्राप्त करना हो तो सभी अनाजों
की सफाई व श्रेणीकरण है अवश्य किया जाता।
पैडल व शक्तिचालित सफाई एवं श्रेणीकरण यंत्र से
धूल, मिट्टी, पत्थर, भूसा, घास है अलग किया जाता॥

आलू छिलाई यंत्र से चिप्स या वेफर तैयार करने हेतु
महिलाओं द्वारा आलू सुगमता से है छीला जाता।
इसके प्रयोग द्वारा श्रम व समय बचाकर एक घंटे में

30 किलोग्राम आलू का छिलका है उतारा जा सकता॥
आलू के चिप्स बनाने हेतु हाथ से चलने वाले विकसित
यंत्र में भराई हेतु चार सिलेण्डर हैं लगाये जाते।
इसमें नीचे एक वृत्ताकार ब्लेड लगाकर 10 कि.ग्रा./हे.
की दर से आलू पतली स्लाइस में हैं काटे जाते॥

पनीर दबाने के यंत्र के प्रयोग से कृषक महिलाओं
द्वारा घरेलू स्तर पर पनीर सुगमता से है बनाया जाता।
2 किग्रा/घंटा की दर से स्क्रू प्रकार के प्रेस से दबाकर
अतिरिक्त पानी को बाहरकर पनीर है बनाया जाता॥

वैज्ञानिकों द्वारा कृषक महिलाओं को कृषि हेतु अति
उपयोगी यंत्रों के बारे में जानकारी प्रदान है की जाती।
विभिन्न प्रक्षेत्र परीक्षण एवं अंग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों के
माध्यम से तकनीकी स्थान्तरण भी है की जाती॥

इन प्रसार गतिविधियों का उद्देश्य ग्रामीण कृषक
महिलाओं को तकनीकी रूप से अधिक सशक्त बनाना है।
कृषि में उपयोगी यंत्रों के प्रयोग से उनकी कार्यक्षमता
बढ़ाकर उनकी कड़ी मेहनत को भी बचाना है॥

ऐसे अनेकों उन्नत प्रकार के कृषि उपयोगी उपकरणों के
प्रयोग से समय तथा ऊर्जा की बचत होती है।
कृषक महिलाओं के शरीर पर कृषि संबंधी कार्य करने से
प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की आशंका कम होती है॥

अत: कृषि से जुड़ी ग्रामीण कृषक महिलाएं कृषि में
उपयोगी यंत्रों का अधिक से अधिक उपयोग करें।
ये सभी उन्नतशील यंत्र व उपकरण कम समय में
अधिक काम करके महिलाओं को थकान से मुक्त करें॥

आज की जानकी

किरण जाधव
प्रभारी अधिकारी, कृषि संशोधन केंद्र, बदनापूर

ओ जनक की जानकी,
जो पूरी करे आस धरा की।

हर काम करे ओ भलीभाती,
अपने पसीने से, खेत को है सिंचती।

और सुजलाम-सुफलाम करे सब खेती,
तंत्रज्ञान से लहज है अब ये सरस्वती।

वैज्ञानिक बनकर तंत्रज्ञान के पाठ है पढ़ाती,
कभी देकर नयी प्रजाती, फसल को है बढ़ाती।

अपने नेतृत्व में कई कृषि, संस्थान है चलाती,
सर्वार्थ से सार्थक है, अब नारीशक्ती!!

इसके बिना ना होगी कभी खेती!!
इसके बिना ना होगी कभी खेती!!

ओ जनक की जानकी, जो पूरी करे आस धरा की।

स्त्री तुम चलती रहो....

डॉ. गिरिजा सौरभ बेहेरे

सहा. प्राध्यापक (मत्स्य प्रसंस्करण प्रौद्योगिकी), मात्स्यिकी महाविद्यालय, दतिया

रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्व विद्यालय, झाँसी

भले रास्तें में हो अँधेरे...
या हो उजले सवेरे...
भले हो तूफ़ान..
या हो खुला आसमान...
स्त्री.. तुम चलती रहो...
खेती में आये बाढ़...
या फिर अनाज में पाओ बढ़त..
भले कितने भी करने पड़े कष्ट
या फिर आराम से मिले धान
स्त्री तुम चलती रहो..
नारी का एक ही कर्त्तव्य है...
तुम्हे हमेशा चलना है...
अपने कुटुंब के साथ
इस भारत को कृषि क्षेत्र में आगे बढ़ाना है
स्त्री तुम चलती रहो.....

कृषिका की श्रम भागीदारी – समस्याएँ ही समस्याएँ हैं भारी-I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

पितृसत्तात्मक मानदंड प्रायः विभिन्न क्षेत्रों में रोज़गार के
अवसरों तक महिलाओं की पहुँच को कर देते हैं सीमित।
गृहिणी के रूप में महिलाओं की भूमिका श्रम बल में
उनकी भागीदारी को करती है बहुत ही हतोत्साहित॥

महिलाओं को समान काम के लिए पुरुषों से कम
वेतन प्राप्त करने की समस्या का करना पड़ता है सामना।
विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 के अनुसार, देश में बयासी
प्रतिशत श्रम आय पर है आज भी है पुरुषों का कब्ज़ा।
क्या ठीक है आज भी भारत की कुल श्रम आय
पर महिलाओं का मात्र अट्ठारह प्रतिशत पर ही कब्जा॥

एक देश में बेरोजगारी की जड़ें सदा ही आर्थिक व्यवस्था
में आम धारणा से होती हैं कहीं बहुत अधिक गहरी।
आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख उद्देश्य रोजगार ही
बनाता है आर्थिक संकट और प्राथमिक गरीबी से भी दूरी॥

रोजगार के अवसर अधिक होने पर देशवासियों की
समृद्धि बढ़ाना और उत्पादन बढ़ाना होता है प्रोत्साहित।
वेतन की घोर असमानता महिलाओं को रोज़गार के
अवसर तलाशने में कर सकती है अत्यंत ही हतोत्साहित॥

भारत में विवाहित महिलाओं पर घरेलू कार्यों के चलते
अन्य आर्थिक कार्यों हेतु रहता है समय बहुत सीमित।
घरेलू कार्य का महिलाओं पर पड़ता है भारी दबाव,
रोज़गार हेतु उनका समय और ऊर्जा कर देता है बहुत सीमित॥

शिक्षा महत्वपूर्ण होने से महिलाओं की शिक्षा पुरुषों से
सौ गुना अधिक जरूरी है चाहिए जो सामाजिक विकास।
शिक्षित होकर अत्याचार भी वे नहीं सहेंगी अतः सरकार को
स्त्री शिक्षा के लिए करना चाहिए हरसंभव प्रयास॥

शिक्षित नारी कभी भी पुरुषों को प्रतिद्वन्द्वी मानते हुए
उनके सामने ही मोर्चा लेकर कभी भी नहीं होगी खड़ी।
शिक्षित नारी सफल गृहिणी व कुशल माता बन निराशा
व शोषण के विरुद्ध चल रहे युद्ध में सदा रहेगी खड़ी॥

शिक्षा कृषिरत महिलाओं के विकास हेतु एक आधार के
रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने हेतु महिलाओं को
सक्षम करने के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जाती है॥

स्त्री शिक्षा परिवार, समाज, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय
विकास में तो पहुंचाती ही है बहुत ही अधिक मदद।
शिक्षा ही आर्थिक विकास और किसी भी राष्ट्र के
सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में करती है अपार मदद॥

स्त्रियाँ को खटकती मालिकाना हक की कमी, आधुनिक
औजारों एवं तकनीकी ज्ञान की कमी व ऋण की पहुँच सीमित।
प्रायः न्यूनतम वेतन से कम दी जाती है मजदूरी तथा
सामाजिक सुरक्षा के लाभ भी उनको मिलते अति सीमित॥

आधुनिक कृषि यंत्र तथा उन्नत उत्पादन तकनीक का
ज्ञान न होने से उनको करना पड़ता है श्रम-साध्य काम।
नहीं मिलता स्वच्छ जल, सुविधाएं, सफाई के संसाधनों
व सफाई की कमी जैसे मुद्दे बनाते उनका जीवन हराम॥

बगैर आराम दिये लंबे समय तक, प्रायः बारह घंटों से
भी अधिक समय तक पड़ता है उनको लगातार काम करना।
प्रतिकूल मौसमी दशाएँ, कीटनाशी रसायनों के खतरे
तथा शारीरिक थकान से होता है उनका रोज सामना॥

झेलती हैं स्वास्थ्य की देखभाल की कमी, प्रसूति अवकाश
तथा बच्चों की देखभाल की सुविधाओं का अभाव।
सीमित निर्णय लेने की क्षमता, गैर बराबर वेतन तथा
लिंग आधारित हिंसा जैसे लिंग आधारित भेदभाव॥

उनको मिलता है कौशल विकास व क्षमता निर्माण तथा
व्यावसायिक प्रशिक्षण लेने का मौका बहुत ही सीमित।
संतुलन बनाना होता है काम व बच्चों की देखभाल संबंधी
जिम्मेदारियों का, क्योंकि सुविधाएं होती हैं अत्यंत सीमित॥

कृषिका की श्रम भागीदारी – समस्याएँ ही समस्याएँ हैं भारी-II

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. - भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से परेशान रहती हैं क्योंकि खेतिहर
महिलाओं को पौष्टिक भोजन है बहुत कम मिलता।
उनकी सीमित गतिशीलता तथा सामाजिक जुड़ाव की
कमी से समाज से उनको अकेलापन भी है महसूस होता॥

अपने कृषि उत्पादों को बेचने की उनको मुश्किल होती
क्योंकि महिलाएं नहीं पहुँच पाती हैं निकट के बाजार।
कम आय हो पाती है उनको क्योंकि बिचौलियों पर निर्भर
रहने के कारण सदा होती हैं वे आर्थिक शोषण का शिकार॥

कृषि में उनके योगदान को सम्पूर्ण मान्यता न मिल पाने से
वंचित रहती हैं जो मिलना चाहिए उनको मान सम्मान।
भेदकारी नीतियों व क़ानूनों से सीमित संसाधन, ऋण व
मालिकाना हक के कारण नहीं बढ़ती है उनकी शान॥

जलवायु परिवर्तन का बोझ ढोते-ढोते फसल नष्ट, जल की
कमी तथा काम का बोझ बढ़ने का रहता है सदा ही खतरा।
सदा ही महिला श्रमिकों पर अनियमित रोजगार से बना
रहता है उनकी वित्तीय सुरक्षा का गंभीरतम खतरा॥

उनकी ज़मीनों पर भू माफियाओं के अतिक्रमण
से मँडराता रहता है उनकी आजीविका पर सदा खतरा।
विभिन्न फसलों की मशीनीकृत खेती में बना रहता है
मशीनों के चलते पुर्जों के मध्य वस्त्र फसने का खतरा॥

बागवानी फसलों में प्रतिकूलतम वातावरण में अधिक
काम से शारीरिक थकान तथा अस्वस्थ होने की समस्या।
जहरीले कीटनाशी रसायन, उर्वरकों व रसायनों से बढ़
जाती हैं उनकी स्वास्थ्य व प्रजनन संबंधी समस्या॥

मौसमी उतार-चढ़ाव पर निर्भर होने से फसल की मांग के
अनुसार प्रायः अनियमित रहती है आय महिलाओं की।
फसल के नष्ट हो जाने या फसल का मौसम न होने पर
उनको हटा देते हैं या घटा देते हैं अवधि उनके कार्य की॥

कृषक संगठनों में प्रतिनिधित्व न प्राप्त होना व नीति
निर्णायक प्रक्रिया में उनसे नहीं है पूछा जाता कभी भी।
थ्रेशर चलाते समय साड़ी अथवा दुपट्टा जैसे ढीले कपड़े या
खुले बाल थ्रेशर में फँसने का बना रहता है डर कभी भी॥

सीमित शक्ति व संसाधनों के कारण कार्यस्थल पर रहता है
महिलाओं व बालिकाओं के यौन शोषण का भी डर।
स्वच्छ शौचालय, स्वच्छ जल व अस्वच्छ दशाओं के
कारणों से रहता है उनको सदा स्वयं बीमार होने का डर॥

चाय व पाम बागानों में शारीरिक थकान के साथ ही विषाक्त
रसायनों के प्रति एक्सपोजर से होती हैं वे सदा परेशान।
कॉफी के बागानों में भूमि के मालिकाना हक की समस्या
एवं निर्णय न ले पाने से नहीं बनती उनकी अपनी पहचान॥

गन्ने में काम करने से गन्ने की पत्तियों के किनारे नुकीले होने
से त्वचा कटने का बना रहता है सदा खतरा।
खेतों में साँप व बिच्छू के बिल होने से जहरीले साँपों व
बिच्छुओं द्वारा काटे जाने का सदा रहता है बना खतरा॥

दीर्घकाल तक लगातार खेतों में काम करने से महिलाओं
को हो जाता है मांसपेशी संवोधन प्रणाली का खतरा।
महिलाओं में गलत पोस्चर भी बढ़ा सकता है बदन,
पीठ, घुटने, कंधे, कमर, हाथों व पैरों में दर्द का खतरा॥

घरेलू कार्य एवं कार्यात्मक जीवन में अंतर खत्म करके ही
औपचारिक व अनौपचारिक कार्यों को महत्व देना ही होगा।
सांस्कृतिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए कृषिरत महिलाओं के
लिए कार्य के विकल्पों पर ध्यान केन्द्रित करना होगा॥

सामाजिक विकास का संचालक होने के कारण महिलाओं
की श्रम शक्ति में उनकी सहभागिता को बढ़ाना होगा।
उनकी क्षमता दोहन हेतु सामाजिक-आर्थिक विकास, गरीबी
में कमी, बेहतर मानव पूंजी जैसे लाभ ही लाभ होगा॥



नारी तू नारायणी

गीता साहा

तकनीकी अधिकारी, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

नारी तू नारायणी,
जग की तू आधार है,
नारी बिन ये जग है अधूरा,
नारी ही है सम्पूर्णा ॥

नारी अब अबला नहीं,
सबला की पहचान है,
घर परिवार की पहचान है नारी
जिससे परिवार फलता-फूलता है ॥

आसमां से लेकर धरती तक,
तेरी किरण और सफलता फैली है।
माँ-बाप की आँखो का तारा है नारी,
सपने खूब संजाती है ॥

माँ-बाप, भाई-बहन के हर,
सुख-दुख में साथ भरपुर देती है।
इसलिए इन्हें जग में
"माँ बेटी" कहती है ॥

जन्मदायिनी माँ-बाप के घर में
दुलार से बड़ी होती है।
शादी करके दूसरे परिवार की
जिम्मेदारी लेती है ॥

एक परिवार छोड़ दूसरे,
परिवार को अपनाती है।
इस कठिन चुनौती को,
हंसकर निभाती है॥

इसलिए इन्हें जग में,
सहनशीलता की मूर्ति कहते हैं।
माँ दशभुजा जैसी शक्ति है इनमें,
इसलिए इन्हें शक्ति स्वरुपिनी मानते हैं।

शिक्षा से खिल उठती है नारी,
शिक्षा हर नारी का अधिकार है।
नारी में ही जीवन पलता,
स्वस्थ सुनहरा जीवन देती है॥

माँ स्वस्थ तो बच्चा स्वस्थ,
आदि काल से ये नारा है।
घर परिवार, कृषि, सेवा बड़ों की,
पशु पालन और पोषण,
सभी का भार उठाती नारी है॥

बच्चों से लेकर बुजुर्ग, सभी का,
ख्याल भरपूर रखती है।
स्वस्थ और सफल जीवन के लिए,
नारी ही पथ प्रदर्शक है॥

खुद भूखा रहकर दूसरों को खिलाना,
यह त्याग भावना रखती है।
परिवार को खुश देखकर, खुद खुश होती है,
परिवार में ही वह अपनी खुशियां ढूंडती है॥

मन में करुणा सी जागी है

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

धरती तुम खुश करती सबको,
धरती तुम खुश रहना हरदम।
सदा ध्यान रखती तुम सबका,
तुम हो जननी श्रेष्ठ श्रेष्ठतम।

मन में करुणा देख जगी है,
मन अभिभूत हुआ है कण-कण।
तुमको सर्व समर्पण मेरा,
तुम भरती झोली सबकी हरदम।



मेरा-तेरा साथ सदा से,
कृषिका हूं मैं जीवित तुझसे।
सर्वस्व निछावर तुमको मेरा,
साथ सदा तुम देना सिंचित।

हर दाना तेरा पूजित है,
हो क्षीर धारा सी बहती तुम।
तुम संबल मेरा हम सबका,
तुम होती प्रवाहित शक्ति सी।

मन में करुणा सी जागी है,
मन संशय कुछ संकल्पित है।
माता तुम साथ सदा रहना,
तू करती शक्ति समर्पित है।

धरती के कण-कण शक्ति भरे,
शक्ति कण-कण में भर जाए।
तुम शक्ति स्वरूपा हो धरती,
हर कृषिका जागृत हो जाए।

मन में करुणा सी जागी है, सबके मन करुणा भर जाये..

महिला किसान, देश की शान

सुश्री अंशिका पंडा, कक्षा - ग्यारहवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (1), भुवनेश्वर, ओडिशा

सूरज की पहली किरण से अपने दिन की शुरूआत करती,
पर्यावरण में आती हर चुनौतियों का साहासी बन कर सामना करती,
पेरों से आती गिली मिट्टी की सुगंध, उसके परिश्रम को दर्शाती।

घर के काम और खेत के काम के बीच संतुलन बनाए रखती,
अपने बच्चे और फसल दोनों की बड़े स्वेह ममता के साथ
बड़ा करती, देश के प्रगति में भी अपना हाथ बँटाती।
सूरज की किरणें, मिट्टी की सुगंध, कीचड़ और मिट्टी से
सने उसके हाथ-पैर, हर एक फसल की मेहनत, है,
उसकी पेहचान, उसका गौरव।

सूरज के किरणों के धागे से सबके लिए अन्न बुनती,
पूरे देश के बच्चों का पेट भरकर भी, कभी कभी
अपने बच्चों का पेट भरने में हार जाती।

हाथ रूखे, जमीन सूखे फिर भी हार कभी न मानती,
वह धरती माँ की सच्ची संतान कहलाती,
वह महिला किसान के नाम से जानी जाती।

महिला किसान - प्रेरणामय जीवन

सुश्री बनिस्का बिस्वाल, कक्षा - बारहवी (द)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (1), भुवनेश्वर, ओडिशा

एक महिला किसान,
सूरज की पहली किरण के साथ,
करती है घर और खेत दोनों के काम,
बिना थके हाथ।

हो महीना जेठ का या पूस का,
उसके लिए सब एक समान है,
कठिन से कठिन श्रम झेल लेत है,
हाँ, वह महिला किसान है।

किसान जब खेत जाता है,
उसके जगने से पहले जग जाती है,
घर का चौका-चूल्हा करती है,
और जानवरों का भी ख्याल रख लेती है।

खेत में धूप में तड़पती है,
हल चलाकर अपना पसीना बहाती है,
वापस घर आकर अपना घर सँवारती है,
पर एक न शिकायत करती है।

कभी पिता की मदद करती है,
कभी पति का सहारा बन जाती है,
बहन के रुप में परिवार को बाँधकर,
पूरी धरती को अन्न प्रदान करती है।

उसकी ताकत है बहुत,
न थकती है, न रूकती है,
खुद के हक के लिए,
अपने दम पर लड़ती है।

किसने कहा लड़कियाँ,
सिर्फ घर के लिए बनी हैं ?
महिला किसान तो समाज की बेड़ियाँ तोड़कर,
पूरे संसार के लिए स्वयं अन्नदेवी स्वरूप प्रकट हुई हैं।

वह एक प्रेरणा है, उनं लड़कियों के
लिए जो उड़ना चाहती हैं,
अपने सपने हासिल करना चाहती हैं,
और पितृसत्ता के नियमों से परे,
जाना चाहती हैं।

कई मन की शिलाओं को
जो जिद से थेल देती है,
नमन है उस देवी को,
जो हल से खेल लेती है,
जी हाँ ! वह महिला किसान है,
जो किसानों का भी पेट भर देती है,
हम सबका का पेट भर देती है।

मधुर स्वर की कड़वी कहानी

सुश्री मीमांसा मिश्रा, कक्षा - ग्यारहवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (1), भुवनेश्वर, ओडिशा

बच्चों की लंबी कतार,
स्टेज पर जाने का इंतजार।
गाना था सभी को उस एक चीज के बारे में,
जिसे उनसे है सबसे अधिक प्यार।

बच्चो आऐ, गाऐ, चले गए,
लोग सुन-सुन कर उठ हए।
एक दूसरे को देख बोलने लगे,
आखिर देश भक्ति से परे तो कोई गाए।

फिर आया एक बच्चा, कद में छोटा,
नाम बताया उसने अपनी राकेश भक्टा।
पहले करा उसने सभी को प्रणाम,
फिर शुरू करा ये सुंदर गान।

आओ सुनाऊँ मैं अपनी जुबानी,
से मेरी माँ की कहानी।
पापा नहीं है, भैया गया भाग,
हमारे सारे जायदात पर लगा दिया
इस जालिम दुनिया ने आग।

पर रोयी कभी ना मेरी माँ,
दुनिया को जवाब देने की कसम उसने खाई।
मेरी देखभाल में सारी जिन्दगी उसने बिताई,
लोगों के तानों से कभी न वह घबराई।

मेरी माँ एक किसान है,
धूप, छावं, बारिश से उसके शरीर पर पड़े न
जाने कितने निशान है।
लोगों के तानों से होती कभी न वह परेशान है,
पर, उसके मेहनत की व्याख्या करना न मेरे लिए आसान है।

जिसकी मौजुदगी से जिंदा है ये दुनिया सारी,
वही माँ, मेरी "महिला किसान" माँ, मेरे लिए हे सबसे प्यारी।
यह सुन लोगों की आंखें आई भर,
और सभी ने तहे दिल से बजाई ताली भारी।



ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषिरत महिलाओं का अतुलनीय योगदान-I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

किसी भी विकसित समाज की रीढ़ की हड्डी
होती हैं आधी आबादी अर्थात महिलाएं।
राष्ट्र की सतत प्रगति तथा दीर्घकालिक विकास
सुनिश्चित करने में भी अहम योगदान देती हैं महिलाएं॥

किसी भी सभ्य समाज में महिलाएं निभाती हैं
वहाँ के सभी आर्थिक कार्यों में केंद्रीय भूमिका।
कृषि के खराब प्रदर्शन का कारण संसाधनों तथा
अवसरों की कमी झेलती हैं भारतीय कृषिका॥

महिलाएं किसान तथा श्रमिक होने के बावजूद
प्रतिदिन ही बहुत सी बाधाओं का करती हैं सामना।
उत्पादकता में वृद्धि का लक्ष्य ही होता है सामाजिक
लाभ तथा आर्थिक विकास को बढ़ावा देना॥

विकासशील देशों में कृषि श्रम में महिलाओं की
अड़तीस प्रतिशत तक की होती है हिस्सेदारी।
अपने खेत, उद्यान, आवास तथा जंगलों में काम
करके महिलाएं संभालती हैं अपनी विशेष जिम्मेदारी॥

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का प्राथमिक काम पशुधन
अथवा पोल्ट्री फार्म की है देखभाल करना।
साथ ही वे करती हैं ईंधन, चारा व जल संग्रह,
घर में सब्जियां उगाना और मुर्गी पालन करना॥

कुटीर उद्योग के माध्यम से आय बढ़ाने के लिए
भी देती हैं महिलाएं ही महत्वपूर्ण योगदान।
महिलाओं की योग्यता पुरुषों से अधिक होने
पर भी किया जाता है उन्हें ही कम भुगतान॥

अनाज, दलहन, तिलहन, नकदी तथा बागवानी
फसलों को उगाने में निभाती हैं महत्वपूर्ण भूमिका।
भूमि, जल, पौधों, जीव-जंतुओं सहित पर्यावरण के
संरक्षण में भी महिलाएं निभाती हैं अहम भूमिका॥

वैश्विक स्तर पर भारत का दुग्ध उत्पादन तथा अंडा
उत्पादन में है क्रमशः प्रथम तथा तृतीय स्थान।
इसी प्रकार सम्पूर्ण विश्व के चिकन उत्पादक देशों में
भारत देश रखता है अपना विशेष पांचवा स्थान॥

पशुपालन के क्षेत्र में महिलाएं कई भूमिकाएं निभाती हैं
जैसे कि जानवरों को चारा खिलाना।
पशुओं की देखभाल, पानी पिलाना, चारे का संग्रह
एवं भंडारण तथा पशुओं का दूध निकालना॥

टहनियों व फसल के अवशेषों के साथ गोबर
मिलाकर खाना पकाने हेतु ईंधन हैं वे तैयार करती।
पशुधन व उसके उत्पादों पर नियंत्रण न होने पर भी,
वे पशुधन प्रबंधन में अहम भूमिका निभाती॥

यदि हम ग्रामीण कुक्कुट पालन में महिलाओं की
भागीदारी पर करते हैं जो विचार।
उन पर ही है पक्षियों के भोजन व प्रबंधन से
शुरू होकर अंडे व पक्षियों के खरीदने-बेचने का भार॥

पोल्ट्री को महिला का क्षेत्र माने जाने से यह
परिवार के पोषण और आय का करता है काम।
इसी तरह ग्रामीण परिवारों में महिलाएं ही
करती हैं बकरी पालन जैसा महत्वपूर्ण काम॥

महिलाएं ही करती हैं खाद का संग्रह एवं बिक्री,
तथा प्रजनन के लिए जानवरों की देखभाल।
चारा संग्रह व कटाई, पशुओं को चराना तथा
नवजात बच्चों का प्रबंधन तथा उनकी देखभाल॥

कुटीर उद्योग के रूप में भारत में रेशम उत्पादन
सबसे महत्वपूर्ण नकदी फसलों में से है एक।
स्त्रियाँ जहां प्रमुख कार्य करती, रेशम उत्पादन
उन ग्रामीण स्तर पर आधारित उद्योगों में से है एक॥

पिचचानवे फीसदी का योगदान करके एशिया का
विश्व के रेशम उत्पादक महाद्वीपों में है प्रथम स्थान।
अट्ठाईस हजार मैट्रिक टन वार्षिक रेशम उत्पादन
के साथ भारत का विश्व में है द्वितीय स्थान॥

भारत में रेशम उत्पादन में कुल कार्य बल में
लगभग साठ प्रतिशत महिलाएं ही देती हैं योगदान।
शहतूत के पौधों की खेती, अंत: खेती, निराई-गुड़ाई,
गोबर की खाद डालने में देती वे योगदान॥

महिलाएं शहतूत की पत्तियों की कटाई व उनके
परिवहन व रेशम कीट लार्वा पालन का करें काम।
कोकून के बाद की तकनीक में रेशमी धागे को घुमाने,
रंगने, बुनाई व छपाई का भी इनका ही काम॥

ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषिरत महिलाओं का अतुलनीय योगदान-II

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

बागवानी में सब्जियों, फलों एवं औषधीय पौधों के
उत्पादन में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका हैं निभाती।
फलों की खेती में निराई, सिंचाई, संग्रह, छंटाई,
और ग्रेडिंग जैसे काम महिलाएं ही है कराती॥

सब्जी उत्पादन में बीज की सफाई, बुवाई, रोपाई,
निराई, कटाई तथा ग्रेडिंग के साथ खेत की तैयारी।
खाद डालने का कार्य, उत्पाद की सफाई, कटाई,
भंडारण में होती महिलाओं की ही भागीदारी॥

सफाई, कटाई, भंडारण तथा प्रसंस्करण जैसी
गतिविधियों में महिलाएं रखती हैं शत प्रतिशत हिस्सेदारी।
सब्जियों, फलों व औषधीय पौधों की जैविक खेती का
प्रशिक्षण प्राप्त कर निभाती हैं अपनी ज़िम्मेदारी॥

महिलाएं मशरूम की खेती, वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन,
प्रसंस्करण व रंगीन फूलों की खेती भी हैं करती।
नर्सरी रखरखाव, टिशू कल्चर पौधों तथा खाद्य
प्रसंस्करण में लाभकारी रोजगार हैं उत्पन्न करती॥

अधिकांश भारतीय ग्रामीण और आदिवासी आबादी
अपनी जरूरतों हेतु जंगलों पर ही है निर्भर रहती।
महिलाएं गैर-लकड़ी वन उत्पादों के प्रमुख
संग्राहक व उपयोगकर्ता के रूप में कार्य हैं करती॥

महिलाएं वनों से फल, नट, जड़ें, कंद, मशरूम,
रस, गोंद, दवाएं तथा बीज आदि एकत्र हैं करती।
निर्माण सामग्री, अंडे, शहद, फर, जंगली पत्ते तथा
कृषि उपकरण भी एकत्र महिलाएं ही हैं करती॥

महिलाएं वानिकी और कृषि- वानिकी मूल्य श्रृंखलाओं
में भी करती है समाज में अति विशिष्ट योगदान।
इन गतिविधियों से उत्पन्न आय उनके घरों की क्रय
शक्ति में वृद्धि कर देती है चेहरे पर मुस्कान॥

ग्रामीण महिलाएं मजदूरी गैर-कृषि अथवा
गैर-कृषि आय सृजन गतिविधियों में भी रहती हैं संलग्न।
पशुपालन, लघु उद्यमों, कृषि प्रसंस्करण तथा घरेलू
उद्यानों के कार्यों में करती हैं अपनी सेवा प्रदान॥

महिलाएं करती हैं टोकरी, झाड़ू, रस्सी व चटाई
बनाने, रेशम कोकून पालन, बांस उत्पादों का काम।
लाख की खेती, तेल निष्कर्षण और पत्ती प्लेट
बनाने का काम भी है इन महिलाओं के ही नाम॥

परिवार के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु
करती वे संयुक्त राष्ट्र महिला कार्यक्रम का भी हैं काम।
भारत में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार
गारंटी योजना के माध्यम से भी करती हैं वे काम॥

भारत में सरकारी कार्यक्रमों एवं योजनाओं का
उद्देश्य ही है गरीबी और बेरोजगारी को कम करना।
स्वास्थ्य व शैक्षिक स्थिति में सुधार करके उनके
भोजन तथा वस्त्र की जरूरतों को है पूरा करना॥

ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि उपयोग और उसके प्रबंधन
में भी ग्रामीण महिलाएं देती हैं बहुत योगदान।
चिपको और अप्पिको जैसे वनों की सुरक्षा हेतु कई
आंदोलनों में दिया है स्त्रियाँ ने अहम योगदान॥

महिलाओं को मृदा व पानी की गुणवत्ता का
संरक्षण और रख रखाव करने का भी भली-भांति है ज्ञान।
पहाड़ी क्षेत्रों की महिलाएं अपने घरों के आसपास के
संसाधनों के उपयोग का भी रखती हैं पूरा ज्ञान॥

खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी
महिलाएं निभाती हैं अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका।
प्रमुख अनाज, पशुधन और मत्स्य उत्पादों के
प्रसंस्करण के रूप में भी रहती है उनकी ही भूमिका॥

महिलाओं का अपनी भूमि के प्रबन्धक से लेकर
भूमिहीन श्रमिकों के रूप में भी रहता है योगदान।
गर्भवती स्त्रियाँ, वृद्ध व रोगी व्यक्तियों, बच्चों एवं
परिवारिक सदस्यों को सही भोजन करती वे प्रदान॥

कृषिरत महिलाएं हरी पत्तियों वाले साग, सब्जियों
और फलों की आपूर्ति सुनिश्चित हैं करती।
गाय-भैंस पालन से दूध तथा उसके विभिन्न उत्पाद
एवं मुर्गी पालन और बतख पालन भी हैं करती॥

जलाशयों से स्थानीय मछलियों तथा केकड़ों के
पालन से अंडों की आपूर्ति सुनिश्चित हैं करती।
इलाके के संग्रह से मशरूम व मधुमक्खी पालन
से मधु की भी आपूर्ति सुनिश्चित हैं वे करती॥

कार्यक्रम योजनाओं उपकरणों व अनुसंधान
परियोजनाओं को किया जाना चाहिए और भी विकसित।
कृषिरत कृषक महिलाओं द्वारा की जाने वाली
गतिविधियों को उनके लिए रखा जाना चाहिए आरक्षित॥

उनका सशक्तिकरण उनके मानसिक तथा बौद्धिक
स्तर के अनुसार उनके घरों से शुरू होना चाहिए।
महिलाओं को भी स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने के
लिए एक मजबूत नेटवर्क विकसित करना चाहिए॥

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु यदि उपरोक्त
सुझावों को असली जामा जो पहनाया जाएगा।
उनके गुणवत्तापूर्ण जीवन बनाए रखने में मदद के साथ,
लैंगिक असमानता व अभाव भी कम होगा॥



कृषि की धरोहरः भारतीय नारी

भूपेन्द्र सागोर

वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरू

वो भारतीय किसान नारी, कुछ भी व्यर्थ न जाने दे,
संजोए दाना, बोए दाना, संभाले घर-आँगन-खेत-गृहस्थी।
उसके हौसलों की उड़ान, आसमान को छू जाए,
उसकी ममता से सजती है, फसल की हर बाली।

मां दुर्गा का रूप धर, हाथ में हसिया लिए,
शक्ति समेटे, हल भी चलाए।
कड़ी धूप, बरसात और ठंडी हवा से वह न डरे,
फसलों की देखभाल में, बच्चों सा स्नेह करे।
हर पौधे को अपनाकर, उसे प्यार से सींचे,
तभी तो, हे भारतीय नारी, जगत जननी तम कहलाई।
प्रकृति की रक्षा, देश की धरोहर,

लहरी और राहीबाई का यह मनोबल।
डिंडोरी की लहरी बाई ने संजोया जब श्री अन्न,
राहीबाई ने बना दिया बीजों का सुन्दर महल।
हर घर जाकर सबको समझाती, जैविक खेती के लाभ बताती,
सच कहा है किसी ने, माता-रानी कई रूपों में धरती पर आती।

दशानंद के दस सर, मगर माँ दुर्गा के दस हाथ,
दस परुषों के बराबर है, एक भारतीय किसान नारी का साथ।
मिट्टी को जोतती है, मलिन वो हर रोज़ होती है,
मगर बदले में चाहती है, सिर्फ सम्मान।

शहरों की ओर बढ़े जब पुरुषों के कदम,
खेत-खलिहानों-गाँव की बागडोर संभाली हर एक नारी ने।
किसान, उद्यमी, मजदूर के रूप में, हर भूमिका में नारी,
खेती की धूल में चमचमाती उसकी साड़ी।

भविष्य में बढ़ेगी नारी की भागीदारी,
कृषि और सहायाक कार्यों में, उनकी मेहनत है जारी,
इसलिए जरूरी है, नारी की सहभागिता को समझना,
सशक्तिकरण और सतत कृषि विकास के लिए,
देश की हर भारतीय, किसान-नारी है जरूरी।



महिला किसान के सपने

श्री शक्ति प्रसाद सिंह, कक्षा - ग्यारहवी (द) (मानविकि)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (1), भुवनेश्वर, ओडिशा

खेतों में जब सूरज जागे,
पसीनों की बूँदों से सपना लागे।
धरती माँ के माटी में वो बीज बोए,
महिला किसान है, वो कभी न थके।

साँवली धूप में संघर्ष करे,
हल जोते, फसल हरे-भरे।
अपने हाथों से मिट्टी को सँवारे,
हर दाने में मेहनत के सितारे।

रात हो या दिन का उजाला,
वो मेहनत को अपना हक संभाला।
फसलें लहलहाएँ उसकी पहचान,
सच्ची मेहनत की, वो है मिसाल।

आँधी, तूफान हो या धूप की मार,
वे डरे नहीं, करे हर पार।
इसकी हर मुस्कान में छिपा एक जज्वा,
महिला किसान, उसकी दुनिया अनमोल है सारा।

भारत माँ की सच्ची सिपाही,
वो फसल की, वो रक्षक बनकर आई।
उसके हाथों में है जीवन की डोर,
महिला किसान है, भविष्य की डोर।

मैं सम्मानित हूं !

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

जीवन में हर क्षण जिसने मरना देखा,
मर कर फिर जी लूंगी।
जीकर के फिर जन्मूंगी,
सोचा मैं भी कुछ कर लूंगी।

जब जन्म हुआ मुश्किल मेरा,
सम्मान हुआ जब कम मेरा।
फिर भी थी जन्मी सहना था,
प्रारम्भ हुआ जीवन मेरा।



कम पोषण दिया गया जब था,
मन को सुनना भी सहना था।
भाई जब मेरा पूजित था,
थी ज्ञान की मेरी अभिलाषा।

मां की ममता ने साथ दिया,
माता की शक्ति प्रवाह हुआ।
संबल की देवी ने आकर,
सामर्थ्य का था उपहार दिया।

है धरती सा सम्बल मेरा,
मातारानी सा है बल मेरा।
सम्मान करूं मैं खुद अपना,
मैं पूजन करती अपना सपना।

हर ज्ञान करूं धारण कृषि-का,
हर पोषण को करती अपना।
मैं कृषिका हूं सम्मानित हूं,
सम्मान करूं मैं अब अपना।

ना पूज्य हूँ मैं, ना पूजा मांगू,
सम्मान करूं सबका अपना,
सम्मान सभी को करना है,
सम्मान सभी का हो गहना..

नारी सशक्तिकरण

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

प्रकृति की अनमोल कृति नारी को देखकर,
सभी लोग सदा ही रहा करते हैं दंग।
कामिनी, औरत, स्त्री, महिला कुछ भी कहें,
हमारे समाज का है यह अनमोल व अभिन्न अंग॥

नारी के बिना मानव का जीवन सुखी होना,
कतई संभव नहीं है एक भी पल।
नारी के बिना किसी भी समाज की,
महज कल्पना तक करना भी है बहुत मुश्किल॥

नारी की सहनशीलता, धैर्य, बुद्धि, कर्तव्य परायणता,
व प्रेम को कोई क्यों न दे सम्मान।
नारी की वाणी अत्यंत मधुर होती,
वो ममता व प्यार की होती है सागर और खान॥

केवल एक ही महिला में कितने अधिक,
अथवा अनगिनत गुण, रह सकते हैं विद्यमान।
सदियों से हर क्षेत्र में पुरुषों से बेहतर,
प्रदर्शन करके ही, नारियां बनी हैं यहाँ महान॥

प्रत्येक परिवार, समाज, शहर, प्रदेश और,
राष्ट्र का विकास, संभव बनाती है यही नारी।
बुद्धि, आदि शक्ति व सम्मान का प्रतीक,
एवं जगत जननी तक कहलाती है नारी॥

माँ के रूप में बच्चे पालती व पत्नी के रूप में,
सेविका का कार्य खुशी-खुशी करती नारी।
हर देश की आन, बान तथा शान के लिए,
वीरांगना भी बन जाती है यही नारी॥

प्राचीन समय से ही स्त्री ने दिया है,
भारतीय समाज के विकास में उल्लेखनीय योगदान।
सामाजिक कुरीतियों के जाल से,
अपनी बुद्धि से निकलकर स्त्री ने बनाई है एक नई पहचान॥

आज के युग में महिलाओं को अपने,
अधिकारों के बारे में भी मिला है बहुमूल्य ज्ञान।
अब वह अपने निजी जीवन से जुड़े निर्णय,
स्वयं लेकर पाती हैं, हर स्थान पर सम्मान॥

आज की महिला कोमल और मधुर,
होने के साथ ही साथ, है बहुत ही जागरूक।
अब वह हर अन्याय का बलपूर्वक विरोध करने में,
निडर होकर अपनी बात रखती दो टूक॥

आज भी कुछ लोग नारी को कमजोर,
तथा निसहाय मानकर साधते हैं निजी हित।
अपने अंदर की नारी शक्ति को जागृत करने पर भी,
आज भी नहीं हैं वे अति सुरक्षित॥

कुछ लोग महिलाओं को विभिन्न प्रताड़नाएँ देकर करते,
हर पल उनका महान अपमान।
सहनशीलता को त्यागकर नारी शक्ति का रूप ले ले,
तो वह ले सकती है उनकी भी जान॥

भारत का इतिहास सदा ही रहा है साक्षी,
हर बार नारी के सब्र टूटने पर महाप्रलय है आई।
आज रूढ़िवादी मान्यताएँ तथा पुरुष प्रधान विचारों पर
प्रलय की घनघोर बदली बन छाई॥

आज की केंद्र व विभिन्न राज्य सरकारों ने
नारी विकास पर केन्द्रित किया है विशेष ध्यान।
राष्ट्र विकास में अहम भूमिका निभा रही,
नारी के योगदान को सबने लिया है अब पहचान॥

भारत व राज्य सरकारों ने नारी सशक्तिकरण को लेकर,
उठाए हैं कई कदम मजबूत।
लिंग समानता की दिशा में पहल से किया,
जनता एवं सरकार के विश्वास को और मजबूत॥

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' का उद्देश्य,
सुरक्षा व शिक्षा द्वारा समाज को है बेहतर बनाना।
इसका लाभ सदियों पुरानी धारणाओं एवं प्रथाओं को,
समाप्त करने की है चाह दिखाना॥

अपने देश की संस्कृति को समझने के लिए,
महिलाओं के बारे में गंभीरता से जानिए।
बगैर नारी के विकास किए राष्ट्र विकास नहीं हो सकता,
इस बात को सदा सत्य मानिए॥

आदि शक्ति, सम्मान, गौरव तथा अभिमान,
इन सभी का बस नारी ही है एक नाम।
जगत जननी स्त्री द्वारा रचित इस संसार में,
नारी शक्ति को है मेरा शत-शत सादर प्रणाम॥

नारी : कृषि शक्ति

श्री आभास महापात्र, कक्षा - बारहवीं (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (3), भुवनेश्वर, ओडिशा

निर्जला शुष्क-सी धरती पर,
कृषि जगत जब कुंभलाती है,
तब घटाटोप अंधियोर में,
महिला अपना सामर्थ दिखलाती है।

हाथों में बीज और मन में उमंग,
कृषि की देवी, नव-स्वप्न सजाती,
हरियाली की चादर बिछाकर वहाँ,
जीवन की राग, वह धरती से बनाती।

बीज से अंकुर, फसल से अनाज,
हर कदम पर उसका समर्पण साफ,
कभी माँ, कभी बहन, कभी बेटी बन,
धरती से उपजाए, सोना अनूप।

मिट्टी की महक, पसीने की बूँद,
नारी के श्रम से बनती यह धुन,
कृषि में उसका अमुल्य योगदान,
देश की आत्मा है, उसका यह जुनून।

कृषि की धारा में बहती नारी,
बीज बोते हाथ जो कभी न हारी,
फिर क्यों नहीं उसे भी किसान कहतै ?
फिर क्यों उसकी आवाज दबाते ?

धरती को सींचती, अपने मेहनत से,
हर फसल से बुनती स्वयं की कड़ी,
पर पुरूष का नाम लिखा हर दस्तावेज में,
और नारी कृषक का नाम खोया, वक्त की परछाई में।

चीत्कार उठा था आर्तनाद,
अनुभूती हृदय की विदारक थी,
जीवन अंतर्तल में हाहाकार,
दास्ता महिला कृषक की घातक थी।

आहुती कठोर निर्मम थी यह,
पर जग को जागृत करा गई,
शोषन, दोहन कृषक का न ही,
यह बात विश्व को सिखा गई।

हो आज या कल अस्तित्व सदा जीवित रहेंगे,
महिला कृषक के सामर्थ के द्योतक सदैव उनके परिश्रम रहेंगे,
यह नश्वर तन-बदन चाहे चला जाए,
नारी किसान अपना परिचय स्वयं बोलेंगी।

आकृति - प्रकृति

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

सिंघाड़े की खेती, है पोखर में होती।
स्वाद निराला, है कंटक भी होती।
हरी लाल आकृति,
तिकोनी है प्रकृति।

पुष्टि बहुत है पर,
कंटक के कारण,
कृषिका हमारी को,
मेहनत कड़क है।

करो आंसा कटाई, बनाओ टूल (औजार) भाई,
सुनो वैज्ञानिक भाई,
सस्ता बनाना, छोटी आकृति देना,
हर कृषिका के, हर घर तक पहुंचाना,
संकल्प सिद्धि है सबको जरुरी, ये संकल्प लेना, ये संकल्प करना।



ना सिर्फ कटाई,
है क्षति को बचाना।
निराले स्वाद को है,
जन-जन तक पहुँचाना।

प्रसंस्करण बताओ,
अवधि को बढ़ाओ।
कृषिका की मेहनत का
है पूरा मूल्य दिलाना।

आप चाहो तो खाओ, फुल्का भी सुहाना।
कुछ शुष्कन को करके, सिंघाड़े सभी में,
सरलता से चाहो,
हो मिश्रण बनाना।

बढ़े आय कृषिका,
क्षति भी बचेगी।
सिंघाड़े के जीवन की,
गाथा सुनाना।

हर्षित हो भाई, सभी खाए माई।
कच्चा सिंघाड़ा हो, उबला पकाना।
सुखाना अगर हो, फिर बिस्किट बनते
है लड्डू भी बनता, चाहे जो सोचो उससे।

सिंघाड़ा भरेगा, पौष्टिकता सभी में,
कृषिका ने जाना है, सबको बताना।
सिंघाड़े के जीवन की, गाथा सुनाना,
सदा हंसते रहना, सदा मुस्कुराना, सिंघाड़े के जीवन की, गाथा सुनाना ....

परिश्रम चाय बागान में

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

ऊंचे पहाड़ों पर,
पत्थरों की फिजाओं में,
चमक मैने बिखेरी है।
चाय के बागानों में।

हरे बागानों की अनुपम छटा,
हरित हरियाली की अनुपम आभा।



आभार उन ठेकेदारों का
जो चुना चाय व्यापार करने का।
हमारी भी किस्मत जागी है,
मिला रोजगार सभी किरदारों का।

पत्तियाँ भी मुस्काई हैं,
मिला साथ सभी परिवारों का।
करती सेवा सभी बागानों की,
तोड़ूँ पत्ती सभी, डाली-डाली की।

सिर पर आंचल रखूं,
साथ डाली (डलिया) भी।
ढोती बोझा सभी,
साथ थाली भी।

हरे पत्ते लिए, फिर सूखे किये,
सूखे पत्तों को, फिर मैंने छोटा किया।
छोटे टुकड़े लिए, उनको सूखा किया।
सूखा करके सभी ने, फिर ग्रेडिंग किया।

भूना था फिर जरुरी,
और पैकिंग किया।
मिश्रित फ्लेवर करूं,
तुमको चाहा दिया।

साथ रहती हूं हर पल,
करूं गति-विधी।
चाय-चाय के कण में
खुशबू फ़ैली हुई।

मैं हूं कृषिका,
खुशी देती सबको सदा।
खुशी देती सदा,
मैं सबको नयी।

चाय हो या नई,
या फिर हो ये पुरानी।
हर चाय की अपनी,
निराली कहानी।

वाह हो ताज,
या बाघ बकरी कहूँ।
टाटा तुमको मिले, टाटा सबको खिले,
रेड लेबल की अपनी कहानी यही।

करके मिश्रण मैं, देती हूँ वेदों का सार।
उसमें उम्मीदें भरती, नयी यादगार।
अदरक, मिश्री, मुलेठी और तुलसी के गुण।
खूब भाते सभी को हैं सर्वोत्तम।

कृषिका मिश्रित करे, हर ख़ुशी जानकर।
परिश्रम को करती, सफल मानकर।
सफल होता परिश्रम, सदा ही सही।
परिश्रम सफ़लता की, अंतिम कड़ी।

चाय पीते चलो.....
न्याय संगत करो.
मेरी कृषिका को सारी दुआएं मिले...
रहे हरदम हमेशा, खुश फूले फले...

स्वयं सहायता समूह

सुश्री आयुसी बारिक, कक्षा - नौवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (3), भुवनेश्वर, ओडिशा

गाँव की गली, घर की दीवार,
महिलाएँ मिली, बनाया नया संसार,
स्वयं सहायता समूह, एकता का प्रतीक,
आत्मनिर्भरता का रास्ता, ये बनती नदी की धार।

किसानों की बेटियाँ, गृहणियाँ,
सब मिलकर मिली, नई पहचान।
बैंक से ऋण लेकर, धंधा शुरू किया,
आत्मनिर्भर बनकर, समाज को दिखाया।

बागवानी, पशुपालन, हस्तशिल्प,
सब कुछ सीखा, बढ़ाया अपना दायरा।
मिलकर काम किया, एक दुसरे का साथ दिया,
आर्थिक रुप से सशक्त हुई, ये महिलाएँ।

बच्चों की पढ़ाई, घर का खर्च,
सब कुछ संभाला, बड़ी आसानी से।
समाज में सम्मान मिला, बढ़ा उनका मान,
स्वयं सहायता समूह, बन गया जीवन का आधार।



संकटो से लड़ी, डटकर खड़ी रही,
सपनों को साकार किया, नई ऊचांइया छुई।
स्वयं सहायता समुह, महिला सशक्तिकरण का सागर,
बदल रहा है समाज, एक नया अध्याय।

“महिलाओं का संगठन, एक नई पहचान,
स्वयं सहायता समूह, उम्मीद की किरण”

कृषक - नर या नारी

सुश्री ओमकिता नायक, कक्षा - बारहवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (3), भुवनेश्वर, ओडिशा

कौन है एक कृषक ?
क्या केवल वही जो कृषि करें
या है वो परिभाषा से परे
केवल वो जो फल उगाए
या है वो जो हल चलाए।

नहीं, इतना संक्षप्ति नहीं है इसका विवरण
जो उगाए रण से स्वर्ण,
कम पड़ेगे वर्ण करने में विवरण।

एक कृषक वो है जो फसल उगाए
वह भी पशु चराए,
वह भी जो मछली पाले
वह भी जो हैं ग्वाले।

नर हो या नारी
कृषक कोई भी हो सकता है
फिर क्यों कृषक कहने पर,
एक पुरूष का विचार आता है।
देखा जाए तो,
देखा जाए तो, योगदान ज्यादा है नारी का
श्रम, परिश्रम परम धर्म है उसका।

कौन कहता नारी है बेचारी,
वो तो है सबकी हितकारी।
जो धर को संभालती है
वो खेतो भी करती है।

कृषि हमारे समाज की नीव है
जो लोगों का पेट है भरता
आओ मिलकर उन्हें समझते

आज से खाने से पहले
नमन जरूर करना
कृषक रूपी इश्वर का ध्यान जरूर धरना
उनका आभार जरूर व्यक्त करना ॥



किसान महिलाओं का संघर्ष

सुश्री आकांक्षा बेहेरो, कक्षा - दसवी (ब)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (5), भुवनेश्वर, ओडिशा

धूप पे तपती है, बारिश में भीगती,
धरती की माटी से जीवन सींचती।
फसले उगाती, सपने सजाती,
धरती माँ की सच्ची साथी।

हल चलाना हो या बीज बोना,
काम में कभी न रुके, न ही रोना।
अपने घर-परिवार की ताकत,
वो किसान महिला, देश की चाहत।

सहनशीलता उसकी पहचान है,
परिश्रम ही उसकी मुस्कान है।
फसलें काटती जब हाथों से,
सृष्टि का सृजन उसके साथ है।

किसानी भी करवाती है,
किसान को खाना भी खिलाती है।
लौटते वक्त जानवरों के लिए चारा भी बाँध लाती है,
पर लौटते फिर से सारे काम दोहराती है।

यह महिला किसान है,
ये किसान का पेट भरती है।
हाँ! महिलाएँ भी किसान होती है।

फसलें और महिलाएँ : एक साझेदारी की कथा

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

भोर की पहली किरण संग, अपने खेतों की ओर बढ़ती।
कृति के हर रूप-रंग को खुद अपने हाथों से ही गढ़ती॥
लहलहाती फसलों सुनाती हैं उनकी मेहनत की खनक।
साधारण होने के बावजूद अद्वितीय होती है उनकी महक।

जब खेतों में वे चलती, तो लगता है ऐसे।
धरती पर छाई हरियाली की परी हो जैसे॥
किसान की संगिनी बन, खेतों को सजाती।
सजीव प्रकृति में वो अपने सपने पिरोती॥

प्राचीन परम्पराओं से बंधी, वो हैं आगे बढ़ती जाती।
फसलों की हरियाली में ही वे अपनी पहचान बनाती॥
कठिन संघर्षों से भरी राह पर कदम वो जो हैं बढ़ाए।
अपने दृढ़ निश्चय से प्रत्येक चुनौती को सहर्ष अपनाए॥

सावन की पहली बौछार में वे हैं नाच उठती।
वर्षा की बूंदों संग ही अपने सपनों को सींचती॥
उनकी ममता से धरा भी हरी-भरी है हो जाती।
प्रकृति के रंग में रंगीनी की सौगात हैं लाती॥

धरती की गोद में सपने संजोती, मेहनत की मूरत।
हर फसल की हरियाली में बसी है उनकी मन्नत॥
पसीने की बूंद-बूंद से सिंचित खेतों की ये कहानी।
हर एक बूंद में बसती है उनके हौसले की रवानी॥

संवेदना व शक्ति की जीवंत प्रतिमा हैं स्त्री वो।
प्रकृति के संग चलकर नए सपने बुनती हैं वो॥
हर कठिनाई को हंसकर स्वीकार करती हैं वो।
धरा से जुड़कर जीवन का संगीत रचती हैं वो॥

रोटी की महक, और फसल की सुगंध फैलाती।
प्रकृति के हर रंग में अपने सपनों को सजाती॥
खेती की चुनौतियों को हँसकर स्वीकार करती।
प्रकृति से नाता जोड़, नई-नई उम्मीदें बुनती॥

हरे खेतों में स्वर्णिम सपने बुनती हैं महिलाएँ।
मेहनत से धरती को देती हैं जीवन महिलाएँ॥
बीज बोने से फसल कटाई तक की ये कहानी।
हर कदम पर दिखती उनके हाथों की निशानी॥

खेतों में पसरी सुबह की ओस की चमक।
उनके संकल्प की है यह अद्वितीय दमक॥
हल चलाकर जीवन का संचार वे करती हैं।
हर मौसम में धरती को संवेदन करती हैं॥

मौसम की मार तो कभी संसाधनों की कमी।
हर कठिनाई से लड़कर वो है जग में चमकी॥
कृषि के हर क्षेत्र में है योगदान उसका महान।
बिना उसके अधूरा है प्रत्येक कृषि अभियान॥

इस कविता से नमन है उन महिलाओं को।
जो धरती को सीचकर नए सपने बुनती हैं॥
उनके बिना अधूरी है कृषि की पूरी कहानी।
उनकी मेहनत से ही है पूर्ण सबकी जिंदगानी॥

हर गाँव की अर्थव्यवस्था में देती हैं योगदान।
उनके बिना सच में अधूरी है कृषि की पहचान॥
धरा से आसमान तक फैला है उसका सम्मान।
भारतीय महिला कृषक है, नवयुग की पहचान॥

सृजन और साहस

श्री अर्णव दाश, कक्षा - सातवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (5), भुवनेश्वर, ओडिशा

कृषि की धरती, हरियाली की छाया,
महिलाओं की मेहनत, है इस पर भव्य माया।
सूरज की किरणों में, बूँदे हैं सोने सी,
धरती की गोद में, सपनों की रेखा जोड़ी सी।

खेतों में चलती, जब उनकी पगध्वनी,
फसलें महकती हैं, जैसे बहे जीवन ध्वनि।
बीज बोने से लेकर, फसल के बंटवारे तक,
हर चरण में है उनका, अनमोल योगदान नेक।

रोटियाँ गूंधती और बुआई का करती काम,
संतान के पालन में, बनती है वो पहचान।
हर कठिनाई में सहारा, हर सुख-दुख का साथी,
कृषि की आत्मा, हैं वो कभी न होंगी थकती।

सिर्फ कड़ी मेहनत नहीं, ज्ञान की भी है रूप,
पंरपराओं से लेकर नई तकनीकों का सूप।
समाज की धुरी हैं, जब खेतों में लगे हाथ,
महिलाएं हैं शक्ति, उनका हर कदम है सार्थक बात।

असंख्य मुश्किलों में भी वो चलती हैं आगे,
अपने हक के लिए, लड़ती हैं धैर्य से आगे।
कृषि की राह रंगमंच, उनके बिना अधूरा,
महिलाओं को मेहनत से, हर सफल है पूरा।

संगीनियों की जिद, और मिट्टी की महक,
कृषि की कहानी में उनका नाम है रेख।
आओ मिलकर मनाएं, मिलकर इस विजय का जश्न,
कृषि में महिलाओं का, है सदा सम्मान और यश।

नमन नारी को

मो. खालिद रज़ा

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

धरती की गोद में बसा है,
नारी का स्नेह, उसका प्यार,
वो बोती है जब उम्मीद के बीज,
हरियाली होती है उसका उपहार।

सुबह की रौशनी से पहले,
वो धरती को माँ सा सहलाती है,
अपने पसीने की बूँदों से,
फसलों को नवजीवन दिलाती है।

हरियाली उसके श्रम का गीत,
फसलें उसकी मेहनत का मीत,
धरती पर जो लहराए सोना,
वो नारी का है अनमोल सपना।

हल चलाए या बीज बोए,
उसके हाथों में जादू है,
उत्पादकता की हर नई फसल,
उसकी शक्ति का प्रतीक है।

सतत विकास की राह पर,
उसका संकल्प अडिग खड़ा है,
धरती के हर कोने में बसे,
उसके सपनों का नया पता है।

जल, जंगल, और जमीन का संग,
उसके हृदय में गहराई से बसा है,
संतुलन की जब भी हो बात,
नारी का योगदान सबसे बड़ा है।

उसकी मेहनत से लहराए खेत,
धरती गाए उसकी तारीफ के गीत,
किसान सिर्फ पुरुष नहीं,
नारी भी है इसका अहम हिस्सा- अधूरी नहीं।

वो खेतों में हल्की बारिश है,
सूखी मिट्टी में जीवन का बंधन है,
हर पौधे की जड़ से लेकर,
सतत विकास का वो कंधा है।

न केवल उत्पादन बढ़े,
बल्कि खुशहाली की नई कहानी गढ़े,
नारी की इस शक्ति से धरती,
सपनों का नया आसमान रचे।

उसकी मेहनत को सलाम करें,
कृषि में उसका योगदान महान है,
सतत विकास की जब भी हो बात,
नारी ही धरती की असली पहचान है।

तिरंगी अभिलाषा

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

हर गली हर मोहल्ले में,
हर घर की छत पे,
है मान को बढ़ता,
है शान ये तिरंगा।

हर मन में, हर तरंग में,
हर उमंग में, हर रग-रग में,
आन-बान को बढ़ता,
है शान ये तिरंगा।





लहराए हर फ़िज़ा में,
है शान को बढ़ाता,
हमारी हर शान की
है शान ये तिरंगा।

घर घर हो तिरंगा
दर दर हो तिरंगा
मन की हर स्वांस में,
हर स्वांस की हर आस,
है शान ये तिरंगा।

कृषिका है आस करती,
हर खेत में लहराऊँ,
हर बाली-बाली में,
मैं जोश भरती जाऊं।

हर दाना मेरा जोश में,
है श्वेत की पवित्रता।
हरित धारा समृद्धि की,
अभिलाषा सम्पन्नता।

लहराऊँ तिरंगा मान से,
हर आन-बान शान से,
फुल जोश में सदा रहूं,
संमृद्धि को सदा चुनूँ।

रखती कदम मैं शान से, करती नमन मैं मान से।
रखती सदा मैं साथ हूँ, ये शान ये तिरंगा।

जय हिन्द, जय भारत, जय माँ भारती।

मन झंकृत है-I

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

आँखों में चमक, वाणी में चहक,
मन झंकृत है, खुशियों में महक।
कृषिका कहती आशान्वित हूँ, हूँ आशावादी,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।

सपने मन में सजते कृषिका,
हर ध्येय मुखर कहता हर पल,
तुम श्रेष्ठ सही, संकल्पित हो,
हो सिद्ध सभी, संकल्पना कर।
कृषिका कहती, आशान्वित हूँ, हूँ आशावादी,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।





मन वाह वाह, मन बाग-बाग,
कहता दिल का, हर विचार वार।
मन झंकृत है पकड़े पल को,
मन कोशिश है पकड़ें पल को,
कृषिका कहती, आशान्वित हूँ, हूँ आशावादी,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।

हे इश्वर तुम हो पास सही,
हे इश्वर तुम हो पास यहीं।
ये सत्य यही, ये सत्य सही,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।
कृषिका कहती, आशान्वित हूँ, हूँ आशावादी,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।

मन नृत्य करें, मन पुलकित है,
सब कृषिका देख, चकित खुद है।
हृदय प्रवाहित स्नेह रक्त से,
हरित हुयी सब, ऊतक रग-रग,
हरित हुयी सब, ऊतक कण-कण
कृषिका कहती, आशान्वित हूँ, हूँ आशावादी,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।

हे इश्वर तुम, सबको खुशकर, हे प्रकृति, तुम हरित छटाकर।
धरती तुम हो, धन्य सदा, तुम करती सबको, तुष्ट सकलतम।
मन झंकृत है पकड़े पल को, मन कोशिश है, पकड़ें पल को,
कृषिका कहती, आशान्वित हूँ, हूँ आशावादी,
सब सत्य सही, सब लक्षित है।

सब सत्य सही, सब लक्षित है, सब सत्य सही, सब लक्षित है

मन झंकृत है - II

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

मन झंकृत है, मन पुलकित है,
कण-कण सुन्दर आल्हादित है।
चहुँ ओर नजर देखो कृषिका,
करती फसल प्रफुल्लित है।

कृषिका की मेहनत देखो,
है रंगती क्यारी-क्यारी है।
धान सुनहरी, पीला सब,
सरसों प्यारी प्यारी है।



गेहूँ हंसता, बाली हँसती,
चावल की है बात नई,
कृषिका करती रोपण सबका,
हर खेत कटाई भी करती।

मन झंकृत है, पीली सरसों,
खिलती चारों ओर सही।
गुण से भरपूर फसल सारी,
करती कृषिका थ्रेशिंग सब्जी।



मन झंकृत भंडारे देखे,
रखती ख्याल हर द्वारे देखे।
कृषिका तुम तो हो, एक अनोखी,
पहल तुम्हारी सारे देखें।

मन झंकृत होके देवे दुआएँ,
खिलो सदा तुम सारे देखें।
कृषिका तुम हो एक अनोखी,
पहल तुम्हारी सारे देखें।

भंडारण भरते रहना तुम,
झंकृत मन करते रहना तुम।
मान बढ़ाकर अपना सबका,
मन को झंकृत, करते रहना तुम।

सलाम तुम्हारी मेहनत को
मन बाग बाग, सब पुलकित, सब कण।
है झंकृत देश,
सकल कण-कण, मन,

मन झंकृत है, तुमको देखे।
मन झंकृत हो, तुमसे सीखे,
नत मस्तक हो, तुमको देखे।
नत मस्तक हो, तुमसे सीखे।

झुकता तुमको, सबका मन,
है झुकता तुमको, सबका दिल।
दिल बाग़-बाग है, पुलकित तन,
दिल बाग़-बाग है, पुलकित मन।

हर मन पुलकित, हर मन झंकृत,
हर कण पुलकित, कण-कण झंकृत,
चहुँ ओर नजर, देखो कृषिका,
हर घर पुलकित, हर घर झंकृत।

कण-कण सुन्दर, आल्हादित है,
कण-कण चहुँ ओर, प्रफुल्लित है।
करती नमन हूँ, कृषिका को,
आशान्वित हूँ, सब लक्षित है।

सब सत्य सही, सब लक्षित है,
हूँ हर्षित और प्रफुल्लित हूँ,
कण-कण सुन्दर देखो कृषिका,

कृषिका देखो, सब सत्य सही, सब सत्य सही, सब लक्षित है ....

नारी नहीं है कम

सुश्री अर्पिता महापात्र, कक्षा - बारहवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (5), भुवनेश्वर, ओडिशा,

हरे-भरे ये खेत लहराते, हरे-भरे ये खेत लहराते,
मातृ शक्ति का प्रदर्शन, अन्नदान से करती,
नारी शक्ति दिखाने में, कोई कसर न छोड़ती ॥

हरे-भरे ये खेत लहराते,
नूतन कल्पना के बीज उगाते,
बीज अकुंरित करती है वो,
नवजात की जन्मदाता है वो ॥

नारी किसी पर भारी नहीं, हर काम में वो एक ताल बिठाती,
खुशी-खुशी वह नाचती गाती, खेतो में हरियाली लाती ॥

फसल के भाँति इस चंचल मन को,
धकेला गया, रौंदा गया,
तब जाके धरती माँ ने अपना,
आँचल विराट फैलाया ॥

नारी कंधों पर भार लिए फिरती है, खेतो की धरती चीरती है,
समाज को आइना दिखा, माटी पर बढ़े चली जाती है ॥

हरे-भरे ये खेत लहराते,
नारी कभी नहीं कम कहलाती,
कृषक बनके भी आगे बढ़ती,
नहीं कभी यह पीछे हटती,

आओ इन्हें सशक्त बनायें, आत्मनिर्भर के पंख लगायें,
हरे-भरे ये खेत लहराते, हरे-भरे ये खेत लहराते ॥

मैं नारी हूँ

सुश्री अनुश्री रथ, कक्षा - दसवीं (ब)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (6), भुवनेश्वर, ओडिशा

कृषि से लेकर बागवानी, मछलीपालन से पशुपालन,
हर जगह किया है नारी ने अपने नाम का ऐलान,
उसके बिना यह धरती अधूरी, उसकी मेहनत से हरी-भरी,
नारी के बिना, यह सारे क्षेत्र बस हैं एक अधूरी कहानी।
सम्मान दो उसे जो हर काम को आगे बढ़ाती है,
कृषि और पशुपालन में, नारी सदा हमें प्रेरित करती है।

खेतों में हरियाली, बागों में रौनक सारी,
नारी के बिना अधूरी, यह मेहनत की पिचकारी,
हल चलाती, बीज बोती, मिट्टी से रिश्ते जोड़ती,
धरती की ममता में अपने सपने है संजोती।
गर्व है मुझे मैं नारी हूँ, अकेले ही सब पर भारी हूँ।
कृषि का हर रंग मेरे हाथों से ही खिलता,
मेरी मेहनत के बिना यह जीवन कैसे आगे बढ़ता।

तोड़ के हर पिंजरा, जाने कब में उड़ जाऊँगी,
चाहे लाख बिछालो बंदिशें, फिर भी दूर आसमान में अपनी जगह बनांऊगी।
खेतों से लेकर बागों तक, हर जगह मेरा है नाम,
मेरी उड़ान की ऊँचाई से हर कोई होगा हैरान।

बागों की खुशबू में उसकी मेहनत की कहानी,
फूलों से लेकर फल तक, बगिया उसकी निशानी।
हर पौधे की जड़ में उसकी ममता समाई,
पेड़ो की छाँव में, उसकी ताकत छिपी है भाई।

आस्था है, विश्वास है, प्यार है नारी,
हर नाव को पार लगाती, पतवार है नारी।

पशुपालन की राह पर भी, नारी का है डंका,
गाय, भैंस, बकरी, वे भी चराती बिना कोई शंका,
पशुओं के साथ उसकी ममता, सजीवता का प्रतीक,
उसके बिना यह क्षेत्र है जैसे अधूरा संगीत।

बाँधे एक डोरी से सारा परिवार है नारी,
जीवन का हम सबके, आधार है नारी।



सतत कृषि विकास में महिलाओं की भागीदारीः एक कवितामयी दृष्टिकोण

डॉ. संग्या सिंह, डॉ. दीपा विनय,
डॉ. सीमा क्षात्रा एवं डॉ. पूनम तिवारी
अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना (कृषिरत महिलाएं), गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर

नारी का संघर्ष, कृषि में उसकी भागीदारी,
धरती से जुड़ी है उसकी कहानी सारी।
बीजों से अंकुरित होते, सपनों के प्यारे फूल,
मिट्टी की गोद में, बुनती है नई धरती का उसूल।

कड़ी धूप में जलती, बरसात में भीगती,
हर मौसम को सहती, नारी की मेहनत सीगती।
हल की नोक से लिखती, अपनी तकदीर नई,
कृषि में उसकी भूमिका, हर खेत में खिली।

जैविक खेती का सच्चा ज्ञान, उसके हाथों में बसा,
प्रकृति संग तालमेल, उसका दिल हमेशा हँसा।
प्रदूषण से मुक्त, हरित क्रांति का संदेश,
नारी की कृषि में भूमिका, देती है नव-संदेश।

समृद्धि की राह पर, कदम-कदम बढ़ती है,
तकनीकी ज्ञान से, हर मुश्किल को सुलझाती है।
स्वावलंबन की मिसाल, समाज को दिखाती है,
नारी की शक्ति से, कृषि में नई क्रांति लाती है।

सशक्तिकरण की दिशा में, बढ़ता उसका सफर,
हर खेत, हर बाग में, नारी का है अमर।
कृषि में महिलाओं की भागीदारी, एक नई रीत,
उत्पादकता और स्थायित्व की, बनती वह प्रीत।

नारी का योगदान, कृषि की रीढ़ है,
उसकी मेहनत और लगन, धरती की नीड़ है।
हरियाली और खुशहाली, उसकी ही देन है,
कृषि में नारी का योगदान, अनमोल रत्न है।



कृषि में नारी शक्तिः उत्पादकता और प्रगति की नई राह

डॉ. संग्या सिंह, डॉ. दीपा विनय,
डॉ. सीमा क्षात्रा एवं डॉ. पूनम तिवारी
अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना (कृषिरत महिलाएं), गोविंद बल्लभ पंत
कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर

कृषि की धरा पर नारी की शक्ति,
उपजाऊ खेतों में रचती एक नई वृत्ति।
संकटों का सामना, जिजीविषा का आलंबन,
प्रगति के पथ पर, बनती आदर्श संदर्भण।

हल हाथों में थामे, धरती का करती श्रृंगार,
कड़ी मेहनत से भरती, अन्न का भंडार।
सूरज की गर्मी, बारिश की बूंदें सहती,
सपनों की फसल, मेहनत से यह बोती।

उत्पादन बढ़ाने को, विज्ञान का करती प्रयोग,
नई तकनीकों से करती, हर समस्या का संयोग।
सतत विकास के लिए, रखती पर्यावरण का ध्यान,
धरती माँ को देती, अपनापन का सम्मान।

ग्राम्य जीवन की नींव, नारी का अटूट प्रयास,
हर बीज में बसती, उसकी मेहनत का प्रकाश।
संघर्षों में मुस्कान, परिश्रम में उसकी पहचान,
कृषि में नारी की भागीदारी, देश की सच्ची जान।

सशक्तिकरण की राह पर, बढ़ती उसकी पहचान,
नए आयाम गढ़ती, समाज को देती नई दिशा और जान।
महिला की भूमिका से, हर खेत में हरियाली,
कृषि के क्षेत्र में लाती, सच्ची समृद्धि और खुशहाली।

देश को चलाने वाली

सुश्री अन्वेषा महापात्र, कक्षा - ग्यारहवी (विज्ञान)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (6), भुवनेश्वर, ओडिशा

वे सब्जी बेचती हैं,
वो फसलें उगाती हैं,
धरती से सोना उपजाने वाली,
वो महिला किसान ही हैं,
जो देश को चलाती हैं।

हो कड़कती धूप, हो चाहे रात बरसातों की,
गन्ने की खेती में, फिर भी वो पसीना बहाती हैं।
फसलें काटती हैं, गठरी उठाती हैं,
वो महिला किसान ही हैं,
जो देश को चलाती हैं।

आधुनिक युग में अग्रसर वो,
वैज्ञानिक पद्धति का करें पालन,
सिंचाई हो या उर्वरक उत्पादन,
हो चाहे पशुपालन।

छत्रक की खेती हो, या हो मछली पालन,
पुरूषों से दो कदम आगे रहने वाली,
वो महिला किसान हीं है,
देश को चलाने वाली।

भारतवासी याद करो, उन मिसालों को,
कमला पुजारी हो चाहे विनीता कुमारी को,
युगों-युगों से, हर पग-पग में,
जिसने रास्ता दिखाया है,
भारत नाम की इस भूमि को,
स्वर्ग सा सुंदर बनाया है।

देश में प्रगति लाती,
हैं फिर भी वो कितनी लाचार,
भूखे पेट काम करना,
खून से पसीना बहाना,
ना सोचा आराम का एक बार।

चलो करते आज यह प्रण हम,
हक व इज्ज़त दिलाना है,
कृषिक्षेत्र में महिलाओं को भी,
सम्मान वापिस दिलाना है।

कृषि, बागवनी और पशुपालन में महिलाओं की सहभागिता

सुश्री राजश्री साहु, कक्षा - आठवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (6), भुवनेश्वर, ओडिशा

खेतों में धूप, हवा में खुशबू,
महिलाओं के हाथों में, कृषि का जादू।
बीज बोती, पानी देती,
फसलें पालती, जीवन संवारती।

बाग में फूल, फूलों में रंग,
महिलाओं के चहरों पे, ला रही उमंग।
मधुर सुगंध, रंगो का खेल,
स्वाद और स्वास्थ, प्रकृति की मेल।

खेतों में, बागों में, पशुओं के साथ,
महिलाओं की भागीदारी, जीवन में हाथ।
पशुओं की देखभाल, प्यार और स्नेह,
महिलाओं की शक्ति और योगदान अमूल्य।

महिलाओं की भूमिका, अमूल्य और महान,
महिलाओं की सहभागिता, समाज का मान।
महिलाओं की ताकत, अब सबको दिख रही,
हर क्षेत्र में अब वो, आगे बढ़ रहीं।

दादी की गाय

श्री स्वाधीन स्वरुप नायक, कक्षा - छठी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (6), भुवनेश्वर, ओडिशा

रोज सुबह उठकर दादी,
पहनती बिलकुल भूरी खादी।
रोज दादी गौशाला जाती,
और गोबर साफ करती।

तालाब ले के जाती गाय को,
नहलाती उस गाय को।
बछड़े को भी ले जाती,
और उसे भी वहीं नहलाती।

चले जाते सब मैदान को,
घास खिलाने गाय को।
दादी पेड़ के नीचे आराम करती,
फिर शाम को घर लौट आती।

दादी गाय से दूध निकालती,
कुछ बछड़े के लिए भी छोड़ जाती।
कुछ हमें भी पीने देती,
और कुछ बेचकर पैसे लाती।

धरती की फुलवारी

स्वयंश्री मल्लिक, कक्षा - नौवी (ब)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (6), भुवनेश्वर, ओडिशा

धरती जैसी माँ बने,
सीचें खेत हजार,
मेहनत से हर बीज को,
दे अन्न का उपहार।

किसान नारी, धरती की फुलवारी,
हाथों में ले भविष्य की क्यारी,
मेहनत से दे वो स्वर्णिम भंडार,
हर बगिया को करे गुलजार।

दो हल की धारा, बैलों की जोड़ी,
खेतों की भाग्यविधाता बनी,
अन्नपूर्णा वो कहलाए,
जीवन को नित नया बनाए।

वह धरा सी धैर्यवाली,
कर्म में लिप्त नारी है,
खेती की है शान वही,
जो सृजन की अधिकारी है।

बीज से फसल उगाए,
धूप-छाँव मे डटी रहे,
मेहनत की मूरत बनकर,
मिट्टी से सोना गढ़े।

हल चला दे या जल दे,
हिम्मत का पर्याय वही,
खेतों की खुशहाली की,
वो चुपचाप दुआ बने।

उसकी ममता की महक से,
बगिया हर दिन निखरती है,
कृषि और बागवानी में वो,
अपना श्रम अमर करती है।

उसके स्पर्श से पत्ते हरे,
उसकी मेहनत फसल झूमें,
हर दिन नये सपने बोती,
अपना जीवन खुशहाल करती,
नारी का ये श्रम निरंतर,
धरती को स्वर्ग सा सजाती।

नारी का योगदान ये,
खेती की जो रीढ़ बने,
सृष्टि के संग कंधे से,
जीवन रथ का पहिया बने।

धरती माँ की गोद में,
सृजन का दीप जलाए,
कृषि और बागवानी में,
इतिहास रचाए।

खेतों की वीरांगनाएँ

सुश्री तनीशा साहू, कक्षा - नौवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (6), भुवनेश्वर, ओडिशा 2

सूरज के साथ निकलती है वो,
फसलो के सपने संजो कर चलती है वो।
पसीने से सीचें धरती का आंगन,
स्नेह से भर दे हर एक जीवन।

खेतों की मिट्टी से जुड़ी हर कहानी,
महिलाएँ लिखती अपनी नई कहानी।
हल चलाए या बीज बोए हाथ,
उनकी मेहनत से खिलते हैं हर साथ।

सुबह से शाम करती मेहनत का काम,
मेंहदी वाले हाथों से सबका दान।
गेंहु, चावल या फिर हरियाली का रंग,
उन्हीं के संग जीवन का हर एक अंग।

खेत में कभी बारिश, कभी धूप की छाँव,
महिलाएँ सँभालती, लाती हर मौसम का भाव।
उनका योगदान, है कृषि का आधार,
जीवन को देती, है विकास और प्यार।

महिलाएँ रही हैं खेती है हर साथ,
उनके हाथों में जीवन का विश्वास।
बीज से फसल तक रखती है ध्यान,
धरती को बनाती सबका कल्याण।

ना थके कदम, ना रूकती है राह,
महिलाएँ है कृषि की सच्ची चाह।
उनके बिना अधूरा हर एक जीवन,
खेतों की शान, भारत की पहचान।

ये है हमारी प्राचीन ग्रामीण नारी

डॉ. विशाखा बंसल

अखिल भारतीय समन्वित कृषिरत महिला अनुसंधान परियोजना

म. प्र. कृ. प्रौ. वि. उदयपुर

पायल की रुनझुन,
कंगन की खनखन,
बच्चों की किलकारी,
आंगन में तुलसी की क्यारी,
ये है हमारी ग्रामीण नारी ॥

सूरज की पहली किरण,
गाय बुलाती उसको रंभाकर,
दाना - चारा, पानी डालकर,
आंगन को बुहारती,
चूल्हे में लकड़ी सुलगाती,
स्नेह से रसोई बनाती,
ये है हमारी ग्रामीण नारी ॥

चलती जाती खेत के धोरों में,
सर पर रखकर धान टोकरी,
चली खेतों में देखों भरने
अब वो अपनी हाज़री,
क्यारियों को निहारती, दुलारती,
दिन ढलते फिर चली जाती,
सर पर रखकर चारे की गठरी,
ये है हमारी ग्रामीण नारी ॥

गांव के कुएं और पनघट,
सुनते कहानी हर नारी की,
जीवन गाथा गा सुना कर,
करती देखो हंसी ठिठोरी,
चलती फिर पगडंडी पर वो
सर पर रखकर पानी की गगरी
ये है हमारी ग्रामीण नारी ॥ ।

साँझ हुई घर में दिया जलाकर,
फिर बैठी करने चूल्हा चौका पाटे पर,
खिलाकर अपने हाथों की रसोई,
धन्य हुई इक समर्पित नारी
ये है हमारी ग्रामीण नारी ॥ ।



आओ साथियों तुम्हें सुनाएँ कहानी भारतीय महिला किसान की - I

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

आओ साथियों तुम्हें सुनाएँ कहानी,
एक भारतीय महिला किसान की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

महिलाओं ने ही कृषि का श्रीगणेश किया,
बताता है हमारा इतिहास।
महिलाएं कृषि के सभी कार्य सम्पन्न
करती हैं चाहे आम या हो खास॥

कृषि तथा पशुपालन का प्रत्येक कार्य
उनको आता है बहुत ही रास।
आशा के साथ सभी कार्य सम्पन्न करती,
वे नहीं होती कभी निराश॥

खेत की मिट्टी सूंघकर देखो आएगी
खुशबू इनके पसीने की हर बूंद की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

अपने खेत की जुताई करने को
कृषिका हल तक सहर्ष हैं चलाती।
अन्नपूर्णा की भांति खलिहानों को
कृषिका ही खाद्यान्नों से हैं भरती॥

छोटे बच्चे को पेड़ के नीचे लिटाकर
खेत का हर कार्य हैं करती।
सभी पशु-पक्षियों के लिए भी स्वयं
की ममता ही हैं वो टपकाती॥

किसी भी खेत में जाकर देखों कृषिका
ही हैं साक्षात मूर्ति अभिमान की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो यह
कहानी इनके ही श्रमदान की॥

स्त्रियाँ पुरुषों के बराबर होती हैं
उनसे किसी क्षेत्र में होती नहीं कम।
स्त्री सरल व सुकोमल तथा पुरुष
शरीर से कठोर कार्य होते सक्षम॥

खेती का काम करते समय भूल
जाती हैं अपनी गरीबी व हर गम।
थके होने पर भी वे दिखाती हैं हर
एक कार्य में अपना खास दम॥

जुताई के लिए खुद तक को बैलों की
तरह जुटकर लगाती बाजी जान की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो यह
कहानी इनके ही श्रमदान की॥

किसानों के साथ बराबर श्रम का हर
काम करती हैं महिला किसान।
महिलाओं को पुरुषों के समान पैसा
नहीं मिलता कैसा है ये समाज का विधान॥

पुरुषों व महिलाओं को समान पैसा
मिलने का होना चाहिए प्रावधान।
कार्यकुशलता बढ़ाने हेतु उनकी
समस्याओं का ढूँढना होगा निदान॥

इनकी जिंदगी सुधारनी ही होगी
ये गुजारती ज़िंदगी बहुत कष्ट की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो यह
कहानी इनके ही श्रमदान की॥

मंडी में बिचौलिये ही कर लेते हैं
उनके हक का हर पैसा संचित।
इस प्रकार कृषिकाएँ रहती हैं
अपने मूल अधिकारों से ही वंचित॥

अपनी बुनियादी आवश्यकताओं
पूरी करने हेतु उठाती हैं वो कष्ट।
ग्लोबल वार्मिंग के प्रभाव से हो
जाती पूर्ण फसल तक भी नष्ट॥

वंचित हैं नहीं पा पाती सुविधाएं भी
कृषि फसल बीमा योजना तक की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो यह
कहानी इनके ही श्रमदान की॥

किसी भी सरकार की ओर से उनको
कोई प्रतिपूर्ति तक नहीं मिलती।
श्रीलक्ष्मी माता प्रायः उनकी झोपड़ी
पर भूलकर भी हैं नहीं फटकती॥

गरीबी में काटती ये महिलाएं अपना
जीवन जो बनता है अति दयनीय।
अपने बच्चों की शिक्षा तक दिला
पाना उनको लगता अकल्पनीय॥

अपनी ज़िंदगी का हाल देखकर चिंता
करती वे अपनी अगली पीढ़ी की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो यह
कहानी इनके ही श्रमदान की॥

प्रतिदिन सुबह सूर्योदय से पहले ही
बिस्तर कृषक महिलाएं हैं त्याग देती।
देर रात तक बगैर अल्प विश्राम
के भी वे पूरा दिन काम करती॥

खेत में फसलों की बुवाई से कटाई
तक के हर कार्य को हँस-हँस कर करती।
पशुओं के लिए आहार एवं पानी का
भी प्रत्येक संभव प्रयास हैं करती॥

कोई भी विस्मरित नहीं हैं कर सकता
महिलाओं के असीम त्याग की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

आओ साथियों तुम्हें सुनाएँ कहानी भारतीय महिला किसान की - II

डॉ. ब्रह्म प्रकाश

भा.कृ.अनु.प. – भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

कृषक महिलाएं कटाई के पश्चात
प्रसंस्करण व मूल्यसंवर्धन भी हैं करती।
विभिन्न फलों का वे आचार बनाती,
जैम, जेली तथा शर्बत भी बनाती॥

दलहन को प्रसंस्कृत करके दालें बनाती,
चने की दाल के बेसन व सत्तू बनाती।
गन्ने के रस से गुड़ तथा सिरका
आदि कृषक महिलाएं ही बनाती॥

सदा स्मरण रखना है महिलाओं द्वारा
बने चावल, आलू व उर्द के पापड़ की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

फसल अवशेष, पशु अपशिष्ट तथा
खाद्य कचरे से वे कम्पोस्ट बनाएँ।
वनस्पतियों एवं अन्य कचरे को विघटित
कर केंचुए द्वारा वर्मीकम्पोस्ट बनाएँ॥

खेत में ढेचा, सनई, लोबिया, ग्वार,
उर्द, तथा मूंग की हरी खाद उपजाए।
नीम की निबौलियों व पिसी पत्तियों को
जल में घोलकर वे कीटनाशक बनाएँ॥

कैसे भूलें हम महिलाओं द्वारा किए
जाने वाले पोषक तत्व प्रबंधन की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

पशु पालन में भी कृषक महिलाएं
महत्वपूर्ण भूमिका हैं सदा निभाएँ।
सुबब सुबह घर के पालतू गाय भैंसों
को चारे की सानी नित्य लगाएँ॥

दोपहर में गाय भैंसों व बकरियों को
चरागाह में ले जाकर हरा चारा चराएँ।
प्रातः साँय दूध दुहें तथा उनके पास
से गोबर व मूत्र की सफाई कराएं॥

जीवन भर पशु भी याद हैं रखते कृषक
महिलाओं के स्नेह व अपनापन की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

इतनी कड़ी मेहनत करने पर भी
वे भरपेट भोजन तक नहीं हैं पाती।
भरपेट एवं पौष्टिक भोजन तक न
पाने से अक्सर वे हैं बीमार रहती॥

गावों में गंदगी के साम्राज्य के कारण
स्वच्छ पानी तक वे हैं नहीं पाती।
धनाभाव के चलते प्रायः उन्नत बीज,
खाद व कीटनाशी तक न खरीद पाती॥

अपनी आँखों में सपने सँजोए रखती,
किरण जलाए रहती हैं आशा की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

महिलाओं में भी नवीनतम उन्नत
उत्पादन तकनीकी का होना चाहिए प्रसार।
प्रशिक्षण प्राप्त करके उनके द्वारा
भी होना चाहिए कार्यकुशलता में सुधार॥

घर, खेत, बाग, खलिहान में उनकी
की गई मेहनत कभी नहीं जाएगी
बेकार।
जीवन भर जो वे सपने देखती,
होने चाहिए एक दिन वे सभी साकार॥

उनकी आशा सदा प्रबल रहेगी
एक दिन श्रम का उचित प्रतिफल पाने की।
इन अन्नपूर्णाओं को नमन करो
यह कहानी इनके ही श्रमदान की॥

महिला किसान - हमारा सम्मान

सुश्री सुभस्मिता पंडा, कक्षा - नौवी (अ)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय नं. (5), भुवनेश्वर, ओडिशा

खेती से हमारा दिन है चलता,
खेती ले सबका दिन है ढलती।
खेती है किसान के जीने का आधार,
खेती से ही चलता उनका घर परिवार।

पर, नारी जब करती है खेतों का काम,
तो क्यूँ नहीं मिलता नारी को सम्मान?
क्यूँ आज भी है पुराने खयालत,
क्यूँ आज भी कोई नहीं करता, महिलाओं के परिश्रम की बात?

घर में सबका रखती वह ख्याल,
रखती है वह खेतों का भी ख्याल,
पर कोई क्यूँ नहीं करता उनका ख्याल रखने की बात?

अरे ! माँ की ममता है फसल की जीवनी,
माँ की क्षमता है संजीवनी।
महिलाओं का जीवन और परिश्रम, है जैसे बीज के लिए पानी,
महिलाओं के होने से, खेत है धनी।

जय जवान ! जय किसान ! जय विज्ञान ! जय अनुसंधान ! है हमारा नारा
महिला किसान है सम्मान हमारा, महिला किसान है सम्मान हमारा।

कामकाजी माँ

ऋतु मावर

फसल सुधार और कीट प्रबंधन प्रभाग,

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

माँ ईश्वर की रचना अति उत्कृष्ट,
जिसमें समा जाये संसार के हर कर्तव्य परिशिष्ट,
साथ ही यदि हो वह कामकाजी,
तो जीवन उसका हो जाता है अति क्लिष्ट।

मन में उड़ने की चाह लिए हर दिन सुबह घर से निकल है जाती,
और शाम ढलने से पहले घर को लौट नहीं पाती,
पर तुम ना समझ लेना कि बस मौज है इसकी,
अपने सुकून के बदले ही ये है स्वाभिमान पाती।

हर दिन सुबह उठते ही बस रसोई में आँखे खोले,
एक साथ कई काम निपटाती घर भर में वह डोले।
सभी की जरुरतों को झट से पूरा करके,
दफ्तर को सीधे भागे जैसे तैसे तैयार होके।
अपनी नन्हीं सी जान दूसरों को सौंप आती है,
खुद की लड़ाई में वह खुद को भूल जाती है।

कितना भी जल्दी उठे तेजी से काम निपटाए,
ऑफिस पहुचने में देर हो ही जाती।
बदले में गैर ज़िम्मेदार और ना-पाबंदी का ठप्पा पाती।
खिसियाती मुस्कान लिए अफसर की सिहरन के साये,
ऑफिस में अपना शत प्रतिशत देने मीटिंग्स में जाती।

थकी हुई जब घर को जाती,
अपने बच्चों की आँखों में अलग चमक पाती।
ख़ुशी से भरी उनकी आँखों में अपनी पूरी थकान भुला देती,
फिर जोश के साथ झट से मुँह हाथ धो चौंके में घुस जाती।
खाने को लेकर हँसते हँसते सभी के नखरे सह जाती,
लो दिन ढल गया रात आई, पर सोने की बारी अभी कहाँ आई।
थकन इतनी कि रात चुटकियों में निकलती है,
ये कामकाजी माँए कितना दर्द छुपाती है।

आज छुट्टी है माँ, कहीं बाहर घूमने चलो ना,
दबी सी आवाज़ में अपने बच्चे के मन की बात सुन लेती।
फिर क्या, भूल जाती अपना आराम करना,
याद रहता है तो बस, बच्चो की ख्वाहिश पूरी करना।

सबका रविवार आता पर इसको ना आराम मिलता,
कभी घर के काम, कभी मेहमानों के टोले आते।
तुम आज ही तो घर हो, ये ही बहाने होते।

'मुझसे कुछ ठीक से नहीं होता' के,
अपराध बोध से भरी कामकाजी माँए।
भरभराकर फूट पड़ती है किसी रोज़ किसी के सामने,
तभी उसके साथी बोल पड़ते है,
'ऐसा भी क्या करती हो जो इतना ड्रामा करती हो'।

फूलों की सेज नहीं है वर्षा माँ का नौकरी करना,
दो नावों पर पैर रख, नदियाँ है पार करना।
जो थोड़ा सा भी लड़खड़ाए, तो डूब ही है जाना,
एक स्वाभिमानी माँ को, पर इससे कहाँ है घबराना।

जल संचय

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

सूखी मिट्टी के दर्रे देखे,
फिर आसमान को देखा है।
कब तक संकट ये रहना है,
कब तक इस कष्ट को सहना है।

आशा की किरण तभी जागी,
जब बादल आते जाते देखे।
आशा तुम आशान्वित रहना,
संकट अब सब जाते देखेंगे।



दुखी कृषक सब कृषिका सारे,
भूख सभी को आश लगी।
बादल तुम बरसो जल्दी से,
हे ईश्वर ना रहना और दुखी।

वर्षा का मतलब जब समझा,
पानी संचय का मान जगा।
कृषिका तुम सब जागृत करना,
जल संचय है, सबको करना।

रूफ-टॉप सिस्टम, हर घर हो,
वर्षा जल संचय, हर दर हो।
स्कूल की छत, या ट्यूबवेल हो,
जल संचित करते, हर घर छत हो।

जल संचय में यदि हो मुश्किल,
कृषि विज्ञान केंद्र (के. वी.के.) तुम जाना निश्चित।
विद्वान बंधु सब साथ तुम्हारे,
कृषिका संचय करना जल तुम।

तकनीक बहुत आसान जल संचय,
करेगा भू-जल निश्चित बढ़ कर।
ना फिर जल, केवल बढ़ता है,
समृद्धि भी बढ़ती, है फिर हर घर।

करो दान प्रयास का तुम सब मिल,
जल जीवन है, जल सबसे बढ़कर..... ॥

सरसों कृषिका पीली सी

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

पीली सरसों नीली साड़ी,
है अद्भुत दृश्य यही प्रकृति।
ईश्वर की लीला अप्रतिम तुम,
चहुँ ओर प्रकाशित है प्रकृति।

सरसों पीली, राई पीली,
है कत्थई और, कालिमा भी।
हर दाना श्रेष्ठ, अपोषण मुक्त,
है ऊर्जित शक्ति, प्रवाहित भी।



है प्राथमिकता अब, उपज बढ़ाना,
और साथ सही, उत्पादकता भी।
हो क्षेत्रफल भी, वृहद् सरसों का,
लागत में, मितव्ययिता भी।

कृषिका चाहे, यूरिक भी हो कम,
इस अम्ल की हो कमता भी।
हो सफल उत्पादन, मेरे खेत का,
हो स्वास्थ्य की चहुँ चर्चा भी।

छह मिलियन से पग-पग चलकर
हूँ पहुंची थी, बारह मिलियन पर,
तेरह मिलियन की संख्या भी,
अब लगती सबको कमती सी।

करो प्रयास और तैयार मैं हूँ,
तुम वैज्ञानिक मैं कृषिका हूँ।
पूसा मस्टर्ड तीस और इकतीस,
यू.पी., एम.पी. हो, उत्तराखंड या राजस्थान,
हर खेत की खेत सजीली सी।

पीली सरसों, है ब्राउन सरसों,
गोभी सरसों और पाटन सरसों भी।
सरसों लाहा, वरुणा, और दुर्गामानी सी,
'सरसों अनुसंधान निदेशालय' की
प्रतिभा है इसकी अप्रतिम सी।

मैं कृषिका श्रेष्ठ अपोषण मुक्त, है ऊर्जित शक्ति प्रवाहित भी.....

सफल सर्वसंपन्ना

डॉ. अर्पिता महापात्रा

वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

जब घर में गूंजी किलकारी मेरी,
किसी ने बोला देखो आयी है छोरी।
पिता ने बोला नहीं यह मेरी सर्वसंपन्ना है, अन्नपूर्णा है।
एक दिन भरेगी ये ऊंची उड़ान, तोड़ के चार दीवारी।

पिता का लाड़, माँ का प्यार,
मुझे लगा था शायद, यही है मेरा संसार।
लेकिन बड़े होते-होते सखियों के संग,
मन में जगी, शादी की फुहार।

बड़े ही जोरों शोरों से, पापा ने मेरी सादी रचाई।
पति को हाथ थमाकर, कर दी मेरी बिदाई।
नया था घर नया परिवार मन में थे सपने भरमार।
लेकिन यह क्या ससुराल में पता चला, पति मेरा था बेरोजगार।

टूट गए सपने, मेरे ऊंचे आसमान छूने के,
लगा ऐसे कि मुझपे आज गिरा है पहाड़।
गम के आंसू मैं न रोक पायी,
करवट लेते लेते रात बीती, सुबह आयी।

अपने आप को संभाला किया एक प्रण,
निडर हो के अकेले लड़ूंगी, जीवन का यह रण।
अपनी सुरक्षा के लिए पशुपालन पर किया निवेश,
दो गाय खरीदी, बेच के जो बची थी पूंजी शेष।

न था कोई अनुभव, न थी कोई राह,
पर मन में थी कुछ कर दिखाने की चाह।
गाय को चराती, चारा दना खिलाती,
ममता और दुलार से, पूरी देखभाल करती।
पड़ी रहती उनके पास डाल के चटाई,
लेकिन नहीं मिलती कोई अच्छी कमाई।

थक हर कर टूट रही थी, जब मिला एक नया अवसर।
खुला मेरे लिए, महिला दुग्ध उत्पादन सहायक समिति का द्वार।
इसकी उपलब्ध सुविधाओं का लाभ उठाया,
प्रशिक्षण ले के आधुनिक गाय पालन के तरीकों को मन में बैठाया।
संतुलित आहार और उचित रखरखाव पर,
किया मेरा क्षमता विकास।
मन में फिर लौटी, नयी उमंग और विश्वास।

देख मेरी कमाई, पति ने भी दी अपनी भागीदारी।
आज सम्मानित करने को मुझे ढूंढ रही है दुनिया सारी।
आज भर रही हूँ मैं ऊंची उड़ान,
राष्ट्र निर्माण का लिख रही हूँ नया आयाम।
पापा आज आप गर्व से बोलिए,
आपकी बेटी है सर्वसंपन्ना अन्नपूर्णा,
और सर्वोपरि एक सफल महिला किसान सर्वसंपन्ना।

मिशन शक्ति का

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

मन दुर्गा सी, शक्ति हो तुम,
मन ममता सी, भक्ति हो तुम।
है निश्चल, तेरा अर्पण कर,
है निश्चल, तेरा समर्पण है।

तू लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती,
तू शक्ति, तू कल्याणी है।
कृषिका तू, निश्चल प्रेमी,
तू पावन, सत्य धरोहर सी।

तू साथ रहे, परिवार चले,
तू साथ रहे, घर बार चले।
सर मेरा तुझको, झुकता है,
तू पावन श्रेष्ठ, मनोहर सी।



तुम पहुंचो, उच्च बुलंदी पर,
कृषिका हो सबसे, उच्च शिखर पर।
नारी वंदित, होती जाए,
नारी वंदन, करती जाए।

करती वंदन हूँ, संसद का,
नारी वंदन, स्कीमों का।
ये करें अग्रणी, को कृषिका,
परिवार भी, पोषित होता है।

तुम शक्ति स्वरूपा, हम जाने,
खुद की शक्ति को, भी पहचानो।
हम साथ सभी हैं, सदा तेरे,
तुम साथ में रहना, सब मानो।

शक्ति का मिशन, तुम्हारा है,
शक्ति का मिशन, हमारा है।
कर अर्पण सभी, प्रयास में रम,
सब मंत्रालय हर, प्रयास में रत।

कर सहयोग सदा, हर कृषिका को,
कृषि मंत्रालय का, मान बढ़ा।
चाहे 'जीविका' हो, या 'मिशन शक्ति' का,
हर सहयोग, तुम्हारे लिए खड़ा।

कर सात लाख की, सीमा को,
खुश होते सभी, माननीय जन।
'मिशन शक्ति' और महिला समूह,
सब खुश होते, परिवारी गण।

आजीविका सुरक्षा का' उदहारण कर'
'जीविका' ने प्रस्तुत, अनोखा दृश्य।
हर जिले को देकर' महिला प्रतिनिधित्व',
हर कृषिका को, करता सशक्त।

तुम बात कहो, आओ कृषिका,
वन स्टॉप केंद्र, अब आगे है।
हर बात तुम्हारी, सुननी है,
सहयोग सभी, अब है कृषिका।

'मिशन शक्ति' की, सफलता का,
हर श्रेय, तुम्ही को जाता है।
तुम करते रहना, हर मेहनत को,
प्रतिभा का श्रेय, भी आता है।

कृषिका हो शक्ति, स्वरुपा सी,
कृषिका तुम शक्ति, स्वरूपा हो।
जो प्रण लेती, फिर दृढ़ रहती,
फिर करती शक्ति, प्रदर्शन का।
हर कृषिका को, सशक्त करता मिशन, शक्ति का।



नारी शक्ति तुमको वंदन

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

मन संसद देख, करे वंदन,
नारी वंदन, शक्ति भी वंदन।
अब क्रंदन और नहीं कर सब,
अब विधि भी साथ, हमारे हर दम।

मन दिल से देता, विधि को दुआएं,
झंकृत हो मंत्री को भी दुआएं।
कृषिका तुम मेरी, समिति में,
कृषिका तुम मेरी, नीति में।



तुम सदा हमारी, कृतिका में,
तुम सदा हमारी, प्रीती में।
मैं सम्बल तुमको भी, देता हूँ।
सामर्थ्य हमारी, नीति में।

करता पूरी कोशिश भी है,
करता पूरी विधि संगत भी है।
विश्वास सदा ही, रखना तुम,
विश्वास सदा ही, हम पर भी।

विधि सदा तुम्हारे, पास खड़ा,
विधि सदा तुम्हारे, लिए अड़ा।
कृषिका तुम करना मेहनत,
हर हाथ तुम्हारे लिए बढ़ा।

नारी तुमको, सबका है वंदन,
मेरा तुमको सारा अभिनंदन।
तुम किंचित मात्र कभी ना करना,
तुम्हे ना करना, अब कोई क्रंदन।

अब विधि में भागीदारी है,
तुम अब विधि की अधिकारी हो।
खुद विधि को, साथ बनाना तुम,
कृषिका को आगे लाना तुम।

करती मेहनत, मेरी कृषिका,
फिर वेज (कमाई) क्यों है औना पौना।
क्यों कम पाए, मेरी कृषिका,
जब मेहनत है, पूरा करना।



विधि संगत है, सबको करना,
विधि संगत है, सबको पाना।
है अधिकार, हमारी कृषिका का,
विधि संगत है, सबको देना।

अब और नहीं हमें सहना है,
अब और हमें नहीं कहना है।
अब मंत्रालय भी साथ खड़ा,
अब तंत्र हमारे, सम्मुख है।

नारी शक्ति तुमको वंदन,
तुम सबका अब, अभिनन्दन है।
है संसद करता, स्वागत अब,
हर कृषिका, तेरा वंदन है।

कृषिका तुम मेहनत करती हो,
कृषिका फिर, कष्ट क्यों सहती हो।
हो न्यायिका, या विधायिका,
सहभाग सभी, में करना है।

'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' से
अधिकार अनोखा पाया है।
है विधायिका की शक्ति में,
सहभाग विशिष्ट, दिलवाया है।

बड़ी अनोखी उपलब्धि है,
सहभाग अनोखा करना है।
महिला सशक्तिकरण के साथ,
उन्हें अग्रिम स्थान दिलाना है।

'नारी शक्ति वंदन' अधिनियम, अधिकार हमारी कृषिका.....

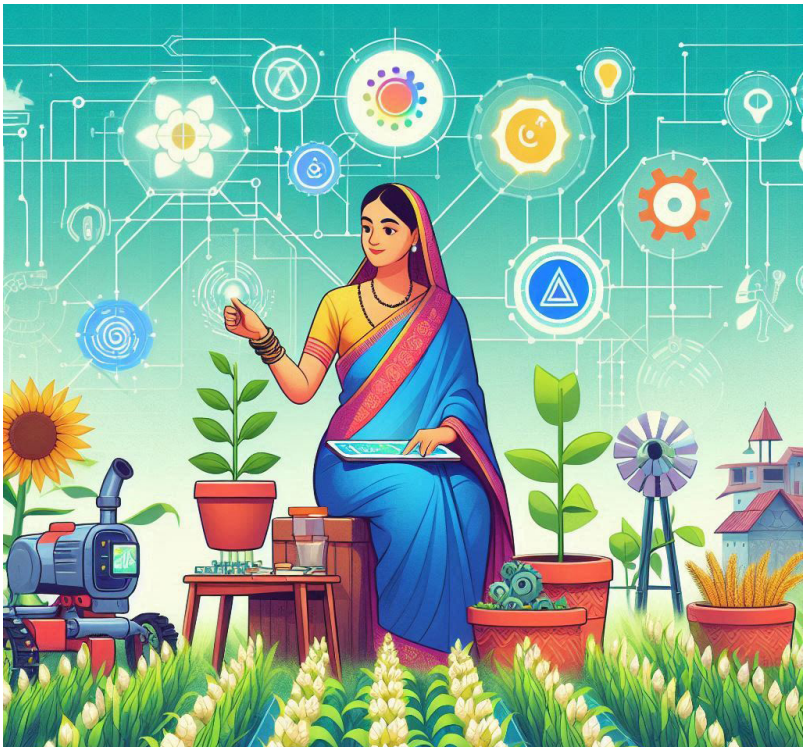
क्षितिज तक है पहुँच मेरी

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

क्षितिज तक है पहुँच मेरी
सितारों सी चमकती हूँ।
शक्ति है सूर्य के जैसी,
धैर्यता सूर्य सागर सी।

किरण सी मैं पहुँच रखती,
हर खेत में पहल करती।
बीजों के चुनाव से,
कटाई तक कदम रखती।



कृषि से है किरण मेरी,
कृषि से पोषण है सब का।
कृषि से घर मेरा चलता,
कृषि से कीर्ति, अमर मेरी।

आजीविका की किरण कृषि,
सजीवता का उदाहरण है।
हरित प्रवाह है धरा कृषि,
समृद्धि का उद्धरण है।

है जीवन प्राण, देती कृषिका,
प्रतिष्ठा भी प्रतिष्ठित है।
ये रज है, किरण-किरण करती,
कृषिका का भी, यश स्थापित है।

दमकती हूँ धारा सी हूँ,
लालिमा लाल किरणों सी,
चमकती मैं शक्ति सी हूँ,
हूँ कृषिका मैं, ऋषि सी हूँ।

चमक है सूर्य के जैसी, पहुँच मेरी क्षितिज तक है ....

कृषिका तुम बढ़ते रहना

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

विचारों के प्रवाह को लय देना,
है मैंने सीखा।
हवा की लय से पानी के प्रवाह से बचकर,
रास्तों को मोड़कर,
सफलता का रूप गढ़ना, है मैंने सीखा।

कमजोर सी भी दिखती हूँ,
साधारण भी रहती हूँ।
पर जागरुक हर क्षण रहकर,
हर कंटक को पार करना,
है मैंने सीखा।



तूफानों की मार सही,
हो बारिश की झनकार सही।
बिजली के अंगारे भी,
अब कर सकते ना, कमजोर कभी।

चाहे सूखे की हो प्रताड़ना,
जल ना की हो अवधारणा।
बंजर में भी मैं सपने बुनती,
कर संभव की, हर संभावना।

बंजर खेती की माहिर हूँ,
इजराइल क्रांति को मानू मैं।
कर सकती हरित धरा धरती,
संकल्प सिद्धि का ठानू मैं।

है आई.सी.ए.आर. भी साथ मेरे,
सब मंत्रालय हैं साथ खड़े।
कृषि मंत्रालय कहता मुझसे,
हर हाल में हम सब साथ तेरे।

है काजरी भी अब साथ मेरे,
है पूसा भी जग जाहिर है।
सब सीवा की मेहनत तुम देखो,
हर-हर गांव-गांव में छायी है।

वाटरशेड करता कमाल है,
तंत्र सभी अब साथ खड़ा।
हो कठिनाई कोई भी अब,
अब पी.एम. (प्रधान मंत्री) मेरे साथ खड़ा।

हम सब देते तुम्हे दुआयें, कृषिका तुम बढ़ते रहना,
बढ़ते रहना, चलते रहना।

आभार कृषिका

डॉ. मृदुला देवी

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा

शुभ दृष्टि की मूरत हो तुम,
शुभ सुचिता की सूरत तुम।
कल्याणी बन कल्याण करो,
शुभ सूचक हो शुभ पूरक तुम।

आभार युक्त, वंदन तुमको,
सभार युक्त, अभिनन्दन है।
करबद्ध तुम्हारे, हाथों पर,
साक्षात नियामक, प्रस्तुत है।



तुम पूरक हो, चौबारे में
तुम पूरण हो, भोजालय में।
हैं सृष्टि नियंता, साथ खड़े,
संतुष्ट करें, हर द्वारे में।

क्षीरी मिष्टी, सब प्राप्ति की,
माखन मिश्री, सब वृन्दावन की।
प्रयास प्राप्ति, अनुपूरण की,
सुखमय अनुगम, सब आँचल की।

तुम अन्नपूर्णा, अनुसुईया,
मातोश्री की, ममता हो तुम।
शुभ सुचिता की, सूरत हो तुम
शुभ सूचक हो, शुभ पूरक तुम।

आभार हमारी, कृषिका का,
साभार तुम्हारी, मेहनत का।
तुम खूब खिलो, तुम खिलती रहो,
अनुपमा तुम, सौ साल जियो।
कृषिका तुमको आभार मेरा

संपादक विवरण



डॉ. मृदुला देवी
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत
महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा



डॉ. नीतीश कुमार
वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय कृषिरत
महिला संस्थान, भुवनेश्वर, ओडिशा



डॉ. गायत्री तिवारी
प्रोफेसर, महाराणा प्रताप कृषि एवं
प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदैपुर,
राजस्थान

भा.कृ.अनु.प.- केन्द्रीय कृषिरत महिला संस्थान
(ISO 9001-2015 प्रमाणित)
भुवनेश्वर-751003, ओडिशा

https://www.facebook.com/CIWABBSR https://twitter.com/icar_ciwa https://www.youtube.com/c/ICARCIWA